श्रीथीमेणजीकापत्र१२२ पद२७२

वि०प० १

श्रीजानकीवल्लभो जयति ॥ राग बिलावल ॥ गाइये गनपति जगबंदन । संकरसुवन भवानीनं
दन ॥ टेक ॥ सिद्धि सदन गजबदन बिनायक । कृपासिंधु सुंदर सब लायक ॥१॥ मोदक
प्रिय मुद मंगल दाता । बिद्या बारिधि बुद्धि बिधाता ॥२॥ मांगत तुलसिदास कर जोरे । बस
हिं राम सिय मानस मोरे ॥३॥ दीनदयाल दिवाकर देवा । करैं मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥ टेक
हिम तम करि केहरि करमाली । दहन दोष दुख दुरित रुजाली ॥१॥ कोक कोकनद लो
क प्रकासी । तेज प्रताप रूप रस रासी ॥२॥ सारथि पंगु दिब्य रथ गामी । हरि संकर बिधि मू
रति स्वामी ॥३॥ बेद पुरान प्रगट जस जागै । तुलसी राम भगति बर मांगै ॥४॥ राग धनाश्री ॥ को १
जाचिये संभु तजि आन । दीनदयाल भगत आरति हर सब प्रकार समरथ भगवान ॥ टेक

कालकूटज्वलजरतसुरासुरनिजपनलागिकियोबिषपान॥दारुनदनुजजगतदुखदायकमा
बेद
रेउत्रिपुरएककहींबान॥२॥जोगतिअगममहामुनिदुर्लभकहतसंतश्रुतिसकलपुरान॥सोइ
गतिमरनकालअपनेपुरदेतसदाशिवसबहिसमान॥३॥सेवतसुलभउदारकलपतरुपा
रामचरनरति
रबतीपतिपरमसुजान॥देहुरामपदनेहुकामरिपुतुलसिदासकहँकृपानिधान॥४॥३॥दा
निकहूँसंकरसेनाहीं॥दीनदयालदेबोईभावैजाचकसदासोहाहीं॥टेक॥ मारिकैमारथ
प्योजगमेंजाकीप्रथमरेखभटमाहीं॥ताठाकुरकोरीझिनिवाजिबोकह्योक्योंपरतमोपाहीं॥२॥
जोगकोटिकरिजोगतिहरिसोंमुनिमागतसकुचाहीं॥वेदविदिततेहिपदपुरारिपुरकीटपतं
गसमाहीं॥३॥ईसउदारउमापतिपरिहरिअनतजेजाचनजाहीं॥तुलसिदासतेमूढमांग

वि०प०
२

नेकवहुनपेटअघाहीं॥३॥४॥ बावरोरावरोनाहभवानी॥ दानिवडोदिनदेतदिएविनु
वेदवडाईभानी॥ निजघरकीवरवातविलोकहु हौतुमपरमसयानी॥ सिवकीदईसंपदा
देषतश्रीसारदासिहानी॥१॥ जिन्हकेभाललिषीलिपिमेरीसुषकीनहींनिसानी॥ तिन्ह
रंकन्हकोनाकसँवारतहौंआयोनकवानी॥२॥ दुषदीनतादुषीइन्हकेदुषजाचकता
अकुलानी॥ यहअधिकारसौंपिएऔरहिंभीषभलीमैंजानी॥३॥ प्रेमप्रसंसाविनयव्यंग
जुतसुनिविधिकीवरवानी॥ तुलसीमुदितमहेसमनहिंमनजगतमातुमुसकानी॥४॥५॥
[illegible] मागिएगिरिजापतिकासी॥ जासुभवनअनिमादिकदासी [illegible] अवढ २
रदानिद्रवतपुनिथोरे॥ सकतनदेषिदीनकरजोरे॥१॥ सुषसंपतिमतिसुगतिसुहाई॥ सकल

वलि

वि॰प॰ ३ तिकबाधाभईतेनिकरनोर॥७॥बेगिबोलिबरजिएकरतूतिकठोर॥तुलसीदलिरूंध्योचहैसठ
साखिसिहोर॥८॥८॥सिवसिवहोइप्रसन्नकरुदाया॥करुनामयकीरतिउदारबलिजा
उँहरहुनिजमाया॥ जलजनयनगुनअयनमयनरिपुमहिमाजाननकोई॥बि
नुतवकृपारामपदपंकजसपनेहुँभक्तिनहोई॥१॥रिषयसिद्धमुनिमनुजदनुजसुरअप सुरा
रजीवजगमाहीं॥तवपदबिमुखनपारपावकोउकलपकोटिचलिजाहीं॥२॥अहिभूषनदू
षनरिपुसेवकदेवदेवत्रिपुरारी॥मोहनिहारदिवाकरसंकरसरनसोकभयहारी॥३॥गि
रिजामनमानसमरालकासीसमसाननिवासी॥तुलसिदासहरिचरनकमलबरदेहुभ ३,
क्तिअविनासी॥४॥५॥देवमोहतमतरनिहररुद्रसंकरसरनहरनममसोकलोकाभिरामं

वि०प०
२

नेकवहूनपेटअघाहीं॥३॥४॥वावरोरावरोनाहभवानी॥दानिवडोदिनदेतदिएविनु
वेदवडाईभानी॥निजघरकीवरवातविलोकहुहौतुमपरमसयानी॥सिवकीदईसंपदा
देषतश्रीसारदासिहानी॥१॥जिन्हकेभाललिषीलिपिमेरीसुषकीनहीनिसानी॥तिन्ह
रंकन्हकोनाकसंवारतहौंआयोनकवानी॥२॥दुषदीनतादुषीइन्हकेदुषजाचकता
अकुलानी॥यहअधिकारसौंपिएऔरहिंभीषभलीमैंजानी॥३॥प्रेमप्रसंसाविनयव्यंग
जुतसुनिविधिकीवरवानी॥तुलसीमुदितमहेसमनहिमनजगतमातुमुसकानी॥४॥५
[illegible] मागिएगिरिजापतिकासी॥जासुभवनअनिमादिकदासी [illegible] अवढ २
रदानिद्रवतपुनिथोरे॥सकतनदेषिदीनकरजोरे॥१॥सुषसंपतिमतिसुगतिसुहाई॥सक

लसुलभसंकरसेवकाई॥४॥ एजेमरनआरतकेलीन्हे। निरखिनिहालनिमिषमहकी
न्हे॥३॥ तुलसिदासजाचकजस गावै। बिमलभक्तिरघुपतिकीपावै॥४॥६॥ कसनदीनपरद्रवहु
उमाबर। दारुनबिपतिहरनकरुनाकर   बेदपुरानकहतउदारहर॥ हमरिबेरका
भएउकपिनितर॥१॥ कवनिभक्तिकीन्हीगुननिधिद्विज। ह्वैप्रसन्नदीन्हेहुसिवपदनि
ज॥२॥ जोगतिअगममहामुनिगावहिं। तवपुरकीटपतंगउपावहिं॥३॥ देहुकामरिपुरा
मचरनरति। तुलसिदासप्रभुहरहुभेदमति॥४॥७॥ देवबडेदाताबडेसंकरबडेभोरे। कि
एदूरिदुखसबनिकेजिन्हजिन्हकरजोरे।   सेवासुमिरनपूजिबोपातआखतथोरे। दी ये
जगजहंलगिसंपदासुखगजरथघोरे॥१॥ गाउंबसतबामदेवकबहुंननिहोरे। अधिभौ

वृत्ति

वि०प०
३

निकथाथाभईनेकिंकरनोरे॥४॥वेगिबोलिवरजिएकरतूतिकठोरे॥तुलसीदलिरूंध्योचहैंस
ठसाकसिहोरे॥३॥८॥सिवसिवहोइप्रसन्नकरुदाया॥करुनामयकीरतिउदारवलिजा
उहरहुनिजमाया॥ जलजनयनगुनअयनमयनरिपुमहिमाजाननकोउ॥वि
नुतवकृपारामपदपंकजसपनेहुभक्तिनहोई॥१॥रिसयसिद्धमुनिमनुजदनुजसुरअप सुरा
रजीवजगमाहीं॥तुवपदविमुखनपारपावकोउकलपकोटिचलिजाहीं॥२॥अहिभूषनद
षनरिपुसेवकदेवदेवत्रिपुरारी॥मोहनिहारदिवाकरसंकरसरनसोकभयहारी॥३॥गि
रिजामनमानसमरालकासीसमसाननिवासी॥तुलसिदासहरिचरनकमलहरदेहुभ
क्तिअविनासी॥४॥९॥देवमोहतमतरनिहररुद्रसंकरसरनहरनममसोकलोकाभिरामं ३

गालससिभालसुविसाललोचनकमलकामसतकोटिलावन्यधामं देवकंवुंद ॐ
दुक्कर्पूरविग्रहरुचिरतरुनरविकोटितनतेजभासै॥ भस्मसर्वांगअर्द्धांगसैलात्मजाव्याल
न्दकपालमालाविराजै॥२॥ देवमौलिसंकुलजटामुकुटविद्युच्छटातटिनिवरवारिहर
रिचरनपूतं॥ श्रवनकुंडलगरलकंठकरुनाकंदसच्चिदानंदवंदेवधूतं॥३॥ देवसूलसा
यकपिनाकासिकरसन्नुवनदहनइवधूमध्वजवृषभजानं॥ व्याघ्रगजचर्मपरिधानवि
ज्ञानघनसिद्धसुरमुनिमनुजसेव्यमानं॥४॥ देवतांडवितनृत्यपरडमरुडिंडिमप्रवर
अशुभइवभांतिकल्यानरासी॥ महाकल्पांतव्रह्मांडमंडलदवनभवनकैलासआसा
सीनकासी॥५॥ देवतत्त्वसर्वज्ञयज्ञेसअच्युतविभोविश्वभवदंससंभवपुरारी॥ व्रह्मेंद्रचं

वि०प०
४

दार्केवरनाग्निवसुमरुतजमअर्चिभवदंघ्रिसर्वाधिकारी॥५॥देवअकलनिरुपाधिनि
र्गुननिरंजनब्रह्मकर्मपथमेकमजनिर्विकारं॥अखिलविग्रहउग्ररूपसिवभूपसुरसर्व
गतसर्वसर्वोपकारं॥६॥देवज्ञानवैराग्यधनधर्मकैवल्यसुखसुभगसौभाग्यसिवसानु
कूलं॥तदपिनरमूढआरूढसंसारपथभ्रमतभवविमुखतवपादमूलं॥७॥देवनष्टम
तिदुष्टअतिकष्टरतखेदगतदासतुलसीसंभुसरनआया॥देहिकामारिश्रीरामपदपं
कजेभक्तिमनवरतगतभेदमाया॥८॥१०॥देवभीषनाकारभैरवभयंकरभूतप्रेतप्रमथा
धिपतिविपतिहर्ता॥मोहमूषकमार्जारसंसारभयहरनतारनतरनकरनकर्ता॥ ४
देवअतुलवलविपुलविस्तारविग्रहगौरअमलअतिधवलधरनीधराभं॥सिरसिसं

कुलितकलकूटपिंगलजटापटलसतकोटिविद्युच्छटाभं ॥१॥ देवभ्राजविबुधापगाम्भ
पपावनपरममौलिमालेवसोभाविचित्रं ॥ ललितलल्लाटपरराजरजनीसकलकलाधरसौ
मिस्त्रधनदमित्रं ॥२॥ देवडुंदुपावकभानुनयनमर्दनमयनज्ञानगुनअयनविज्ञानरू
पं ॥ रवनगिरिजाभवनभूधराधिपसदाश्रवनकुंडलवदनछविअनूपं ॥३॥ देवचर्मअ
सिशूलधरडमरूसायकचापजानकृमसकरुनानिधानं ॥ जरतसुरअसुरनरलोकसो
काकुलंमृदुलचितअजितकृतगरलपानं ॥४॥ देवभस्मतनुभूषनंव्याघ्रचर्मांबरं उरग
नरमौलिउरमालधारी ॥ डाकिनीसाकिनीखेचरंभूचरीयंत्रमंत्रभंजनप्रबलकल्मषारी
५ ॥ देवकालअतिकालकलिकालव्यालादिखगत्रिपुरमर्दनभीमकर्मभारी ॥ सकल

वि०प०
५

लोकांतकल्यांतशूलाग्रकृतदिग्गजाव्यक्तगुणानृत्यकारी॥६॥देवपापसंतापघनघोर
संसृतिदीनभ्रमतजगजोनिनहिकोपित्राता॥पाहिभैरवरूपरामरूपीरुद्रबंधुगुरुज
नकजननीविधाता॥७॥देवयस्यगुनगनगनतविमलमतिसारदानिगमनारदप्रमु
खब्रह्मचारी॥सेषसर्वेसआसीनआनंदवनप्रनततुलसिदासत्रासहारी॥८॥११॥स
दासंकरंसंप्रदंसज्जनानंददंसैलकन्यावरंपरमरम्यं॥काममदमोचनंतामरसलोच
नंवामदेवंभजेभावगम्यं॥ कंबुकुंदेंदुकर्पूरगौरंसिवंसुंदरंसच्चिदानंदकंदं॥सि
द्धसनकादियोगींद्रवृंदारकाविष्णुविधिवंद्यचरनारविंदं॥१॥ब्रह्मकुलवल्लभंसुलभमम
तिदुर्लभंविकटवेषंविभुंवेदपारं॥नौमिकरुनाकरंगरलगंगाधरंनिर्मलंनिर्गुनंनिर्वि ५

त्रिपुं

कारं॥४॥ लोकनाथं सोक[illegible]निर्मूलनं सूलिनं मोहतमभूरिभानुं॥ कालकालं कला
तीतमजरं हरं कठिनकलिकालकाननकृसानुं॥१॥ तज्ञमग्यानपाथोधिघटसंभवं सर्वगं
सर्वसौभाग्यमूलं॥ प्रचुरभवभंजनं प्रनतजनरंजनं दासतुलसीसरनसानुकूलं॥२॥१४॥
[illegible] सेवहु सिवचरनसरोजरेनु॥ कल्यानअखिलप्रदकामधेनु [illegible] कर्पूर
गौरकरुनाउदारं॥ संसारसारभुजगेंद्रहारं॥ सुषजन्मभूमिमहिमाअपारं॥ निर्गुनगुनना
यकं निराकारं॥१॥ त्रयनयनमयनमर्दनमहेसं॥ अहंकारनिहारउदितदिनेसं॥ वरवा
लनिसाकरमौलिभ्राज॥ त्रयलोकसोकहरप्रमथराज॥२॥ जिन्हकहँ विधिसुगतिनलि
षीभाल॥ तिन्हकीगति कासीपतिकृपाल॥ उपकारीकोपरहरसमान॥ सुरअसुरजरत

वि०प० छतगरलपान॥३॥ बहुकलपउपायकरियेअनेक॥ बिनुसंभुकृपानहिंभोबिबेक॥ बिज्ञानभ
वनगिरिसुतारमन॥ कहतुलसिदाससमसत्रासममन॥४॥१३॥ देषोदेषोवन्योवनआजु
उमाकंत॥ मानोदेषनतुमहिंआईरितुबसंत॥ मानो जनुतनदुतिचंपककुसुममाल॥ ब
रबसननीलनूतनतमाल॥ कलकदलिजंघपदकमललाल॥ सूचतकटिकेहरिगतिम
राल॥१॥ भूषनप्रसूनबहुबिबिधिरंग॥ नूपुरकिंकिनिकलरवबिहंग॥ करनवलबकुलपल्ल
वरसाल॥ श्रीफलकुचकंचुकिलताजाल॥२॥ आननसरोजकचमधुपपुंज॥ लोचनबिसाल
नवनीलकंज॥ पिकबचनचरितबरबर्हिकीर॥ सितसुमनहासलीलासमीर॥३॥ कहतुल
सिदाससुनुसिवसुजान॥ उरबसिप्रपंचरचेपंचबान॥ करिकृपाहरियभ्रमफंदकाम॥ जे

हिहृदयवसहिसुषरासिराम॥४॥१४॥ [illegible] दुसहदोषदुषदलनिकरुदेविदाया
विश्वमूलासिजनसानुकूलासिकरसूलधारिनिमहामूलमाया॥टेक॥ तडितगर्भांगसर्वां
गसुंदरलसतदिव्यपटभव्यभूषनविराजै॥ वालमृगमंजुषंजनविलोचनचंदवदनील
षिकोटिरतिमारलाजै॥१॥ रूपसुषसीलसीमासिभीमासिरामासिवामासिवरवुद्धिवानी
छमुषहेरंवअंवासिजगदंविकेसंभुजायासिजयजयभवानी॥२॥ चंडभुजदंडषंडनिविहं
डनिमुंडमहिषमदभंगकरिअंगतोरे॥ सुंभनिःसुंभकुंभीसरनकेसरनिक्रोधवारिधिवै
रिवृंदवोरे॥३॥ निगमआगमअगमगुर्वितवगुनकथनउर्विधरकरतजेहिसहसजीहा
देहिमामोहिपनुप्रेमयहनेमनिजरामघनस्यामतुलसीपपीहा॥४॥१५॥

वि०प० जयजयजगजननिदेविसुरनरमुनिअसुरसेविभक्तिमुक्तिदायिनिभयहरनिकालिका
७ मंगलमुदसिद्धिसदनिपर्वसर्वरीसवदनितापतिमिरतरुनतरनिकिरनिमालिका॥१
वर्मचर्मकरकृपानसूलसेलधनुषवानधरनिदलनिदानवदलरनकरालिका॥पूतना
पिसाचप्रेतडाकिनिसाकिनिसमेतभूतग्रहवेतालषगमृगालिजालिका॥२॥जयमहे
सभामिनीअनेकरूपनामिनीसमस्तलोकस्वामिनिहिमसैलवालिका॥रघुपतिपद
परमप्रेमतुलसीचहैअचलनेमदेहिह्वैप्रसन्नपाहिप्रनतपालिका॥३॥१६॥जयजयभ
गीरथनंदिनिमुनिचयचकोरचंदिनिनरनागविबुधवंदिनिजयजन्हुवालिका॥विष्नु ७
पदसरोजजासिईससीसपरविभासित्रिपथगासिपुन्यरासिपापछालिका॥ ॥ वि

मलविपुलवहसिवारिसीतलत्रयतापहारिभवरवरविभंगजलतरंगमालिका॥पुरजनपू
जोपहारसोभितससिधवलधारभंजनभवभारभक्तिकल्पथालिका॥१॥निजतटवासीवि
हंगजलथलचरपशुपतंगकीटजटिलतापसमवसरिसपालिका॥तुलसीतवतीरतीरसु
मिरतरघुवंसबीरविचरतमतिदेहिमोहमहिषकालिका॥३॥१७॥[illegible]॥जयति
जयसुरसरीजगदखिलपावनी॥विष्णुपदकंजमकरंदइवअंबुवरवहसिदुखदहसिअ
घवृंदविद्रावनी॥[illegible]॥मिलितजलपात्रअजजुक्तहरिचरनरजविरजतरवारित्रिपुरा
रिसिरधामिनी॥जन्हुकन्याधन्यपुन्यकृतसगरसुत[illegible]द्रोनिविद्दरनिबहुनामिनी॥
१॥यक्षगंधर्वमुनिकिन्नरोरगदनुजमनुजमज्जहिसुकृतपुंजजुतकामिनी॥स्वर्गसोपा

वि०प०
८

नविज्ञानज्ञानप्रदेमोहमदमदनपाथोजजमनजामिनी॥२॥ हरितगंभीरवानीरदुहुती
रवरमध्यधाराविसदविस्वअभिरामिनी॥ नीलपर्यंककृतसयनसर्पेसजनुसहससी
सावलीश्रोतसुरस्वामिनी॥३॥ अमितमहिमाअमितरूपभूपावलीमुकुटमनिवंदिते
लोकत्रयगामिनी॥ देहिरघुवीरपदप्रीतिनिर्भरमातुदासतुलसीत्रासहरनिभवभामि
नी॥४॥१८॥ [illegible] हरतिसकलपापत्रिविधितापसुमिरतसुरसरिते॥ विलसति
महिकल्पवेलिमुदमनोरथफलित॥ [illegible] ॥सोहतससिधवलधारसुधासलिलभरित
विमलतरतरंगलसतरघुवरकेसचरित॥१॥ तोविनुजगदंवगंगकलिजुगकाकरित॥
घोरभवअपारसिंधुतुलसीकैसेतरित॥२॥१९॥ ईससीसवससितत्रिपथलसतिनभप ८

तालधरनि॥मुनिसुरनरनागसिद्धसुजनमंगलकरनि॥ :देषतदुषदोषदुरितदा
हदारिदलनि॥सगरसुवनसासतिसमनिजलनिधिजलभरनि॥१॥महिमाकीअवधि
करिविधिहरिहरनि॥तुलसीकरुवानिविमलविमलवारिवरनि॥४॥२०॥
॥जमुनाज्यौंज्यौंलागीबाढन॥त्यौंत्यौंसुकृतसुभटकलिभूपहिनिदरिलगेबाहकाढन ज्यौंज्यौंजलमलीनत्यौंत्यौंजमगनमुषमलीनलहेआढन॥तुलसिदासजगदघजवासज्यौंअनघआगिलागेडाढन॥१॥२१॥ सेइयसहितसनेहदेहभरिका
मधेनुकलिकासी॥समनिसोकसंतापपापरुजसकलसुमंगलरासी॥ मरजादाच
हुंओरचरनवरसेवितसुरपुरवासी॥तीरथसवसुभअंगरोमशिवलिंगअमितअविनासी

१॥ अंतर अयन अयनु भल थन फल बछ वेद विस्वासी॥ गलकंबल बरुना विभाति जनु लू
म लसति सरिता सी॥ २॥ दंडपानि भैरव विषान मल रुचि षल गन भयदासी॥ लोल दिने
स त्रिलोचन लोचन करनघंट घंटा सी॥ ३॥ मनिकर्निका बदन ससि सुंदर सुरसरि सुष
सुषमा सी॥ स्वारथ परमारथ परिपूरन पंचकोस महिमा सी॥ ४॥ विस्वनाथ पालक क्र
पाल चित लालति नित गिरिजा सी॥ सिद्ध सची सारद पूजहि मन जोगवति रहति रमा
सी॥ ५॥ पंचाछरी प्रान मुद माधव गव्य सुपंचनदा सी॥ ब्रह्म जीव सम रामनाम दोउ आ
षर विस्व विकासी॥ ६॥ चारितु चरति करम कुकरम करि मरत जीव गन घासी॥ लहत परम १८
पद पय पावन जेहि चहत प्रपंच उदासी॥ ७॥ कहत पुरान रची केसव निज कर करतूति क

लासी तुलसी बसि हरपुरी राम जपु जौं भयो चहै सुपासी॥ ८॥ २२॥ राग बसंत॥ सब
सोच बिमोचन चित्रकूट॥ कलि हरन करन कल्यान बूट॥ [illegible]॥ सुचि अवनि सुहाव
नि आलबाल॥ कानन बिचित्र बारी बिसाल॥ मंदाकिनि मालिनि सदा सींच॥ बर बा
रि विषम नर नारि नीच॥ १॥ साखा सुसृंग भूरुह सुपात॥ निरझर मधुबर मृदुल मलय बा म
त॥ सुक पिक मधुकर मुनिवर बिहार॥ साधन प्रसून फल चारि चार॥ २॥ भव घोर घा
म हर सुखद छाँह॥ थप्यो थिर प्रभाउ जानकी नाह॥ साधक सुपथिक बड़े भाग पा
इ॥ पावत अनेक अभिमत अघाइ॥ ३॥ रस एक रहित गुन करम काल॥ सिय राम ल
षन पालक कृपाल॥ तुलसी जो राम पद चहिय प्रेम॥ सेइय गिरि करि निरुपाधि नेम

वि०प० ४॥२३॥ अवचितचेतिचित्रकूटहिचलु॥कोपितकलिलोपितमंगलमग
१० विलसतवढतमोहमायामलु भूमिविलोकिरामपदअंकितवनविलोकि
रघुवरविहारथलु॥सैलशृंगभवभंगहेतुलखिदलनकपटपाखंडदंभदलु॥१॥जहँ
जनमेजगजनकजगतपतिविधिहरिहरपरिहरिप्रपंचछलु॥सकृतप्रवेसकरतजेहि
आश्रमविगतविषादभएपारथनलु॥२॥नकरुविलंवविचारुचारुमतिवरषपाछिले
समअगिलेपलु॥मंत्रसोजाइजपहिजोजपिभएअजरअमरहरअचइहलाहलु॥३॥
रामनामजपजागकरतनितमज्जतपयपावनपीवतजलु॥करिहैंरामभावतोमन
कोसुखसाधनअनयासमहाफलु॥४॥कामदमनिकामताकलपतरुसोजुगजुगजा १०

गतजगतीतलु॥ तुलसी तोहि विसेष वूझि एक एक प्रतीति प्रीति एकै वलु॥४॥२४॥
जयति अंजनागर्भ अंभोधि संभूत विधु विवुध कुल कैरवानंदकारी॥ केसरी चारु लोचन
चकोरक सुषद लोक गन सोक संतापहारी॥ जयति जय वालकपि केलि कौतुक
उदित चंडकर मंडल ग्रासकर्त्ता॥ राहु रवि सक्र पवि गर्व षर्वीकरन सरन भय हरन जय
भुवनभर्त्ता॥१॥ जयति धुरधीर रघुवीर रनधीर हित रुद्र अवतार संसार पाता॥ विप्र सुर सि
द्ध मुनि आसिषाकार वपुष विमल गुन वुद्धि वारिधि विधाता॥२॥ जयति सुग्रीव सिक्षा
दि रक्षन निपुन वालि वल सालि वध मुख्य हेतू॥ जलधि लंघन सिंघ सिंघिका मद म
थन रजनिचर नगर उतपात केतू॥३॥ जयति भूनंदिनी सोच मोचन विपिन दलन घ

वि०प०
११

ननादवसविगतसंका॥ तूमलीलानलज्वालमालाकुलितहोलिकाकाननलंकेसलं
का॥४॥ जयतिसौमित्रिरघुनंदनानंदकरऋछकपिकटकसंघटविधाई॥ बांधिवारिधिसे
तुअमरमंगलहेतुभानुकुलकेतुरनविजयदाई॥५॥ जयतिवज्रतनुदसननखमुष्टिविक
टचंडभुजदंडतरुसैलपानी॥ समरतैलिकजंत्रतिलतमीचरनिकरपेरिडारेसुभटघा
लिघानी॥६॥ जयतिदसकंठघटकर्णवारिदनादकदनकारनकालनेमिहंता॥ अघ
टघटनासुघटसुघटविघटनविकटभूमिपातालजलगगनगंता॥७॥ जयतिविश्ववि
ख्यातबानैतविरुदावलीविदुषवरननवेदविमलबानी॥ दासतुलसीत्रासशमनसीताभ ११
मनसंगसोभितरामराजधानी॥८॥२५॥ जयतिमर्कटाधीसमृगराजविक्रममहादेव

दमंगलालयकपाली ५ मोहमदकोहकामादिखलसंकुला घोरसंसारनिसिकिरनमा
ली॥ जयतिलसदंजनादितिजकपिकेसरीकस्यपप्रभवजगदार्त्तिहर्त्ता॥ लोक
लोकपकोककोकनदसोकहरहंसहनुमानकल्यानकर्त्ता॥१॥ जयतिसुविसालविकरा
लविग्रहवज्रसारसर्वांगभुजदंडभारी॥ कुलिसनखदसनवरलसतिबालधिवृहद्वै
रिशस्त्रास्त्रधरकुधरधारी॥२॥ जयतिजानकीसोचसंतापमोचनरामलक्ष्मनानंदवारि
जविकासी॥ कीसकौतुककेलिलूमलंकादहनदलनकाननतरुनतेजरासी॥३॥ जय
तिपाथोधिपाषानजलजानकरजातुधानप्रचुरहर्षहाता॥ दुष्टरावनकुंभकरनपा
कारिजितमर्मभितकर्मपरिपाककदाता॥४॥ जयतिभुवनैकभूषनविभीषनवरदविहि

वि०प० १२ तरुन राम संग्राम साका ॥ पुण्य कारण्य सौमित्रि सीता सहित भानुकुल भानु कीरति पता
का ॥ ५ ॥ जयति पर मंत्र यंत्राभिचार ग्रसन कर्म नाकूट कृत्यादि हंता ॥ डाकिनी साकिनी
पूतना प्रेत वेताल भूत प्रमथ जूथ जंता ॥ ६ ॥ जयति वेदांत विद बुधि विद्या विसद वेद वेदांग
विद ब्रह्मवादी ॥ ज्ञान वैराग्य विज्ञान भाजन विभो विमल गुन गनत सुक नारदादी ॥ ७ ॥ ज
यति काल गुन कर्म माया मथन निश्चल ज्ञान व्रत सत्य रत धर्मचारी ॥ सिद्ध सुर वृंद यो
गींद्र सेवित सदा दास तुलसी प्रनत भय तमारी ॥ ८ ॥ २६ ॥ जयति मंगलागार संसार भार अप
हर वानराकार विग्रह पुरारी ॥ राम रोषानल ज्वाल माला मिष ध्वांत चर सलभ संहार का १२
री ॥ [illegible] ॥ जयति मरुदंजनामोद मंदिर नतग्रीव सुग्रीव दुःखैक बंधो ॥ जातुधानोद्धत कु

डुकालाग्निहरसिंधुसुरसज्जनानंदसिंधो ॥४॥ जयति रुद्राग्रनी विश्ववंद्याग्रनी विश्ववि
ख्यातभटचक्रवर्त्ती ॥ सामगानाग्रनी कामजेताग्रनी रामहितरामभक्तानुवर्त्ती ॥५॥ जयति
संग्रामजयरामसंदेशहरकोसलाकुशलकल्याणभाषी ॥ रामविरहार्कसंतप्तभरतादिन
रनारिसीतलकरनकल्पभाषी ॥६॥ जयति सिंहासनासीनसीतारमननिरखिनिर्भरहरषनृ
त्यकारी ॥ रामसम्भ्राजसोभासहितसर्वदा तुलसीमानसरामपुरविहारी ॥७॥ रे ७ ॥ जयति वा
तसंजातविख्यातविक्रमकटहद्रुमवलविपुलवालधिविसाला ॥ जातरूपाचलाकारविग्र
हसहल्लमचिपुलतान्वालमाला जयति बालार्कवरवदनपिंगलनयनकपिस
कर्कसजटाजूटधारी ॥ विकटभ्रुकुटीवज्रदसननखवैरिमदमत्तकुंजरपुंजकुंजरारी ॥९॥ ज

वि०प०
१३

यतिभीमार्जुनव्यालसूदनगरवहरधनंजयरथत्रानकेतु ॥ भीष्मद्रोनकर्नादिपालित
कालदृक्सुजोधनचमूनिधनहेतु ॥ १ ॥ जयतिगतराज्यदातारहंतारसंसारसंकटदनुज
दर्पहारी ॥ ईतिभीतिग्रहप्रेतचौरानलव्याधिबाधाशमनघोरमारी ॥ ३ ॥ जयतिनिगमाग
मव्याकरनकरनलिपिकाव्यकौतुककलाकोटिसिंधो ॥ सामगायककभक्तकामदायकवाम
देवश्रीरामप्रियप्रेमबंधो ॥ ४ ॥ जयतिधर्मांशुसंदग्धसंपातिनवपक्षलोचनदिव्यदेहदाता ॥
कालकलिपापसंतापसंकुलसदाप्रनततुलसीदासतातमाता ॥ ५ ॥ २८ ॥ जयतिनिर्भरानंद
संदोहकपिकेसरीकेसरीसुवनभुवनैकभर्ता ॥ दिव्यभूम्यंजनामंजुलाकरमनेभक्तसंताप १३
चिंतापहर्ता जयतिधर्मार्थकामापवर्गदविभोब्रह्मलोकादिवैभवविरागी ॥ वच

नमानसकर्मेसत्यधर्मेव्रतीजानकीनाथचरनानुरागी ॥२॥ जयतिविहंगेसबलबुद्धि
वेगातिमदमथनमन्मथमथन उर्द्धरेता ॥ महानाटकनिपुनकोटिकविकुलतिलकगा
नगुनगर्वगंधर्वजेता ॥३॥ जयतिमंदोदरीकेसकर्षनविद्यमानदसकंठभटमुकुटमानी
भूमिजादुःखसंजातरोषांतकृतजातनाजंतुकृतजातुधानी ॥४॥ जयतिरामायनश्रवन
संजातरोमांचलोचनसजलसिथिलबानी ॥ रामपदपद्ममकरंदमधुकरपाहिदासतुल
सीसरनसूलपानी ॥५॥२९ जाकेगतिहैहनुमानकी ॥ ताकीपैजपूजिआ
ईयहरेखाकुलिसपषानकी अघटितघटनसुघटविघटनऐसीविरुदावलि
नहिआनकी ॥ सुमिरतसंकटसोचविमोचनमूरतिमोदनिधानकी ॥१॥ तापरसानुकू-

वि॰प॰ ल गिरिजा हर लषन राम अरु जानकी॥ तुलसी कपि की कृपा बिलोकनि षानि सकल कल्या

१४ नकी॥३॥३०॥ ताकिहै तमकि ताकी ओर को॥ जाके है सब भांति भरोसो कपि केसरी किसोर

को॥ जनरंजन अरिगन गंजन मुषभंजन षलबरजोर को॥ बेद पुरान प्रगट पुरुषा

रथ सकल सुभट सिरमोर को॥१॥ उथपे थपन थपे उथपन पन बिबुधबृंद बंदिछोर को

जलधि लंघि दहि लंक प्रबल दल दलन निसाचर घोर को॥ जाको बाल बिनोद समुझि

जिय डरत दिवाकर भोर को॥ जाकी चिबुक चोट चूरन कियो रद मद कुलिस कठोर को॥३॥

लोकपाल अनुकूल बिलोकिबो चहत बिलोचन कोर को॥ सदा अभय जय मुद मंगल १४

मय जो सेवक रनरोर को॥४॥ भगत कामतरु नाम राम परिपूरन चंद चकोर को॥ तुलसी

फलचारयौकरतलजसुगावतगाईवहेरको॥५॥३०॥ ऐसीतोहिनवृझिएह
नुमानहठीले॥साहेवकहूँनरामसेतुमसेनउसीले तेरेदेयतनसिंधकेसिसुमे
डुकलीले॥जानतहौंकलितेरउमनोगुनगानकीलो॥१॥हाँकसुनतदसकंठकेभयेवंध
नढीले॥सोवलगयोकिधौंभयोअवगारवगहीलो॥२॥सेवककोपरदापकटैतूंसमरथसी
लो॥अधिकआपुतेआपनेसनमानिसहीलो॥३॥सांसतितुलसीदासकीदेषिसुजसतुही
लो॥तिहूंकालतिनहकोभलोजेरामरंगीले॥४॥३१॥समरथसुवनसमीरकेरघुवीरपियारे
रे॥मोपरकीवीतोहिजोकरिलेहिभियारे॥ तेरीमहिमातेच…
चिंचिनीचिऔरे
अधिआरोमेरिवारकोतिभुवनउजियारे॥१॥केहिकरनीजनजानिकैसनमानकियारे

वि०प०
१५

केहि अघ औगुन आपनो करि डारि दियो रे ॥२॥ याई सोची माँगि मैं तेरो नाम लियो रे ॥ ते
रे बलबलि आजु लौं जग जागि जियो रे ॥३॥ जो तोसो होतो फिरौं मेरो हेतु हिओ रे ॥ तो क्यों
वदन देखावतो कहि बचन हिओ रे ॥४॥ तोसो ज्ञाननिधान को सर्वज्ञ बिओ रे ॥ हौं समुझ
त साँई द्रोह की गति छार छियो रे ॥५॥ तेरे स्वामी राम से स्वामिनी सिओ रे ॥ तहँ तुलसी क
हँ कौन को काको तकिओ रे ॥६॥२३॥ अति आरत अति स्वारथी अति दीन दुखारी ॥ इन
को बिलगन मानिये बोलहि न बिचारी टिका॥ लोकरीति देखी सुनी ब्याकुल नरनारी
अति बरषे अनबरषेहू देहि दैवहि गारी ॥१॥ नाक हि आए नाथ सो भय साँसति भारी
कहि आए कीबी छमा निज ओर निहारी ॥२॥ समय साँकरे सुमिरिए समरथ हित का १५

री॥ सो सव विधि उपर करै अपराध विसारी॥३॥ विगरी सेवक की सदा साहिवहि सुधा
री॥ तुलसी पर तेरी कृपा निरुपाधि निनारी॥४॥३४॥ कटु कहिए गाढे परे सुनि समुझि सु
साँई॥ करहि अनभलेहु को भलो आपनी भलाई॥ टिका॥ समरथ सुभ जो पावई वी
र पीर पराई॥ ताहि तकै सव ज्यों नदी वारिधि न वुलाई॥१॥ अपनो अपने को भलो च
है लोग लुगाई॥ भावे जो जेहि तेहि भजे सुभ असुभ सगाई॥२॥ वाह्यो लै दे थापिए
जौ निज वरिआई॥ विनु सेवा सो पालिए सेवक की नाई॥३॥ चूक चपलता मेरियै तू वडो
वडाई॥ होत आदर ढीठ हौं अति नीच निचाई॥४॥ वंदी छोर विरदावली निगमागम
गाई॥ नीको तुलसीदास को तेरिये निकाई॥५॥३५॥ मंगलमूरति मारुततं

दन सकल अमंगल मूल निकंदन ॥ पवन तनय संतन हितकारी ॥ हृदय बि
राजत अवध बिहारी ॥ १ ॥ मातु पिता गुरु गनपति सारद ॥ सिवा समेत संभु सुक नारद ॥ च
रन बंदि बिनवौं सब काहू ॥ देहु रामपद नेह निबाहू ॥ बंदौं राम लषन बैदेही ॥ जे तु
लसी के परम सनेही ॥ ४ ॥ ३ ॥ कबहुँक अंब अवसर पाइ ॥ मेरिऔ सुधि द्याइबी
कछु करुन कथा चलाइ ॥ दीन सब अंग हीन छीन मलीन अघी अघाइ ॥ नाम
लै भरै उदर एक प्रभु दासी दास कहाइ ॥ १ ॥ बूझिहैं सो है कौन कहिबी नाउँ दसा जनाइ ॥
सुनत राम कृपाल के मेरी बिगरिऔ बनि जाइ ॥ २ ॥ जानकी जगजननि जन की किए बच
न सहाइ ॥ तरै तुलसीदास भव तव नाथ गुन गन गाइ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ४ ॥ कबहुँ समय सुधि द्याइबी मे

रीमातुजानकी॥जनकहाइनामलेतहौं किएपनत्रातिकज्यौंप्यासमुप्रेमपानकी
सरलप्रकृतिआपुजानिएकरुनानिधानकी॥निजगुनअरिकृतअनहितोदासदोषसु
रतिचितरहतिनदिएदानकी॥१॥वानिविसरनसीलहैमानदअमानकी॥तुलसिदास
नविसारिएमनक्रमवचनजाकेसपनेहुगतिनआनकी॥३॥२०॥लाडिलेलषनलाल
हितहोजनके॥सुमिरेसंकटहारीसकलमंगलकारीपालककृपालआपनेकेपनके
धरनीधरनहारभंजनभुवनभारअवतारसाहसीसहसफनके॥सत्यसंधसत्यव्रतपरम
धरमरतनिरमलकरमवचनमनके॥१॥रूपकेनिधानधनुवानपानितनकटिमहावी
रविदितजितैयावडेरनके॥सेवकसुषदायकसवलायकगायकजानकीनाथगुनगनके

वि० प०
६७ ३॥ भावतेभरतकेसुमित्रासीकेदुलारेचातकचतुररामस्यामघनके॥ वल्लभउर्मिलाके
सुलभसनेहवसधनीधनतुलसीसेनिरधनके॥३॥३॥ ॥ [illegible] जयतिलक्ष्मनानं
तभगवंतभूधरभुजगराजभुवनेसभूभारहारी॥ प्रलयपावकमहाज्वालमालाव
मनसमनसंतापलीलावतारी॥ [illegible] जयतिदासरथीसमरसमर्थसुमित्रासुवनसत्रुसूदन
रामभरतबंधो॥ चारुचंपकबरनबसनभूषनधरनदिव्यतरभव्यलावन्यसिंधो॥१॥ जयति
गाधेयगौतमजनकसुखजनकविस्वकंटककुटिलकोटिहंता॥ वचनचयचातुरीपर
सुधरगर्वहरसर्वदारामभद्रानुगंता॥२॥ जयतिसीतेससेवासरसविषयरसनिरसनि ६७
रुपाधिधुरधर्मधारी॥ विपुलवलमूलशार्दूलविक्रमजलदनादमर्दनमहावीरभारी॥३॥

जयतिसंग्रामसागरभयंकरतरनरामहितकरनबरबाहुसेतू॥उर्मिलारमनकल्या
नमंगलभवनदासतुलसीदोषदमनहेतू॥८॥४०॥जयतिभूमिजारमनपदकंजमक
रंदरसरसिकमधुकरभरतभूरिभागी॥भुवनभूषनभानुवंसभूषनभूमिपालमनिरा
मचंद्रानुरागी॥१॥जयतिबिबुधेसधनदादिदुर्लभमहाराजसंभ्राजसुखपदबि
रागी॥खड्गधाराव्रतप्रथमरेखाप्रगटशुद्धमतिजुवतिपतिप्रेमपागी॥२॥जयतिनिरुपा
धिभक्तिभावजंत्रितहृदयबंधुहितचित्रकूटाद्रिचारी॥पादुकान्रपसचिवपुहमि
पालकपरमधर्मधुरधीरबरबीरभारी॥३॥जयतिसंजीवनीसमयसंकटहनुमानधनु
बानमहिमाबखानी॥बाहुबलबिपुलपरमितिपराक्रमअतुलगूढगतिजानकीजा

वि० प० ३८

निज्ञानी॥३॥ जयति रनमत्र जितरगांधर्व गनगर्व हर्ता फिरि किरि रामगुनगाथ गाता॥ मांडवी चि-
त्त चातक नवांबुद बरन सरन तुलसीदास अभय दाता॥४॥४०॥ जयति जय सत्रु करि केसरी
सत्रुहन सत्रु तम तुहिन हर किरनकेतू॥ देव महि देव महि धेनु सेवक सुजन सिद्ध मुनि सक
ल कल्यान हेतू॥१॥ जयति सर्वांग सुंदर सुमित्रा सुवन भुवन विख्यात भरतानुगामी॥
वर्म चर्मासि धनु बान तूनीर धर सत्रु संकट समन यत्प्रनामी॥२॥ जयति लवनांबु निधि कुं- ग
भ संभव महा दनुज दुर्जन दवन दुरित हारी॥ लक्ष्मनानुज राम सीता चरन रेनु भूषित भा- भरत
८ ल तिलक धारी॥३॥ जयति श्रुति कीर्ति वल्लभ सुदुर्लभ सुलभ नमित नर्मद भक्ति दाता॥ न संदरण ३८
दास तुलसी चरन सरन सीदत विभो पाहि दीनार्त संताप हाता॥४॥४१॥ जयति सच्चिद्व्या

पकानंदयनब्रह्मविग्रहव्यक्तलीलावतारी॥ विकलब्रह्मादिसुरसिद्धसंकोचवसविम
लगुनगेहनरदेहधारी दिका॥ जयतिकोसलाधीसकल्यानकोसलसुताकुसलकै
वल्यफलचारुचारी॥ वेदबोधितकर्मधर्मधरनीधेनुविप्रसेवकसाधुमोदकारी॥१॥जय
तिरिषिमखपालसमनसज्जनसालसापवससमुनिवधूपापहारी॥ भंजिभवचापदलिदा
पभूपावलीसहितभृगुनाथनतमाथभारी॥२॥जयतिधार्मिकधीरधुरवीररघुवीरगुरुमा
तुपितुबंधुवचनानुसारी॥ चित्रकूटादिविंध्यादिदंडकविपिनधन्यकृतपुन्यकानन
विहारी॥३॥जयतिपाकारिसुतकाककरतूतिफलदानिखनिगर्त्तगोपितविराधा॥ दिव्य
देवीवेषदेषिलषिनिसिचरीजनुविडंबितकरीविस्ववाधा॥४॥जयतिखरत्रिसिरदूं

वि०प० घनचतुर्दससहससुभटमारीचसंघारकर्त्ता ॥ श्रीद्रुमवरीभक्तिविवसकरुनासिंधुचरित
१९ निरुपाधित्रिविधोर्त्तिहर्त्ता ॥ ५ ॥ जयतिमदअंधकुकवंधवधिवालिवलसालिवधिकरन
सुग्रीवराजा ॥ सुभटमर्कटभालुकटकसंघटसजनमितपदरावनानुजनिवाजा ॥ ६ ॥
जयतिपाथोधिकृतसेतुकौतुकहेतुकालमनअगमलइलंकिलंका ॥ सकुलसानु
जमददलदलितदसकंठरनलोकलोकपकिएविगतसंका ॥ ७ ॥ जयतिसौमित्रिसीता
सचिवसहितचलेपुष्पकारूढनिजराजधानी ॥ दासतुलसीमुदितअवधवासीसकल
रामभएभूपवैदेहिरानी ॥ ८ ॥ ४७ ॥ जयतिराजराजेंद्रराजीवलोचनरामनामकलिकाम १९
तरुसामसाली ॥ अनयअंभोधिकुंभजनिसाचरनिकरतिमिरघनघोरखरकिरनमाली

जयतिदेवमुनिदेवनरदेवदसरथ्थकेदेवमुनिवंद्यकिएअवधवासी॥लोकना
यककोकसोकसंकटसमनभानुकुलकमलकाननविकासी॥१॥जयतिसिंगारसर
तामरसदामदुतिदेहगुनगेहविश्वोपकारी॥सर्वसौभाग्यसौंदर्यसुषमारूपनिज
मनोभवकोटिगर्वहारी॥२॥जयतिसुभगसारंगसुनिषंगसायकसक्तिचारुचर्मासिवर
वर्मधारी॥धर्मधुरधीररघुवीरभुजबलअतुलहेलयादलितभूभारभारी॥३॥जयतिक
लधौतमनिमुकुटकुंडलश्रवनतिलकभलभालविधुवदनसोभा॥दिव्यभूषनवस
नपीतउपवीतकिएध्यानकल्यानभाजननकोभा॥४॥जयतिभरतसौमित्रिसत्रु
घ्नसेवितसुमुखसचिवसेवकसुखदसर्वदाता॥अधमआरतदीनपतितपातकपीनस

वि० प०
२०

कृत नतिमान कहि पाहि पाता ॥४॥ जयति जय भुवन दस चारि जस जगमगत पुन्यमय
धन्य जय राम राजा ॥ चरित सुरसरित कवि मुख्य गिरि निःसरित पिवत मज्जत मुदित स
त समाजा ॥६॥ जयति वर्नाश्रमाचार पर नारि नर सत्य सम दम दया दान सीला ॥ विगत दु
ख दोष संतोष सुख सर्वदा सुनत गावत राम राज लीला ॥७॥ जयति वैराग्य विज्ञान वा
रांनिधे नमत नर्मद पाप ताप हर्त्ता ॥ दास तुलसी चरन सरन संसय हरन देहि अवलंब
वैदेहि भर्त्ता ॥ ८ ॥४४॥ राग गौरी ॥ श्रीरामचंद्र कृपाल भजु मन हरन भव भय दारुनं ॥
नवकंज लोचन कंजमुख कर कंज पद कंजारुनं ॥ कंदर्प अगणित अमित छवि २०
नव नील नीरद सुंदरं ॥ पट पीत मानहु तडित रुचि सुचि नौमि जनक सुतावरं ॥१॥ सिर

मुकुटकुंडलतिलकचारुउदारअंगविभूषनं ॥ आजानुभुजसरचापधरसंग्रामजितखर
दूषनं ॥ ३ ॥ इतिवदततुलसीदाससंकरसेसमुनिमनरंजनं ॥ ममहृदयकंजनिवासकरु
कामादिखलदलगंजनं ॥ ४ ॥ ५ सदारामजपुरामजपुरामजपुरामजपुराम
जपुमूढमनवारंवारं ॥ सकलसौभाग्यसुखखानिजियजानिसठमानिविस्वासवदवेद
सारं ॥ कौशलाइंदुनवनीलकंजाभतनुमदनरिपुकंजहृदिचंचरीकं ॥ जानकी
रवनसुखभवनभुवनैकप्रभुसमरभंजनपरमकारुनीकं ॥ १ ॥ दनुजवनधूमध्वजपीन
आजानुभुजदंडकोदंडवरचंडवानं ॥ अरुनकरचरनमुखनयनराजीवगुनअयनबहु
मयनसोभानिधानं ॥ २ ॥ वासनावृंदकैरवदिवाकरकामक्रोधमदकंजकाननतुषारं

वि०प०
२१

लोभअतिमत्तनागेंद्रपंचाननंविप्रहितहरनसंसारभारं॥३॥केसवंक्लेसहंकेसवंदितपद
द्वंदमंदाकिनीमूलभूतं॥सर्वदानंदसंदोहमोहापहंघोरसंसारपाथोधिपोतं॥४॥सोकसंदे
हपाथोदपटलानिलंपापपर्वतकठिनकुलिसरूपं॥संतजनकामधुकधेनुविश्रामपदनाम
कलिकलुषभंजनंअनूपं॥५॥धर्मकल्पद्रुमंनामहरिधामपथिसंबलंमूलमिदमेवए
कं॥भक्तिवैराग्यविज्ञानसमदानदमनामआधीनसाधनअनेकं॥६॥तेनतप्ततेनद
त्तमेवाखिलंतेनसर्वंकृतंकर्मजालं॥जेनश्रीरामनामामृतंपानकृतमनिसमन
वद्यमवलोक्यकालं॥७॥स्वपचखलभिल्लजवनादिहरिलोकगतनामबलविपुलम
तिमलिनपरसी॥त्यागिसबआसमंत्रासभवपासअसिनिसितहरिनामजपुदासतु

लषी॥ प॥४६॥ ऐसी आरती राम रघुवीर की करहि मन॥ हरन दुख दुंद गोविंद आ
नंदघन ॥ अचर चर रूप हरि सर्व्वदा वसत इति वासना धूप दीजै॥ दीप निज
बोधगत क्रोध मद मोह तम प्रौढ अभिमान चितवृत्ति छीजै॥१॥ भाव अतिसय विस
द प्रवर नैवेद्य शुभ श्रीरमन परम संतोषकारी॥ प्रेम तांबूल गत शूल संसय सकल
विपुल भव वासना वीज हारी॥२॥ अशुभ शुभ कर्म घृत पूर्न दस वर्त्ति का त्याग पावक स
तोगुन प्रकासं॥ भक्ति वैराग्य विज्ञान दीपावली अर्पि नीराजनं जगनिवासं॥३॥ विम
ल हृदि भवन कृत सांति पर्यंक शुभ सयन विश्राम श्रीरामराया॥ छमा करुना प्रमुख
तत्र परिचारिका यत्र हरि तत्र नहि भेद माया॥४॥ एहि आरती निरत सनकादि श्रुत

वि०प० सेषसिवदेवरिषिअखिलमुनितत्वदरसी॥ जोईकरैसोईतौपरिहरैकामसबवदतइति
२२ विमलमतिदासतुलसी॥५॥४७॥ हरतिसबआरतीआरतीरामकी॥ दहतिदुखदोष
निर्मूलिनीकामकी॥ टेक॥ सुभगसौरभधूपदीपवरमालिका॥ उडतअघविहंगसु
निताලकरतालिका॥१॥ भक्तहृदभवनअज्ञानतमहारनी॥ विमलविज्ञानमयतेज
विस्तारनी॥२॥ मोहमदकोहकेलिकंजहिमजामिनी॥ मुकुतिकीदूतिकादेहदुति
दामिनी॥३॥ प्रनतजनकुमुदवनइंदुकरजालिका॥ तुलसीअभिमानमहिषेसब
हुकालिका॥४॥४८॥ देवदनुजवनदहनगुनगहनगोविंदनंदादिआनंददाता २२
विनासी॥ संभुसिवरुद्रशंकरभयंकरभीमघोरतेजायतनक्रोधरासी॥ टेक॥ दे

वनंतभगवंतजगदंतअंतकत्राससमनश्रीरमनभुवनाभिरामं॥ भूधराधीसजग
दीसईसानविज्ञानघनज्ञानकल्यानधामं॥१॥ देववामनाव्यक्तपावनपरावरवि
भोप्रगटपरमात्माप्रकृतिस्वामी॥ चंद्रसेषरसूलपानिहरअनघअजअमितअवि
छिन्नवृषभेसगामी॥२॥ देवनीलजलदाभतनुस्यामवहुकामछविरामराजीवलो
चनकृपाल॥ कंवुकर्पूरवपुधवलनिर्मलमौलिजटासुरतटिनिसितसुमनमाल॥३॥
देववसनकिंजल्कधरचक्रसारंगदरकंजकौमोदकीअतिविसाल॥ मारकरिमत्तमृगरा
जत्रयनयनहरनौमिअपहरनसंसारजाल॥४॥ देवकृस्नकरुनाभवनदवनका
लीयषलविपुलकंसादिनिर्वंसकारी॥ त्रिपुरमदभंगकरमत्तगजचर्मधरअंधकोरग

हारी॥सुखदनर्मदवरदविरजअनवद्यखिल

वि० प० मसमनपन्नगारी॥५॥देवब्रह्म व्यापक अकलसकलपरमहितज्ञानगोतीतगुनवृ वि० प०

त्तिहर्त्ता॥सिंधुसुतगर्वगिरिवज्रगौरीसमनदक्षमखअखिलविध्वंसकर्त्ता॥६॥देवभक्ति

२३ प्रियभक्तजनकामधुकधेनुहरिहरनदुर्घटविकटविपतिभारी आनंदवीथिनविहारी॥७॥दे

वरुचिरहरिसंकरीनाममंत्रावलीद्वंदुखहरनिआनंदखानी॥विष्णुशिवलोकसो

पानसमसर्वदादासतुलसीवदतविसदवानी॥५॥४८॥देवभानुकुलकमलरविको

टिकंदर्पछविकालकलिव्यालमिववैननेयं॥प्रबलभुजदंडपरचंडकोदंडधरतूनव

रविसिखबलमप्रमेयं॥ [illegible] देवकंजनवराजीवदलनयनसुषमाअयनस्यामतनुकां २३

तिवरवारिदाभं॥तप्तकांचनवस्त्रसस्त्रविद्यानिपुनसिद्धसुरसेव्यपाथोजनाभं॥देव

अखिल लावन्य रछविश्वविग्रह परम प्रौढ गुन गरिम महिमा उदारं ॥ दुर्धर्ष दुस्त
र दुर्ग खर्व अमरवर्ग पति भग्न संसार पादप कुठारं ॥ २ ॥ देव स्मापव सम मुनि वध मुक्ति हे
त विप्र हित जग्य रक्षन दक्ष पक्ष कर्त्ता ॥ जनक नृप सदसि शिवचाप भंजन उग्र भा
र्गव गर्व गरिमा पहर्त्ता ॥ ३ ॥ देव देव गुरगिरा गौरव सुदुरु यज्य राजन्य कृ श्री सकल सौ
मित्रि भ्राता ॥ संगजन कान्म जाम नुजम नुस्रन्य अजदुष्ट वध निरत त्रैलोक्य त्राता ॥ ४ ॥
देव दंडकारन्य कृत पुन्य पावन चरन हरन मारीच माया कुरंगं ॥ वालि वल मत्त ग
जराज इव केसरी सुहृद सुग्रीव दुखरासि भंगं ॥ ५ ॥ देव रिक्ष मर्कट विकट सुभट उद्भ
ट समर सैल संकास रिपु त्रास कारी ॥ वद्ध पाथोधि सुर निकर मोचन सकुल दलन दस

वि॰प॰
२५

सीसभुजवीसभारी॥६॥देवदुष्टविवुधारिसंहातिअपहरनमहिभारअवतारकारनअनूपं
अमलअनवद्यअद्वैतनिर्गुनसगुनव्रह्मसुमिरामिनरभूपरूपं॥७॥देवसेषश्रुतिसारदा
संभुनारदसनकगनतगुनअंतनहितवचरित्रं॥सोइरामकामारिप्रियअवधपतिसर
र्वदादासतुलसीत्रासनिधिवहित्रं॥८॥५०॥देवजानकीनाथरघुनाथरागादितमतर
नितारुन्यतनतेजधामं॥सच्चिदानंदआनंदकंदाकरंविश्वविश्रामरामाभिरामं
देवनीलनववारिधरसुभगसुभकांतिकरपीतकौसेयवरवसनधारी॥रत्नहाटकजटि
तमुकुटमंडितमौलिभानुसतसदृशउद्योतकारी॥२॥देवश्रवनकुंडलभालतिलक २५
भ्रूरुचिरअतिअरुनअंभोजलोचनविसालं॥वक्रअवलोकित्रयलोकसोकापहंमा

रश्मिरि हृदयमानसमरालं ॥ २ ॥ देवनासिकाचारुसुकपोलद्विजवक्त्रद्युतिअधरबिंबोपम
मधुरहासं ॥ कंठदरचिबुकवरवचनगंभीरतरसत्यसंकल्पसुरत्रासनासं ॥ ३ ॥ देवसुमत
सुविचित्रनवतुलसिकादलजुतंमृदुलवनमालउरभ्राजमानं ॥ भ्रमतआमोदवससत्त
मधुकरनिकरमधुरतरमुखरकुर्वंतिगानं ॥ ४ ॥ देवश्रुभगश्रीवत्सकेयूरकंकणहारकिंकि
णीरटनिकटितटरमालं ॥ वामदिसिजनकजाप्तीनसिंहसनं कटकमृदुवल्लिमिवत
रुतमालं ॥ ५ ॥ देवआजानुभुजदंडकोदंडमंडितवामवाहुदक्षिनपानिवानमेकं ॥ अखि
लमुनिनिकरसुरसिद्धगंधर्ववरनमतनरनागअवनिपमनेकं ॥ ६ ॥ देवअनघअनवछि
न्नसर्वज्ञसर्वेससषलुसर्वतोभद्रदातासमावं ॥ प्रनतजननषेदविच्छेदविद्यानिपुननौमिश्री

वि॰ प॰
२५

रामसौमित्रिसीता कं ॥ ७ ॥ देव जुगलपदपद्म सुखसद्म पद्मालयं चिन्ह कुलिसादि सो
भाति भारी ॥ हनुमंत हृदि विमल कृत परम मंदिर सदा दास तुलसी सरन सोकहारी ॥ ८
५९ ॥ देव कोसलाधीस जगदीस जगदेकहित अमित गुन विपुल विस्तार लीला ॥ गा
यंति तव चरित सुपवित्र श्रुति सेष सुक संभु सनकादि मुनि मननसील ॥ देव वारि
चर वपुष धरि भक्त निस्तारपर धरनिकृत नाव महिमाति गुर्वी ॥ सकल जज्ञांगमय उग्र
विग्रह क्रोड मर्दि दनुजेस उद्धरन उर्वी ॥ २ ॥ देव कमठ अति विकट तनु कठिन पृष्ठो
परि भ्रमत मंदर कंडु सुख मुरारी ॥ प्रगट कृत अमृत गो इंदिरा इंदु वृंदारकावृंद आनंद २५
कारी ॥ ३ ॥ देव मनुज मुनि सिद्ध सुर नाग त्रासक दुष्ट दनुज द्विज धर्म मर्जाद हर्ता

अतुलमृगराजवपुधरितविद्दरितअरिभक्तप्रहलादअह्लादकर्त्ता॥३॥देवछलन
बलिकपटवटुरूपवामनब्रह्मभुवनपर्यंतपदतीनिकरनं॥चरननखनीरत्रैलोक्य
पावनपरमविबुधजननीदुसहसोकहरनं॥४॥देवक्षत्रियाधीसकरिनिकरवरके
सरीपरसुधरविप्रससिजलदरूपं॥बीसभुजदंडदससीसखंडनचंडवेगसायकनौमि
रामरूपं॥५॥देवभूमिभरभारहरप्रगटपरमात्माब्रह्मनररूपधरभगतहेतू॥वृष्णिकु
लकुमुदराकेसराधारमनकंसवंसाटवीधूमकेतू॥६॥देवप्रबलपाषंडमहिमंडलाकु
लदेखिनिंद्यकृतअखिलमखकर्मजालं॥शुद्धबोधैकघनज्ञानगुनधामअजबौद्धअव
तारवंदेकृपालं॥७॥देवकालकलिजनितमलमलिनमनसर्वनरमोहनिसिनिबिड

वि०प०
९६

जवनांधकारी॥ विष्णुजसपुन्नकल्कीदिवाकरउदितदासतुलसीहरनविपतिभारं॥८
५७॥ देवसर्वसौभाग्यप्रदसर्वतोभद्रनिधिसर्वेसर्वेससर्वाभिरामं॥ सेवेहृदिवंजमकरं
दमधुकरुचिरुपभूपालमनिनैनाभिरामं [illegible] देवसर्वसुषधामगुनग्रामविश्रा
मप्रदनामसर्वासपदमतिपुनीतं॥ निर्मलंशांतसुविशुद्धबोधायतनक्रोधमदहरन
करुनानिकेतं॥१॥ देवजन्मजितनिरुपाधिगोतीतमव्यक्तविभुमेकमनवद्यमजमद्विती
यं॥ प्राकृतंप्रगटपरमातमापरमहितप्रेरकानंदवंदेतुरीयं॥२॥ देवभूषणंसुदरंश्रीवरं
मदनमदमथनसौंदर्यसीमातिरम्यं॥ दुःप्राप्यदुःप्रेक्ष्यदुस्तर्क्यदुःपारसंसारहर ९६
सुलभमृदुभावगम्यं॥३॥ देवसत्यरूपंसत्यरतसत्यव्रतसर्वदापुष्टसंतुष्टसंकष्टहर

री॥धर्मवर्मनिब्रह्मकर्मबोधैकविप्रपुज्यब्रह्मन्यजनप्रियमुरारी॥४॥देवनित्यनिर्म
मनित्यमुक्तनिर्मानहरिज्ञानघनसच्चिदानंदमूलं॥सर्वरक्षकसर्वभक्षकाध्यक्षकू
टस्थगूढार्चिभक्तानुकूलं॥५॥देवसिद्धसाधकसाध्यवाच्यवाचकरूपमंत्रजापक
जाप्यसृष्टिस्रष्टा॥परमकारनकंजनाभजलदाभतनुसगुननिर्गुनसकलदृश्यद्रष्टा
॥६॥देवव्योमव्यापकविरजब्रह्मवरदेसवैकुंठवामनविमलब्रह्मचारी॥सिद्धवृंदा
रकावृंदवंदितसदाखंडिपाखंडनिर्मूलकारी॥७॥देवपूर्नानंदसंदोहअपहरनसं
मोहअज्ञानगुनसन्निपातं॥वचनमनकर्मगतसरनतुलसीदासत्रासपाथोधि
इवकुंभजातं॥८॥५३॥देवविश्वविख्यातविश्वेसविश्वायतननविश्वमर्जादव्यालारि

वि॰प॰ २७ गामी॥ ब्रह्मवरदेसवागीस व्यापकविमलविपुलबलवाननिर्वानस्वामी॥ देवप्रकृ
तिप्रहतनमहादिगुनदेवताव्योममरुदग्निअमलांबुउर्वी॥ बुद्धिमनइंद्रियाप्रानवि
ज्ञानात्माकालपरमानुचिच्छक्तिगुर्वी॥ ९॥ देवसर्वमेवात्रत्वद्रूपभूपालमनिव्यक्तमव्यक्त
गतभेदविष्णो॥ भुवनभवदंसकामारिवंदितपदद्वंदमंदाकिनीजनकजिष्णो॥ १॥ देव
आदिमध्यांतभगवंतत्वांसर्वगतमीसपस्यंतिजेब्रह्मवादी॥ जथापटतंतुघटमृत्तिका
सर्पस्रगदारुकरिकनककटकांगदादी॥ ३॥ देवगूढगंभीरगर्वघ्नगूढार्थवितगुप्तगो
तीतगुरुज्ञानदाता॥ ज्ञेयज्ञानप्रियप्रचुरगरिमागारघोरसंसारपरपारदाता॥ ४॥ देव २७
सत्यसंकल्पअतिकल्पकल्पांतकृतकल्पनातीतअहितल्पवासी॥ वनजलोचनवन

जनाभवनदाभवपुवनचरध्वजकोटिलावन्यरासी॥५५॥देवमुकरदुःकरदुराराध्यदुर्व्यो
मनहरदुर्गोद्धर्षदुर्गार्तिहर्त्ता॥वेदगर्भार्भकादर्भगुनगर्वअर्वाकपरागवेनिर्वापक
र्त्ता॥५६॥देवभक्तअनुकूलभवशूलनिर्मूलकरतूलअघनामपावकसमानं॥तरलतृष्णा
तमीतरनिधरनीधरनसरनभयहरनकरुनानिधानं॥५७॥देवबकुलबंदारबंदारिका
बंदपदद्वंद्वमंदारमालोरधारी॥पाहिमामीससंतापसंकुलसदादासतुलसीप्रनतराव
नारी॥५८॥५४॥देवसंतसंतापहरविश्वविश्रामकररामकामारिअभिरामकारी॥शुद्ध
बोधायतनसच्चिदानंदघनसज्जनानंदवर्द्धनखरारी॥[illegible]॥देवसीलसमताभवनवि
षमतामतिसमनराममरामारमनरावनारी॥खड्गकरचर्मवरवरदवरामधररुचिरकटितूनसा

रसिकसारंगभारी॥ १॥ देव सत्यसंधान निर्बानप्रद सर्वहित सर्वगुन ज्ञान विज्ञानशाली॥
सघनतमघोरसंसारभर सर्वरी नाम दिवसेस खरकिरनमाली॥ २॥ देव नतप्रतीनतरूनती
वृतापद्दलन तपरूप तनु भूप तमपर तपस्वी॥ मान मद मदन मत्सर मनोरथ मथन मोहअं
भोधिमंदर मनस्वी॥ ३॥ देव वेदविख्यात वरदेस वामन विरज विमल वागीस वैकुंठस्वा
मी॥ कामक्रोधादिमर्दन विवर्द्धन छमा सांति विग्रह विहगराजगामी॥ ४॥ देव परम पावन
पापपुंजमुंजाटवी अनल इव निमिष निर्मूलकर्ता॥ भुवनभूषन दूषनारि भुवनेस भूना
थश्रुतिमाथ जय भुवनभर्ता॥ ५॥ देव अमल अविचल अकल सकल संतप्त कलिविकल
ताभंजनानंदरासी॥ उरगनायकसयन तरुनपंकजनयन छीरसागरअयन सर्ववा

सी॥६॥ देवसिद्धकविकोविदानंददायकपदद्वंदमंदात्ममनुजैर्दुरापं॥ यत्रसंभूतअति
पूतजलसुरसरीदर्सनादेवअपहरतिपापं॥२॥ देवनित्यनिर्मुक्तसंजुक्तगुननिर्गुनानं
दभगवंतन्यामकनियंता॥ विस्वपोषनभरनविस्वकारनकरनसरनतुलसीदासत्रास
हंता॥३॥५५॥ देवदनुजसूदनदयासिंधुदंभापहनदहनदुर्दोषदुष्पापहर्त्ता॥ दुष्ट
तादमनदमभवनदुःखौघहरदुर्गदुर्वासनानासकर्त्ता॥४॥ देवभूरिभूषनभानु
मंतभगवंतभवभंजनाभैदभुवनेसभारी॥ भावनातीतभववंद्यभवभक्तहितभूमिउद्ध
रनभूधरनधारी॥५॥ देववरदवनदाभवागीसविस्वात्माविरजवैकुंठमंदिरविहारी॥ देव
व्यापकंव्योमवंद्यांघ्रिपावनविभोब्रह्मविद्ब्रह्मचिंतापहारी॥६॥ देवसहजसुंदरसुमुखसु

वि०प० मनशुभ सर्वदा गुन सर्वज्ञ स्वच्छंदचारी ॥ सर्वकृत सर्वजित सर्वहित सत्य संकल्प कल्या-
२९ नकारी ॥३॥ देव नित्य निर्मोह निर्गुन निरंजन निजानंद निर्मान निर्वानदाता ॥ निर्भरा-
नंद निःकंप निःसीम निर्मुक्त निरुपाधि निर्मम विधाता ॥४॥ देव महामंगलमूल मोद
महिमायतन मुग्ध मधुमथन मानद अमानी ॥ मदनमर्दन मदातीत मायारहित मंजु
मानाथ पाथोजपानी ॥५॥ देव कमललोचन कलाकोस कोदंडधर कोसलाधीस क-
ल्यानरासी ॥ जातुधान प्रचुर मत्त करि केसरी भक्तमन पुन्य आरन्यबासी ॥६॥ देव अन-
घ अद्वैत अनवद्य अव्यक्त अज अमित अविकार आनंदसिंधो ॥ अचल अनिकेत अ- २९
विरल अनामय अनारंभ अंभोदनादघ्न बंधो ॥७॥ देव दास तुलसी खेदखिन्न आ-

पन्नहरिसोकसंपन्नअतिसयअभीतं॥ प्रनतपालकरामपरमकरुनाधामपाहिमामु
र्विपतिदुर्विनीतं॥५६॥ देवदेहिसतसंगनिजअंगश्रीरंगकारनसरनसोकहारी॥ जे
तुभवदंघ्रिपल्लवसमाश्रितसदाभक्तिरतविगतसंसयमुरारी॥ देवअसुरसुरना
गनरजक्षगंधर्वखगरजनिचरसिद्धजेचापिअन्ये॥ संतसंसर्गत्रयवर्गअपवर्गपद
प्राप्यनिःप्राप्यगतित्वयिप्रसन्ये॥२॥ देववृत्रबलिवानप्रहलादमयव्याधगजगी
द्धद्विजबंधुनिजधर्मत्यागी॥ साधुपदसलिलनिर्धूतकल्मषसकलस्वपचजवनादि
कैवल्यभागी॥३॥ देवसांतनिरपेक्षनिर्ममनिरामयअगुनसब्दब्रह्मैकपरब्रह्मग्यानी
दक्षसमदृकस्वदृकविगतअतिस्वपरमतिपरमरतिविरतितवचक्रपानी॥४॥ देववि

वि०प०
३०

स्व अपकार हित व्यग्र चित सर्वदा त्यक्त मद मन्यु कृत पुन्य रासी ॥ यत्र तिष्ठंति तत्रैव अज स
र्व हरि सहित गच्छंति छीराब्धिबासी ॥४॥ देव बेद पय सिंधु सुबिचार मंदर महा अखिल मु
निवृंद निर्मथन कर्ता ॥ सार सतसंग उद्धृत इति निश्चित बदत श्रीकृष्ण बैदर्भि भर्ता ॥५॥
देव सोक संदेह भय हर्ष तम तर्षगन साधु सद्युक्ति बिच्छेदकारी ॥ यथा रघुनाथ सायक निसा
चर चमू निचय निर्दलन पटु बेग भारी ॥६॥ देव यत्र कुत्रापि मम जन्म निज कर्म बस भ्रमत
जग जोनि संकट अनेकं ॥ तत्र त्वद्भक्ति सज्जन समागम सदा भवतु मे राम बिश्राम मेकं ॥७॥ दे
व प्रबल भव जनित त्रै ब्याधि भैषज भक्ति भक्त भैषज्य मद्वैत दरसी ॥ संत भगवंत अंतर निरं ३०
तर नहीं किमपि मति बिमल कह दास तुलसी ॥८॥५७॥ देव देहि अवलंब कर कमल कमलाकम

लार मन दम न दुख सम मन संताप भारी ॥ ज्ञान राकेस ग्रासन विधुंतुद दलन काम करि म
त्त हरि दूषनारी देव वपुष ब्रह्मांड सुप्रवृत्ति लंका दुर्ग रचित मन दनुज मय रूप
धारी ॥ विविधि कोसौघ अति रुचिर मंदिर निकर सत्वगुन प्रमुख त्रय कटक कारी ॥१॥ देव कु
नप अभिमान सागर भयंकर घोर विपुल अवगाह दुस्तर अपारं ॥ नक्र रागादि संकुल मनो
रथ सकल संग संकल्प वीची विकारं ॥२॥ देव मोह दसमौलि तद्भ्रात अहंकार पाकारिजि
त काम विश्राम हारी ॥ लोभ अतिकाय मत्सर महोदर दुष्ट क्रोध पापिष्ठ विबुधांतकारी ॥३॥ दे
व द्वेष दुर्मुख दंभ खर अकंपन कपट दर्प मनुजाद मद सूलपानी ॥ अमित बल परम दुर्जय
निसाचर निकर सहित षडवर्ग गो जातुधानी ॥४॥ देव जीव भव दंघ्रि सेवक विभीषन बसत

वि०प० मध्यदुष्टाटवीग्रसितचिंता॥ नियमयमसकलसुरजोगलोकेसलंकेसवसनाथअ
३१ त्यंतभीता॥५॥ देवज्ञानअवधेसगृहगेहनीभक्तिसुभतत्रअवतारभूभारहर्त्ता॥ भ
क्तसंकष्टअवलोकपितुवाक्यकृतगवनकियगहनवैदेहिभर्त्ता॥६॥ देवकैवल्यसा
धनअखिलभानुमर्कटविपुलज्ञानसुग्रीवकृतजलधिसेतु॥ प्रबलवैराग्यदारुन
प्रभंजनतनयविषयवनदहनमिवधूमकेतु॥७॥ देवदुष्टदनुजेसनिर्वंसकृतदा
सहितविश्वदुखहरनबोधैकरासी॥ अनुजनिजजानकीसहितहरिसर्वदादासतुल
सीहृदयकमलवासी॥८॥५२॥ देवदीनउद्धरनरघुवर्यकरुनाभवनसमनसंतापपा ३१
पौघहारी॥ विमलविज्ञानविग्रहअनुग्रहरूपभूपवरविबुधनर्मदखरारी॥ स्वसं

मारकांतारगंभीरघनगहनतर कर्मसंकुलमुरारी ॥ वासनावल्लिखर कंटकाकुलविपुल
निबिडविटपाटवी कठिनभारी ॥ १ ॥ देव विविध विधि चितवृत्तियगनिकर सेनोलूक काक बक
गृद्ध आमिष अग्र हारी ॥ अखिल खल निपुन छल छिद्र निरखत सदा जीवजनपथिक मन
खेदकारी ॥ २ ॥ देव क्रोध करिमत्तमृगराज कंदर्प मद दर्प वृक भालु अति उग्रकर्मा ॥ म
हिषमत्सर क्रूर लोभ सूकर व्यालफेरु छल दंभ मार्जार धर्मा ॥ ३ ॥ देव कपट मर्कट विकट व्या
घ्रपाखंड मुखदुखद मृगाव्रात उतपातकर्ता ॥ हृदय अवलोकि यह सोक सरनागतं पा
हि भो पाहि मां विश्वभर्ता ॥ ४ ॥ देव प्रबल अहंकार दुर्घट महीधर महामोह गिरिगुहा नि
बिडांधकारं ॥ चित्त बेताल मनुजाद मन प्रेत गन रोग भोगौघ वृश्चिक विकारं ॥ ५ ॥ देव विष

वि०प०
३२

य सुखसाल सादेस मसकादियलुषि ह्निर पादि सब समर्थ स्वामी॥ नत्र आछि प्रनतवविश्वसमा
यानाथ अंधमय मंद व्यालारिगामी॥६॥ देव घोर अवगाह भव आपगा पाप जलपूर दुःप्रेक्ष्य
दुस्तर अपारा॥ मकर षड्वर्ग गो नक्र चक्राकुलाकूल शुभ अशुभ दुख तीव्र धारा॥७॥ देव सक
ल संघट पोत सोचव सर्वदा दास तुलसी विषम गहन ग्रस्तं॥ त्राहि रघुवंश भूषन कृपाकर
कठिन काल विकराल कलित्रास ग्रस्तं॥ ५९॥ देव नौमि नारायनं नरं करुनायनं ध्यान
परायनं ज्ञान मूलं॥ अखिल संसार उपकार कारन सदय हृदय तपनिरत प्रनतानुकूलं॥
देव स्याम नव तामरस दाम दुति वपुष छवि कोटि मदनार्क अगनित प्रकासं॥ तरुन र
मनीय राजीव लोचन ललित वदन राकेस कर निकर हासं॥१॥ देव सकल सौंदर्य निधि वि ३२

पुलगुनधामविधिवेदबुधसंभुसेवितअमानं।अरुनपदकंजमकरंदमंदाकिनीमधुप
मुनिव्रंदकुर्वंतिपानं॥२॥देवसक्रप्रेरितघोरमदनमदभंगकृतक्रोधगतबोधरतब्रह्म
चारी॥मार्कंडेयमुनिवर्यहितकौतुकीबिनहिकल्पांतप्रभुप्रलयकारी॥३॥देवपुन्यव
नसैलसरिबदरिकाश्रमसदासीनपद्मासनंएकरूपं।सिद्धजोगींद्रवृंदारकानंदप्रदभ
द्रदायकदरसअतिअनूपं॥४॥देवमानमनभंगचितभंगमदक्रोधलोभादिपर्वतदुर्ग
भुवनभर्त्ता॥द्वेषमत्सररागप्रबलप्रत्यूहप्रतिभूरिनिर्दयक्रूरकर्मकर्त्ता॥५॥देवविक
टतरवक्रक्षुरधारप्रमदातीव्रदर्पकंदर्पखरखड्गधारा।धीरगंभीरमनपीरकारकतत्रकेव
राकावयंबिगतसारा॥६॥देवपरमदुर्घटपथंखलअसंगतसाथनाथनहिहाथबरबिर

वि०प० तियष्टी ॥ दासमनारतदासश्रमितमायापासत्राहिहिहरित्राहिहिहरिज्ञानिकष्टी ॥ ७ ॥ देवदास
३३ तुलसीदीनधर्मसंबलहीनश्रमितअतिषेदमतिमोहनासी ॥ देहिअवलंबनविलंब
अंभोजकरचक्रधरतेजबलसर्मरासी ॥ ८ ॥ ६० ॥ देवसकलसुषकंदआनंदवनपुन्यकृ
तबिंदुमाधवद्वंदविपतिहारी ॥ यस्यांघ्रिपाथोजअजसंभुसनकादिशुकसेषमुनिवृंद
अलिनिलयकारी ॥ देवअमलमरकतस्यामकामसतकोटिछविपीतपटतडित
इवजलदनीलं ॥ अरुनसतपत्रलोचनविलोकनिचारुप्रनतजनसुषदकरुनाशिसी
लं ॥ १ ॥ देवकालगजराजमृगराजदनुजेसवनदहनपावकमोहनिसिदिनेसं ॥ चारुभुज ३३
न चक्रकौमोदकीजलजदरसरसिजोपरिजथाराजहंसं ॥ २ ॥ देवमुकुटकुंडलतिलकअ

लक अलिवृात इवभृकुटि द्विज अधर कर चारु नासा ॥२॥ चिर मुकुर कपोल दर ग्रीवँ मयूख श्री
वहरि इंदु कर कुंद मिकमधुरहासं ॥३॥ देव उर सिवनमाल सुविसाल नवमंजरी भ्राजश्री
वत्सलांछन मुदारं ॥ परम ब्रह्मन्य अति धन्य गत मन्यु अज अमित वल विपुल महिमा अ
पारं ॥४॥ देव हार केयूर कर कनक कंकन रतन जटित मनि मेषला कटि प्रदेसं ॥ जुगलपद
नूपुरा मुषर कलहंस रव सुभग सर्वांग सौंदर्य वेसं ॥५॥ देव सकल सौभाग्य संजुक्त त्रैलोक्य श्री
दक्ष दिसि रुचिर वारीस कन्या ॥ वसत विबुधापगा निकट तट सदन वर नयन निरषंति नर
नैति धन्या ॥६॥ देव अखिल मंगल भवन निविड संसय समन दमन वृजिनाटवी कष्ट
हर्त्ता ॥ विस्वंभूत विस्वहित अजित गोतीत सिव विस्व पालन हरन विस्व कर्त्ता ॥७॥ देव त्वा

वि०प०
३५

नविज्ञानवैराग्यऐश्वर्यनिधिसिद्धिअनिमादिदैभूरिदानं ॥ ग्रसतभवव्यालअतित्रासतुल
सीदासत्राहित्राहिश्रीरमनउरगारिजानं ॥ ६१ ॥ रागआसावरी ॥ इहैपरमफलपरमबडाई ॥ नष
सिषरुचिरबिंदुमाधवछबिनिरषहुनयनअघाई ॥ टेक ॥ बिसदकिसोरपीनसुंदरव
पुस्यामसुरुचिअधिकाई ॥ नीलकंजवारिदतमालमनिइनतनतेदुतिपाई ॥ १ ॥ मृदुल
चरनसुभचिन्हपदजनयअतिअभूतउपमाई ॥ अरुननीलपाथोजप्रसवजनुमनिजु
नदलसमुदाई ॥ २ ॥ जातरूपमनिजडितमनोहरनूपुरजनसुषदाई ॥ जनुहरउरहरिविं
बिधिरूपधरिरहेवरभवनवडाई ॥ ३ ॥ कटितटरटतिचारुकिंकिनिरवअनुपमवरनिनजाई ३५
हेमजलजकलकेलिनमध्यजनुमधुकरमुषरसोहाई ॥ ४ ॥ उरविसालभृगुचरनचारु

अतिसुचनकोमलताई॥कंकनहारविविधिभूषनविरचिरचेनिजकरमनुलाई॥५॥ग
जमनिमालवीचभ्राजनकहिजातनपदिकनिकाई॥जनुउडगनमंडलवारिदपरन
वग्रहरचीअथाई॥६॥भुजगभोगभुजदंडकंजदरचक्रगदावनिआई॥सोभासींव
ग्रीवचिवुकाधरवदनअमितछविछाई॥७॥कुलिसकुंदकुडमलदामिनिदुतिदस
ननदेखिलजाई॥नासानयनकलोपललितश्रुतिकुंडलभ्रूमोहिभाई॥८॥कुंचि
तकचसिरमुकुटभालपरतिलककहौंसमुझाई॥अलपतडितजुगरेषइंदुमहुरहि
तजिचंचलताई॥९॥निर्मलपीतदुकूलअनुपमउपमाहियनसमाई॥बहुमनिजु
तगिरिनीलसिषरपरकनककवसनरुचिराई॥१०॥दक्षभागअनुरागसहितइंदिराअ

वि०प०
३५

घिकललिनाई॥ हेमलताजनुतरुतमालढिगनीलनिचोलुवोढाई॥११॥ मतमारके
मेचकदुतिमिलिकहिसोभाकहिनसिराई॥ तुलसिदासमतिमंदद्वंदरतकैहैकौनवि
घिगाई॥१२॥६१ मनहुतनोइ हैयातनकोपरमफल॥ सवअंगसुभगविंदुमा
धवछवितजिसुभाउअवलोकुएकपल तरुनअरुनअंभोजचरनमृदुनख
दुतिहृदयतिमिरहारी॥ कुलिसकेतुजवजलजरेखवरअंकुसमगजमनवसकारी॥१॥
जटितकनकमनिनूपुरमेखलकटितटरटतिमधुरवानी॥ त्रिवलिउदरगंभीरनाभि
सरजहँउपजेविरंचिज्ञानी॥२॥ उरवनमालपदिकअतिसोभितविप्रचरनचितकहँ ३५
करषै॥ स्यामतामरसदामवरनवपुपीतवसनसोभावरषै॥३॥ करकंकनकेयूरम

नोहरदेतिमोदमुद्रिकन्यारी॥गदाकंजदरचारुचक्रधरनागसुंडसमभुजचारी॥४
कंबुग्रीवछबिसीवँचिबुकद्विजअधरअरुनउन्नतनासा॥नवराजीवनयनससि
आननसेवकसुखदबिसदहासा॥५॥रुचिरकपोलश्रवनकुंडलसिरमुकुटसुतिल
कभालभ्राजै॥ललितभृकुटिसुंदरचितवनिकचनिरखिमधुपअवलीलाजै॥६॥रू
पसीलगुनखानिदच्छदिसिसिंधुसुतारतपदसेवा॥जाकीकृपाकटाच्छचहतसिवबि
धिमुनिमनुजदनुजदेवा॥७॥तुलसिदासभवत्रासमिटैतबजबमनऐहिसरूपअट
कै॥नाहिंतौदीनमलीनहीनसुखकोटिजनमभ्रमिभ्रमिभटकै॥८॥६२॥ रागबसंत॥
बंदौरघुपतिकरुनानिधान॥जातेछूटहिभवभेदज्ञान टेक॥१॥ रघुबंसकुमुदसु

वि०प० षपदनिमेष॥ सेवितपदपंकज अजमम हेस॥ निज हृदयपाथोजभंसा॥ लावन्यवपु भ०

३६ षअगिनितअनंग॥१॥ अतिप्रवलमोह तममार्तंड॥ अज्ञानगहनपावकप्रचंड

अभिमानसिंधुकुंभज उदार॥ सुररंजनभंजनभूमिभार॥ भारागादिसर्पगनपन्नगा

रि॥ कंदर्प्पनागमृगपतिमुरारि॥ भवजलधिपोतचरनारविंद॥ जानकीरमनआनं

दकंद॥ ३॥ हनुमंतप्रेमवापीमराल॥ निःकामकामधुकगोदयाल॥ त्रयलोकतिल

कगुनगहनराम॥ कहतुलसिदासविश्रामधाम॥ ४॥ ६७॥ राम रामरमुरा

मरामजपुरामरामरटुजीहा॥ राम नामनवनेहमेहकोमनहठिहोहिपपीहा॥ ३६

न सवसाधनफलकूपसरितसरसागरसलिलनिरासा॥ राम नामरतिस्वातिसुधा

शुभसीकरप्रेमपियासा॥४॥मारजितरजिपायात्परमपविप्रीतिपरसिजियजानी॥
अधिकअधिकअनुरागउमगउरपरपरमितिपहिचानी॥३॥रामनामगतिरामना
ममतिरामनामअनुरागी॥ह्वैगएहैंजेहोहिंगेतेत्रिभुवनतिन्हगानियतवडभागी
एकअंगमगअगमगवनकरविलंवनछिनछिनछाहैं॥तुलसीहितअपनोअप
नीदिसिनिरुपधिनेमनिवाहैं॥५॥६८॥रामजपुरामजपुरामजपुवावरे॥घोरभवनी
६ रनिधिनामनिजनावरे एकहिसाधनसवरिधिसिधिसाधिरे॥ग्रसेकलिरोग
जोगसंजमसमाधिरे॥१॥भलोजोहैपोचजोहैदाहिनोजोवामरे॥रामनामहीसों
अंतसवहीकोकामरे॥२॥जगनभवाटिकारहीहैफलिफूलिरे॥धुवांकेसेधौरहरदे

वि॰प॰
३७

षितंनभूलेरे॥३॥रामनामछोडिजोभरोसोकरैऔररे॥तुलसीपरोसोत्यागिमांगेकूरको
रे॥४॥६४॥रामनामजपुजीउमदामानुरागेरे॥कलिनविरागजोगजागतपत्यागरे॥
रामनामसुमिरनसबविधिकोराजुरे॥रामकोविसारिबोनिषेधसिरताजुरे॥५॥रा
मनामसहामनिफनिजगजालरे॥मनिविनिफनिजियेव्याकुलवेहालरे॥१॥रामनामका
मतरुदेतफलचारिरे॥कहतपुरानवेदपंडितपुरारिरे॥३॥रामनामप्रेमपरमारथकोसा
रे॥रामनामतुलसीकोजीवनअधाररे॥४॥६६॥रामरामरामजीउजोलौंतूंनजपिहै॥तौ
लौंतूंकहींजाइतिहूँतापनपिहै॥ सुरसरितीरविनुनीरदुखपाइहै॥सुरतरुतरैंतो
हिदारिदसताइहै॥१॥जागतबागतसपनेनसुखसोइहै॥जनमजनमजुगजुगजगरोउ ३७

है॥३॥ छूटिवेकी जतन न बिसेष बाघो जाउगो॥ है है बिष भोजन सुधा सो सानि षाउगो॥३॥
तुलसी तिलोक तिहूं काल तोसे दीनको॥ रामनाम ही की गति जैसे जल मीनको॥४॥६७॥
सुमिरि सनेह सोतें नाम रामराय को॥ संबर निसंबर को सषा असहाय को॥ [illegible] भागहै
अभागे ही को गुन गुनहीन को॥ गांहक गरीब को दयाल दानी दीन को॥१॥ कुल अकुली
न को सुन्यो है बेद साषि है॥ पांगुरे के हाथ पाय आंधरे को आंषि है॥२॥ मांय बाप भूषे को
अधार निराधार को॥ सेतु भवसागर को हेतु सुषसार को॥३॥ पतितपावन राम नाम सो न दू
सरो॥ सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सो ऊसरो॥४॥६८॥ भलो भली भांति है जो मेरे कहे लागि
है॥ मन राम नाम सों सुभाय अनुरागिहै॥ [illegible] रामनाम को प्रभाउ जानि जूडी आगि है

वि०प०
३८

सहितसहायकलिकालभीरुभागिहै॥२॥रामरामनामसोविरागजोगजागिहै॥बाम
विधिभालहूनकरमदागदागिहै॥३॥रामनाममोदकसुधासनेहपागिहै॥पाइपरितो
षतूंनद्वारद्वारवागिहै॥४॥कामरामनामतेरोजोईजोईमागिहै॥तुलसिदासस्वारथ
परमारथनखांगिहै॥५॥६९॥ऐसेहूसाहिबकीसेवासोंहोतचोर॥आपनीनवूझेनके
हकोराडरोरहे॥ मुनिमनअगमसुगममाइबापसों॥कृपासिंधुसहजसखासनेहे
हेआपुसों॥१॥लोकवेदविदितबडोनरघुनाथसों॥सबदिनसवदेससबहिकेसाथसों
॥२॥स्वामीसर्वज्ञसोंचलेचोरीचारकी॥प्रीतिपहिचानियहरीतिदरबारकी॥३॥काय ३८
नकलेसलेसलेतमानिमनकी॥सुमिरिसकुचिरुचिजोगवतजनकी॥४॥रीझिवसहोत

दीकै देत निज धामरे॥ फलत सकल सुषकंद अम्रत नामरे॥५॥ बेचे षोटे दाम न मि
लै न राषे कामरे॥ सो ३ तुलसी निवाज्यो ऐसो राजा रामरे॥६॥ ७०॥ मेरो भलो कियो
राम आपनी भलाई॥ हौं तो साँई द्रोही पै सेवक हित साँई॥ [illegible] राम सो बड़ो है कौ
न मोसौ कौन छोटो॥ राम सो षरो है कौन मोसो षोटो॥१॥ लोग कहैं राम को गुला
म हौं कहावौं॥ एतो बडो अपराध मन भौ न पावौं॥२॥ पाथ माथे चढ़े तृन तुलसी
जो नीचो॥ बोरत न बारि ताहि जानि आपु सींचो॥३॥ ७१॥ जागु जागु जागु जीव जोह
जग जामिनी॥ देह गेह नेह जानि जैसे घन दामिनी॥ सोवत सपने हीसै है सं
सृत संताप रे॥ बूडो म्रगबारि षायो जेंवरी के सांप रे॥१॥ कहै बेद बुध तू तो बूझि मन

वि०प०
३९

माहिरे ॥ दोषदुषसपनेकेजागेहीपैजाहिरे ॥७॥ तुलसीजागेतेजायतिहूँतापतायरे
रामनामसुचिरुचिसहजसुभायरे ॥३॥७३॥ जानकीसकीकृपाजगावति
सुजानजीवजागित्यागिमूढ़तानुरागश्रीहरे ॥ करिविचारतजिविकारभजिउदा
रामचंद्रभद्रसिंधुदीनबंधुवेदवदतरे मोहमयकुहूनिसाविसालकालवि
पुलसोयोखोयोसोअनूपरूपसुपनजूपरे ॥ अवप्रभातप्रगटज्ञानभानुकेप्रकास
वासनासरागमोहद्वेषनिविडतमटरे ॥१॥ भागेमदमानचोरभोरजानिजातुधान
कामक्रोधलोभछोभनिकरअपडरे ॥ देषतरघुवरप्रतापवीतेसंतापपापतापत्रिवि ३९
धिप्रेमआपदूरिहीकरे ॥२॥ श्रवनसुनिगिरागंभीरजागेअतिधीरवीरवरविरागतोष

सकलसंतन्हआदे॥तुलसिदासप्रभुकृपालनिरषिजीवजनविहालभंज्योभवजालप
रममंगलाचरे॥३॥७३॥ [illegible] षोटोषरोरावरोहौंरावरीसौंझूठकैंयोंकहौंगोजानो
सबहीकेमनकी॥करमवचनहिएकहौंनकपटकिएऐसेहठजैसेगांठिपानीपरेसन
की [illegible] दूसरोभरोसोनहिवासनाउपासनाकीवासववि रंचिसुनरमुनिगनकी
स्वारथकेसाथीमेरेहाथीस्वानलेवादेईकाहूतोनपीररघुवीरदीनजनकी॥१॥सांपस
भासावरलवारभएदेवदिव्यदुसहसासतिकीजेआगेहीयातनकी॥सांचेपरेपावौपा
नपांचमेंपनप्रवानतुलसीचातकआसरामस्यामघनकी॥१॥७४॥रामकोगुलामना
मरामवोलारामराष्योकामइहैनामद्वैहौंकवहूंकहतहौं॥रोटीलूगानीकेराषै

वि० प० आगे हैकौवेद भाषै भलौहै है तो ताते आनंद दल हतु है। [illegible] वांध्यौ है कसम
४० डगरभगू ह निगडसुनतदुसह है तो सांसतिसहतु है॥ आरत अनाथ नाथ कोसल
पाल हूपालली न्हो छीनि दीनेदयौ दुरितदहतु है॥४॥ वूझो जौ ही कहौ मै ह्वे
री है हौं रावरो ज्यू मेरको अकह न हौ चरनग हतु है॥ मीजोगुरपीठिअपनोइगहि
वां हवो लिसेवक सुषद सदा विरदव हतु है॥५॥ लोग कहै पोच सो न सोचु न संकोचु मे
रे व्याहनवरेषी जाति पाति न चहतु है॥ तुलसी अकाज काज राम ही के रीझे षीझे प्रीति
की प्रतीति मन मुदितरहतु है॥६॥ ७५॥ जानकी के जीवन जगजीवन जगतहित जगदीस
दीस रघुनाथ राजीवलोचन राम॥ सरद विधुवदन सुषसील श्रीसदन सहज सुंदर तन ४०

नमोभाग्यगिनिनकाम॥टेक॥ जगप्रभुपिताप्रभुमातुप्रभुगुरुप्रभुहितमीतसबकोंदाहिनो
दीनबंधुकाहूकोंनबाम॥ आरतिहरनेसरनेदअतुलितदानिप्रनतपालकृपालप
तितपावननाम॥१॥सकलविश्ववंदितसकलसुरसेवितआगमनिगमकहेरावरे
ईगुनग्राम॥२॥ इहैजानिकैतौतुलसीतिहारोजनभयोन्यारोकैगनिबोजहांगनेगरी
बगुलाम॥३॥७६॥ ॥रागटोडी॥ ॥देवदीनकोदयालदानिदूसरोनको॥ जासोदीनता
कहौंसैदेखौंदीनसो॥ ॥टेक॥ देवसुरनरमुनिअसुरनागमहिदेवतोसनेर॥ तौलौं
जौलौंरावरेननेकनयनफेरे॥१॥ देवत्रिभुवनतिहूंकालविदितवदतवेदचारी॥ आ
दिअंतमध्यरामसाहिबीतिहारी॥२॥ देवतुमहिमांगिमांगनोनमांगनोकहायो॥

वि०प०
४१

मुनिसुभावसीलसुजसजाचनजनआयो॥३॥देवपाहनकपिपसुविहंगअपनेकरि
लीन्हे॥महाराजदसरथकेतैंरंकराउकीन्हे॥४॥देवतूगरीबकोनेवाजहौंगरीबतेरो
बारककेहियेकृपालतुलसिदासमेरो॥५॥७७॥देवतूदयालदीनहौंतूदानिहौंभि
षारी॥हौंप्रसिद्धपातकीतूपापपुंजहारी॥१॥देवनाथतूअनाथकोअनाथकोनमो
सो॥मोसमानआरतनहिआरतहरतोसो॥२॥देवब्रह्मतूहौंजीवतूठाकुरहौंचेरो॥ता
तमातुगुरसषातुसबविधिहितमेरो॥३॥देवतोहिमोहिनातेअनेकमानियेजोभावै
ज्योंत्योंतुलसीकृपालचरनसरनपावै॥४॥७८॥देवऔरकाहिमागियेजोमागिबोनि ४१
वारै॥अभिमतदाताकौनदुषदरिद्रदारै॥१॥देवधरमधामरामकामकोटिरूप

र रो॥ साहेब सम बिधि सुजान दानि नय गुन रो॥१॥ देव सुभमय रहिनै हैं निसान सब केहू
र बाजे॥ कुसमय दसरथ के दानि तैं गरीब नेवाजे॥२॥ देव सेवा बिनु गुन बिहीन दीनता
सुनाए॥ जे जे तैं निहाल किए ते फूले फिरत पाए॥३॥ देव तुलसिदास जाचक रुचि जा
नि दान दीजे॥ रामचंद्र चंद तूं चकोर मोहि कीजे॥४॥ ७८॥ दीनबंधु सुषसिंधु कृपाकर
कारुनीक रघुराई॥ सुनहु नाथ मन जरत त्रिबिधि जर करत फिरत बौराई॥ कब
हुं जोगरत भोग निरत सठ हठि बियोग बस होई॥ कबहुं मोह बस द्रोह करत बहु कबहुं
दया अति सोई॥१॥ कबहुं दीन मतिहीन रंकतर कबहुं भूप अभिमानी॥ कबहुं मूढ़
पंडित बिडंबरत कबहुं धर्मरत ज्ञानी॥२॥ कबहुं देखि जग धनमय रिपुमय कबहुं ना

वि०प०

८२

रिमयभासै॥संस्रतसंन्निपातदारुनदुखबिनुहरिकृपाननासै॥३॥संजमजपतपनेम
धर्मव्रतबहुभेषजसमुदाई॥तुलसीदासभवरोगरामपदप्रेमहीननहिंजाई॥४॥८०
मोहजनितमललागविविधविधिकोटिहुजतननजाई॥जन्मजन्मअभ्यासनि
रतचितअधिकअधिकलपटाई॥ नयनमलिनपरनारिनिरषिमनमलिन
विषयसंगलागे॥हृदयमलिनवासनामानमदजीवसहजसुषत्यागे॥२॥परनिंदा
सुनिश्रवनमलिनभएवचनदोषपरगाये॥सबप्रकारमलभारलागनिजनाथच
रनविसराये॥३॥तुलसिदासव्रतदानज्ञानतपसुद्धिहेतुश्रुतिगावै॥रामचंद्रअनु ८२
रागनीरविनुअतिमलनासनपावै॥४॥८१॥ कछुहैनआईगयोज

नमजाय॥स्रुतिदुर्लभनरपायकपटतजिभजेनरामबचनमनकाय॥टेक॥लरि
काईबीतीअचेतचितचंचलताचौगुनेचाय॥जोबनजुरजुबतीकुपथ्यकरिभयोत्रिदो
षभरेमदनबाय॥१॥मध्यबयसधनहेतुगँवाईकृषीबनिजनानाउपाय॥रामबिमुखसु
खलह्योनसपनेहुनिसिबासरतयोतिहूँताय॥२॥सेयेनहिंसीतापतिसेवकसाधुसुमतिभ
लेभगतिभाय॥सुनेनपुलकितनकहेनमुदितमनकियेजेचरितरघुबंसराय॥३॥अबसो
चतमनिबिनुभुअंगज्योंबिकलअंगदलेजराधाय॥सिरधुनिधुनिपछितातमीजिकर
कोउनमीतहितदुसहदाय॥४॥जिन्हलगिनिजपरलोकबिगार्योतेलजातहोतठा
ठेठाय॥तुलसीसुमिरिअजहुँरघुनाथहितर्योगयंदजाकेएकनाय॥५॥८२॥तोनृप

वि०प० ४३ छिटै है मननभी जिहाथ॥ भयो है सुगम तो कौं अमर अगम तनु समुझि धौं कत खोवत अका
थ सुखसाधन हरि विमुख व्रथा जैसे स्रम फल घ्रत हित मथे पाथ॥ यह विचारि
तजि कुपथ कुसंग निचलि सुपंथ मिलु भले साथ॥२॥ देखु राम सेवक सुनि कीरति रटहि
नाम करि गान गाथ॥ हृदय आनु धनु वान पानि प्रभु लसे मुनिपट कटि कसे भाथ॥३॥
तुलसिदास परिहरि प्रपंच सब नाउ रामपद कमल माथ॥ जनि डरपहि तो से अनेक ख
ल अपनाये जानकीनाथ॥४॥८४॥ मन माधो को नेकु निहारहि॥ सुनु सठ
सदा रंक के धन ज्यौं छिन छिन प्रभुहिं संभारहि॥ सोभा सील ज्ञान गुन मंदिर ४३
सुंदर परम उदारहि॥ रंजन संत अखिल अघ गंजन भंजन विषय विकारहि॥१॥ जो बिनु

जोग जग्य व्रत संजम गयो चहै भव पारहि ॥ तौ जनि तुलसिदास निसिवासर हरिपदकम-
ल विसारहि ॥ ४ ॥ ८४ ॥ इहै कहौ सुनु वेद चहूं ॥ श्री रघुवीर चरन चिंतन तजि नाहिन ठौर
कहूं ॥ [illegible] ॥ जाके चरन विरंचि सेइ सिधि पाई संकर हूं ॥ सुक सनकादि मुक्त विचरत ते उ
भजन करत अजहूं ॥ १ ॥ जद्यपि परम चपल श्रिय संतत थिर न रहति कतहूं ॥ हरिपद पंक
ज पाइ अचल भई करम वचन मनहूं ॥ २ ॥ करुनासिंधु भगत चिंतामनि सोभा सेवतहूं ॥ औ
र सकल सुर असुर ईस सब खाए उरग छहूं ॥ ३ ॥ सुरुचि कह्यो सोई सत्य तात अति परुष
वचन जवहूं ॥ तुलसिदास रघुनाथ विमुख नहि मिटै विपति कवहूं ॥ ४ ॥ ८५ ॥ सुनु मन मूढ
सिखावन मेरो ॥ हरिपद विमुख काहू न लह्यो सुख सठ यह समुझि सवेरो ॥ विछुरे ससि रवि म-

वि०प० नैनैननितेपावनदुखकृतेरो॥ भ्रमित न आमित निसिदिवस गगन मँहँ तहँ रिपु राहु बडेरो

४४ १॥ जद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँपुर सुजस घनेरो॥ तजे चरन अजहूँ न मिटत नित वहि

वो नाहू केरो॥ २॥ मिटै न विपति भजे विनु रघुपति श्रुति संदेह निवेरो॥ तुलसिदास सव आस

छाडि करि होहि राम को चेरो॥ ३॥ ८६॥ कबहु नौ मन विश्राम न मान्यो॥ निसिदिन भ्रमत

विसारि सहज सुख जहँ तहँ इंद्रिन तान्यो॥ टेक॥ जदपि विषय संग सह्यो दुसह दुख

विषम जाल अरुझान्यो॥ तदपि न तजत मूढ ममता वस जानत हूँ नहि जान्यो॥ १॥ जन्म

अनेक किए नाना विधि करम कीच चित सान्यो॥ होइ न विमल विवेक नीर विनु वेद पुरा

न वखान्यो॥ २॥ निज हित नाथ पिता गुरु हरि सो हरषि हृदय नहि आन्यो॥ तुलसिदा ४४

सकबन्निया जाइ सरयन। नहि जनम सिरान्यौ॥ ३॥ ८७॥ मेरो मन हरि जू हठ न तजै॥ निसि
दिन नाथ देउँ सिख बहु बिधि करत सुभाउ निजै टीका: ज्यौं जुवती अनुभवति प्रसव अ
ति दारुन दुख उपजै॥ ह्वै अनुकूल बिसारि सूल सठ पुनि खल पतिहि भजै॥ १॥ लोलुप भ्रम
गृहपसु ज्यौं जहँ तहँ सिर पदत्रान बजै॥ तदपि अधम बिचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ ल
जै॥ २॥ हौं हार्यौ करि जतन बिबिध बिधि अतिसय प्रबल अजै॥ तुलसिदास बस होइ तब
हिं जब प्रेरक प्रभु बरजै॥ ३॥ ८८॥ ऐसी मूढ़ता या मन की॥ परिहरि राम भगति सुरसरिता
आस करत ओस कन की टीका धूम समूह निरखि चातक ज्यौं तृषित जानि मति घन की
नहिं तहँ सीतलता न बारि पुनि हानि होत लोचन की॥ १॥ ज्यौं गच काँच बिलोकि सेन जड़ छाँ की

वि॰प॰ ४५ हू आपने तनकी ॥२॥ टूटत अति आतुर अहार बस छुति बिसारि आननकी ॥३॥ कहँ लौं क
हौं कुचालि कृपानिधि जानत हौ गति जनकी ॥ तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख करहु ला
ज निज पनकी ॥५॥ ९० ॥ नाचत ही निसि दिवस मर्यौ ॥ तब ही तें न भयो हरि थिर जब तें जि
व नाम धर्यौ ॥ बहु बासना बिबिध कंचुकि भूषन लोभादि भर्यौ ॥ चर अरु अचर गा
गन जल थल में कौन स्वांग न कर्यौ ॥१॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज नहि जांचत कोउ उ
बर्यौ ॥ मेरो दुसह दरिद्र दोष दुख काहू तौ न हर्यौ ॥२॥ थके नयन पद पानि सुमति बल
संग सकल बिछुर्यौ ॥ अब रघुनाथ सरन आयो जन भव भय बिकल डर्यौ ॥३॥ जेहि गुन ४५
तें बस होहु रीझि करि सो मोहि सब बिसर्यौ ॥ तुलसिदास निज भवन द्वार प्रभु दीजे रहन प॰

हौ॥६॥९०॥माधौजूमोसममंदनकोउ॥जघपिमीनपतंगहीनमतिमोहिनपूजैवोऊ
रुचिररूपअहारवस्यउन्हपावकलोहनजान्यौं॥देषतविपतिविषयनतज
तहौंतातेअधिकसयानौं॥१॥महामोहसरिताअपारमहँसंततफिरतवह्यो॥श्रीहरि
चरनकमलनौकातजिफिरिफिरिफेनुगह्यो॥२॥अस्थिपुरानोछुधितस्वानज्यौंअतिभ
रिमुषपकरै॥निजतालुकगतिरुधिरपानकरिमनसंतोषधरै॥३॥परमकठिनभवव्याल
ग्रसितहौंत्रसितभयोअतिभारी॥चाहतअभयभेकसरनागतषगपतिनाथविसारी॥४
जलचरवृंदजालअंतरगतसिमिटिहोतएकपास॥एकहिएकषातलालचवसनहिंदेष
तनिजनास॥५॥मेरेअघसारदअनेकजुगगनतनपारहिपावै॥तुलसीदासपतितपाव

वि०प०
४६

न प्रभु यह भरोस जिय आवै ॥६॥८०॥ कृपा सो धौं कहाँ विसारी राम ॥ जेहि करुना सुनि
श्रवन दीन दुष धावत हौ तजि धाम ॥ [illegible] नागराज निज वल विचारि हिय हारि चरन चि
त दीन्हो ॥ आरत गिरा सुनत षगपति तजि चलत विलंव न कीन्हो ॥१॥ दितिसुत त्रास त्रसि
त निसिदिन प्रहलाद प्रतिज्ञा राषी ॥ अतुलित वल मृगराज मनुज तनु दनुज हत्यो श्रु
ति साषी ॥२॥ भूपसदसि सब नृप वल विलोकि प्रभु राषु कह्यो नरनारि ॥ वसन पूरि अरि दरप दू
रि करि भूरि कृपा दनुजारि ॥३॥ एक एक रिपु तें त्रासित जन तुम्ह राषे रघुवीर ॥ अव मोहि देत दु
सह दुष वहु रिपु कस न हरहु भवभीर ॥४॥ लोभ ग्राह दनुजेस क्रोध कुरुराज वंधु षल मा
र ॥ तुलसिदास प्रभु यह दारुन दुष भंजहु राम उदार ॥५॥८१॥ काहे ते हरि मोहि विसा

पु
४६

रो॥ जानतनिजमहिमामेरेअघतदपिननाथसँभारो॥ पतितपुनीतदीनहितअसर
सरन नकहतश्रुतिचारो॥ हौंनहिअधमसभीतदीनकिधौंवेदनमृषापुकारो॥१॥ खगगनिका
गजव्याधपतितजहँतहँहौंहूँवैठारो॥ अवकेहिलाजकृपानिधानपरसतपनवारोफा
रो॥२॥ जौंकलिकालप्रवलअतिहोतोतुवनिदेसतेन्यारो॥ तौहरिरोसभरोसदोसगुनते
हिभजतेतजिगारो॥३॥ मसकविरंचिविरंचिमसकसमकरहुप्रभाउतुम्हारो॥ यहसाम
र्थ्यअछतमोहित्यागहुनाथतहाँकछुचारो॥४॥ नाहिननरकपरतमोकहँडरजद्यपिहौं
अतिहारो॥ यहवडित्रासदासतुलसीप्रभुनामहुपापनजारो॥५॥९४॥ नउनमेरेअघअव
गुनगनिहैं॥ जौंजमराजकाजसवपरिहरिइहैख्यालउरअनिहैं चलिहैंछूटि

पुंजपापिनकेअसमंजसजियजनिहैं॥देषिषलअधिकारप्रभुसोंमेरीभूरिभलाईभ
निहैं॥१॥हंसिकरिहैंपरतीतिभगतकीभगतसिरोमनिमनिहैं॥ज्योंत्योंतुलसिदासको
सलपतिअपनायहिपरिबनिहैं॥१॥९५॥जौपैजिअधरिहौअवगुनजनके॥तौक्योंकटत
सुकृतनखतेंमोपैविपुलवृंदअघवनके॥टेक॥कहिहैकौनकलुषमेरेकृतकरमवचनअ
रुमनके॥हारहिंअमितसेषसारदश्रुतिगनतएकएकछनके॥१॥जौचितचढैनाममहि
मानिजगुनगनपावनपनके॥तौतुलसिहितारिहौविप्रज्यौंदसनतोरिजमगनके॥२॥
९६॥जौपैहरिजनकेऔगुनगहते॥तौसुरपतिकुरुराजबालिसौंकतहठिवैरविसहते॥ ८७
टेक॥जौजपजागजोगव्रतवरजितकेवलप्रेमनचहते॥तौकतसुरमुनिवरविहाइव्रज

गोपगोहवसिरहते ॥१॥ जौंजहंतहंपनराखिभगतकोभजनप्रभाउनकहते ॥ तौकलिक
ठिनकरममारगजडहमकेहिभांतिनिवहते ॥२॥ जोमुनहितलिएनामअजामिलकेअघ
अमितनदहते ॥ तौजममभटसोंसतिहहमसेव्यअभयोजियोजिनहते ॥३॥ जौजगविदि
तपतितपावनअसबांकुरविरदनवहते ॥ तौबहुकलपकुटिलतुलसीसेसपनेहुंसुगतिनल
हते ॥४॥ ९८ ॥ ऐसीहरिकरतदासपरप्रीति ॥ निजप्रभुताविसारिजनकेवसहोतसदायहरी
ति ॥ ॥ जेहिवांधेसुरअसुरनागनरप्रवलकरमकीडोरी ॥ सोइअविछिन्नब्रह्मजसुम
तिवांध्यैहठिसकतनछोरी ॥१॥ जाकीमायावसविरंचिशिवनाचतनपारनपायो ॥ करतल
तालवजाइग्वालजुवतिनसोइनाचनचायो ॥२॥ विस्वंभरश्रीपतित्रिभुवनपतिवेदवि

वि०प० दिनयहलीय॥ वलिसों कछु न चली प्रभु ना वरै है द्विज मागी भीष॥३॥ जाको नाम लिये
४८ छूटत भव जनम मरन दुख भार॥ अंवरीष हित लागि कृपानिधि सोइ जनम्यो दश वार॥४॥
जोग विराग ध्यान जप तप करि जेहि खोजत मुनि ज्ञानी॥ वानर भालु चपल पशु पावर नाथ त
हां रति मानी॥५॥ लोकपाल जम काल पवन रवि ससि सव आज्ञाकारी॥ तुलसिदास प्रभु उ
ग्रसेनि के द्वार वेत कर धारी॥६॥ ९८ ७॥ विरद गरीव नेवाज राम को॥ गावत वेद पुरान संभु
२० सुक प्रगट प्रभाउ नाम को॥ ध्रुव प्रह्लाद विभीषन कपि जदुपति पंडव सुदाम को॥ लोक
सुजस परलोक सुगति इन्ह मे को है राम काम को॥१॥ गनिका कोल किरात आदि कवि इन्ह ४८
ते अधिक वाम को॥ वाजिमेध कव कियो अजामिल गज गायक कव साम को॥२॥ छली मली

नहीनमवहीअंगतुलसीसोछिनछामको॥नामनरेसप्रतापप्रवलजगजुगजुगचाल
तचामको॥३॥८८॥सुनतसीतापतिसीलसुभा३॥मोदनमनततनपुलकनयनजलसो
नरेषहहिया३॥ [illegible] सिसुपनतेपितुमातुवंधुगुरुसेवकसचिवसषा३॥कहतरा
मविधुवदनरिसोहेंसपनेहुलषेउनका३॥१॥षेलतसंगअनुजवालाकनितजोगवत
अनटअपा३॥जीतेहारिचुचुकारिदुलारतदेतदिवावतदा३॥२॥सिलापापसंताप
विगतभईपरसतपावनपा३॥दईसुगतिसोनहेरिहरसुहियचरनछुएकोपछिता३
३॥भवधनुभंजिनिदरिभूपतिभृगुनाथषाइगएता३॥छमिअ [illegible] परायछमायपायप
रिउतोनअनतसमा३॥४॥कहोंसजवनदियोनारिवसगारिगलानिगयेरा३॥ताकु

वि०प०
९८

मातुकौमनजोगावतज्यौंनिजतनमरमकुघाउ॥५॥कपिसेवावसभयेकनौडेकह्यौपव
नसुतआउ॥देवकोनकछूरिनियाँहौंधनिकतूंपत्रलिखाउ॥६॥अपनाएसुग्रीवविभि
भीषनतिनन्हनतज्यौछलछाउ॥भरतसभासनमानिसराहतहोतनहृदयअघाउ॥
७॥निजकरुनाकरतूतिभगतपरचपतचलतचरचाउ॥सकृतप्रनामप्रनतजसुवरन
तसुनतकहतफिरिगाउ॥८॥समुझिसमुझिगुनग्रामरामकेउरअनुरागबढाउ॥तुल
सिदासअनयासरामपदपाइहैप्रेमपसाउ॥९॥१००॥जाउंकहाँतजिचरनतुम्हारे
काकोनामपतितपावनजगकेहिअतिदीनपियारे [illegible] कौनदेवबराइविरद ९८
हितहठिहठिअधमउधारे॥खगमृगव्याधपषानविटपजडजवनकवनसुरतारे॥१॥

देवदनुजमुनिनागमनुजसबमायाविवसविचारे॥तिन्हकेहाथदासतुलसीप्रभुकहा
अपनपौहारे॥३॥१००॥हरितुम्हबहुतअनुग्रहकीन्हो॥साधनधामविवुधदुर्लभतनुमो
हिक्रपाकरिदीन्हो॥ कोटिहुमुषकहिजाउनप्रभुकेएकएकउपकार॥तदपि
नाथकछुऔरमागिहौंदीजैपरमउदार॥१॥विषयवारिमनमीनभिन्ननहिहोतकबहुँ
पलएक॥तेहितेंसहौंविपतिअतिदारुनजनमतजोनिअनेक॥२॥क्रपाडोरिवनसीप
दअंकुसपरमप्रेममृदुचारो॥एहिविधिवेधिहरहुमेरोदुषकौतुकरामतुम्हारो॥३॥हैंश्रु
तिविदितउपाइसकलसुरकेहिकेहिदीननिहोरै॥तुलसिदासयहजीवमोहरजुजिहिंबा
ध्योसोईछोरै॥४॥१०१॥इहैविनतीरघुवीरगोसाईं॥औरआसविस्वासभरोसोहरोजिय

वि०प०
५०

कीजइ ताई [stain] चहौं न सुगति सुमति संपति कछु रिधि सिधि विपुल वडाई॥ हेतु रहि
त अनुराग नाथ पद वढो अनुदिन अधिकाई॥१॥ कुटिल कर्म लै जाहि मोहि जाइ जहँ जहँ अप
नी वरिआई॥ तहँ तहँ जनि छिन छोह छाडिए कमठ अंड की नाई॥२॥ है जग मे जहँ लौ
या तन की प्रीति प्रतीति सगाई॥ ते सव तुलसिदास प्रभु ही सों होहिं समिटि एक ठाँई॥३॥१०३
जानकी जीवन की वलि जैहौं॥ चितु कहै सीय राम पद परिहरि अव न कहूँ चलि जैहौं॥
उपजी उर प्रतीति सपनेहुँ सुख प्रभु पद विमुख न पैहौं॥ मन समेत या तन के वासिन यहै
सिखावन देहौं॥१॥ श्रवननि और कथा नहि सुनिहौं रसना और न गैहौं॥ रोकिहौं नयन वि
लोकत औरहि सीस ईस ही नैहौं॥२॥ नातो नेह नाथ सों करि सव नाते नेह वहैहौं॥ है छू ५०

रुभारनाहितुलसीजगजाकोदासकहैहौं॥३॥१०३॥अवलौंनसानीअवननसैहौं॥रामकृ
पाभवनिसासिरानीजागेउफिरिनडसैहौं॥ पायोनामचारुचिंतामनिउरकरते
नषसैहौं॥स्यामरूपसुचिरुचिरकसौटीचितकंचनहिकसैहौं॥१॥परवसजानिहस्योइन
इंद्रिन्हनिजवसहै नहसैहौं॥मनमधुपहिपनकेतुलसीरघुपतिपदकमलवसैहौं॥४॥
१०४॥ महाराजरामादर्योधन्यसोई॥गरुअगुनरासिसर्वग्यसुकृतीसुषसी
२० लनिधिसाधुतेहिसमनकोई॥कीसकेवटउपलभालुनिसिचरसवरिगीधसमदमदया
दानहीने॥नामलियेराम।किएपरमपावनसकलनरतरततिन्हकेगुनगानकीने॥१॥
व्याधअपराधकीसाधराखीकौनपिंगलैकौनमतिभक्तिभेई॥कौनधौंसोमजाजीअजा।

वि०प०
५९

मिलअधमकौनगजराजऔवाजपेई ॥२॥ पंडुसुतगोपिकाविदुरकुवरीसवरिहिसोधुविस्तु
द्धजालेसुकैसो ॥ प्रेमलविहरूसकियेआपनेतिनुकोसुजससंसारहरिहरकोजैसो ॥३॥
कोलषलभिल्लजवनादिषसरामकहिनीचह्वैऊंचपदकोनपायो ॥ दीनदुषदवनश्री
रवनकरुनाभवनपतितपावनविरदवेदगायो ॥४॥ मंदमतिकुटिलषलतिलकतुलसी
सरिसभायोनतिहुंलोकतिहुंकालकाई ॥ नामकीकानिपहिचानिप्रनआपनोगनसत
कलिव्यालग्रास्योसरनआंई ॥५॥१०५॥ हैनीकोमेरोदेवताकोसलपतिराम ॥ सुभगसरो
जसुलोचनासुटिसुंदरस्याम [illegible] सियसमेतसोहैसदाछविअमितअनंग ॥ भुजवि
सालसरधनुधरकटिचारुनिषंग ॥१॥ बलिपूजाचाहैनहीचहैएकप्रीति ॥ सुमिरनहीमा ५९

नैभलोरहपावनरीति॥२॥देउसकलसुषदुषदहेआरतजनवंधु॥गुनगहिअघअव
गुनहरैअसोकरुनासिंधु॥३॥देसकालपूरनसदावदवेदपुरान॥सवकोप्रभुसवमेंवसै
सवकीगतिजान॥४॥कोकरिकोटिककामनापूजैवहुदेव॥तुलसिदासतेहिसेइयेजेहि
संकरसेव॥५॥१०६॥वीरमहाअवराधिएसाधेसिधिहोउ॥सकलकामपूरनकरैजानैसव
कोइ॥टका:॥वेगविलंवनकीजियेलीजेउपदेस॥वीजमंत्रजपियेसोईजोजपतमहेस॥
१॥प्रेमवारितरपनभलोघृतसहजसनेह॥संसयसमिधिअगिनिछमाममतावलिदेह
२॥अघउचाटमनवसकरैमारैमदमार॥आकरषैसुषसंपदासंतोषविचार॥३॥जेरहि
भांतिभजनकियेमिलेरघुपतिताहि॥तुलसिदासप्रभुपथचढ्योजोलेहुनिवाहि॥४॥१०७

वि०प०
५२

कसन करहु करुना हरे दुखसमन मुरारी॥ त्रिविधिताप संदेह सोक संसय भय हारी॥ टेक॥
एक कलिकाल जनित मल मति मंद मलीन मन॥ तेहि पर प्रभु नाहि कर संभार केहि भांति
जिवै जन॥१॥ सब प्रकार समरथ विभो मै सब विधि दीन॥ यह जिय जानि द्रवहु नहीं मै करम
विहीन॥२॥ भ्रमत अनेक जोनि रघुपति पति आन न मोरे॥ दुख सुख सहउँ रहउँ सदा स
रनागत तोरे॥३॥ तो हि सम देव न कोउ क्रपाल समुझ उ मन माहीं॥ तुलसिदास हरि तोषि
यै सो साधन नाहीं॥४॥१०८॥ कहु केहि कहिये क्रपानिधे भव जनित विपति अति॥ इंद्री
सकल विकल सदा निज निज सुभाउ रति॥ टेक॥ जे सुख संपति सरग नरक संतत संग
लागी॥ हरि परिहरि सोई जतन करत मन मोर अभागी॥१॥ मै अति दीन दयाल देव सु ५२

निमनअनुरागो॥ जवनद्रवहुरघुवीरधीरकाहेनदुषलागो॥२॥ जद्यपिमेंअपराधभ
वनदुषसमनमुरारे॥ तुलसिदासकहँआसयेहेवहुपतितउधारे॥३॥१०८॥ कैसोक
हिनजायकाकहियै॥ देषततवरचनाविचित्रहरिसमुझिमनहिमनरहियै॥
सूनभीतिपरचित्ररंगनहितनुविनुलिषाचितेरे॥ धोयेमिटइनमरइभीतिदुषपाइय
एहितनहेरे॥१॥ रविकरनीरवसैअतिदारुनमकररूपतेहिमाहीं॥ वदनहीननतेहिग्रसे
चराचरपानकरनजेजाहीं॥२॥ कोउकहसत्यझूठकहकोउजुगलप्रवलकरिमानै॥ तु
लसिदासपरिहरइतीनिभ्रमसोआपानपहिचानै॥३॥१०९॥ केसवकारनकवनगोसां
ई॥ जेहिअपराधअसाधजानिमोहितजेहुअग्यकीनांई॥ परमपुनीतसंतको

वि०प०
५३

मलचितनिन्हहितुम्हहिवनिम्राई॥नौकतविप्रव्याधगनिकहितारेकछुरहीसगाई
॥१॥कालकर्मगतिअगतिजीवकीसवहरिहाथतुम्हारे॥सोइकछुकरहुहरहुममता
मैफिरौंनतुमहिविसारे॥२॥जौतुमतजहुभजउनआनप्रभुयहप्रमानपनमोरे॥मन
क्रमवचननरकसुरपुरजहंतहंरघुनाथनिहोरे॥३॥जद्यपिनाथउचितनहोइअस
प्रभुसनकरियढिठाई॥तुलसिदाससीदतदेखततुम्हारिनिठुराई॥४॥११०॥माधव निसिदिन
अवनदुवकहेहिलेखै॥प्रनतपालप्रनतोरमोरपनजियउंकमलपददेखै ज
वलगिमैनदीनदयालतैंमैंनदासतैंस्वामी॥तवलगिजेदुखसहेउंकहेउंनहिजद्य
पिअंतरजामी॥१॥तैउदारमैंकृपनपतिततैंपुनीतश्रुतिगावै॥वहुतनातरघुना ५३

थमोहितोहिअवनतजेवनिआवै॥४॥जनकजननिगुरबंधुसुहृदपतिसवप्रकारहित
कारी॥द्वैतरूपतमकूपपरौंनहिसोकछुजतनविचारी॥३॥सुनुअदभ्रकरुनावारिजलो
चनमोचनभवभारी॥तुलसिदासप्रभुतवप्रकासविनुसंसयटरतनटारी॥४॥११४॥माध
वमोहिसमानजगमाहीं॥सवविधिहीनजोदीनमलिनमतिलीनविषयकोउनाहीं
तुमसमहेतुरहितदयालआरतहितईसनत्यागी॥मैंदुखसोकविकलकृपा
लकेहिकारनदयानलागी॥२॥नाहिनकछुअवगुनतुम्हारअपराधमोरमैंमाना॥
ज्ञानभवनतनुदियोनाथसोपायनमैंप्रभुजाना॥३॥वेनुकरीलश्रीखंडवसंतेहिदूष
नमृषालगावै॥साररहितहतभाग्यसुरभिपल्लवसोकहुकिमिपावै॥४॥सवप्रका

सु ११५

वि०प० रै मैं कठिन म्रदुल हरि द्दढ बिचार जिय मोरे॥ तुलसिदास प्रभु मोह स्रृंखला छुटिहि तु
५४ म्हारे छोरे॥ ६॥ ११३॥ माधव मोह फांस क्यों टूटै॥ बाहर कोटि उपाय करिय अभ्यंतर
ग्रंथि न छूटै॥ घृतपूरन कराह अंतरगत ससि प्रतिबिंब दिखावै॥ ईंधन अनल
लगाउ कल्प सत औटत नास न पावै॥ १॥ तरु कोटर महं बस बिहंग तरु काटे मरै न जैसे॥
साधन करिय बिचार हीन मन सुद्ध होइ नहिं तैसे॥ २॥ अंतर मलिन बिषय मन अति
तन पावन करिय पखारे॥ मरै न उरग अनेक जतन बलमीक बिबिधि बिधि मारे॥ ३॥ तु
लसिदास हरि गुरु करुना बिनु बिमल बिबेक न होई॥ बिनु बिबेक संसार घोर निधि पार न
पावै कोई॥ ५॥ ११४॥ माधव अस तुम्हारि यह माया॥ करि बिचार पचि मरिय तरिय न ५४

हिजवलगिकरहुनदाया [illegible] सुनियगुनियसमुझियसमुझाइयदसाहृदयनहि
आवै॥जेहिअनुभवविनुमोहजनितदारुनभवविपतिसतावै॥१॥ब्रह्मपियूषमधुरसी
तलजौंपैमनसोरसपावै॥तौकतम्रगजलरूपविषयकारननिसिवासरधावै॥२॥जेहिके
भवनविमलचिंतामनिसोकतकांचवटोरै॥सपनेपरवसपरैजागिदेषतकेहिजायनिहो
रै॥३॥ज्ञानभक्तिसाधनअनेकसवसत्यझूठकछुनाहीं॥तुलसिदासहरिक्रपामिटैभ्र
मयहभरोसमनमाहीं॥४॥११५॥हेहरिकवनदोसतोहिदीजै॥जेहिउपायसपनेहुदु
र्लभगतिसोइनिसिवासरकीजै [illegible] जानतअर्थअनर्थरूपतमकूपपरवरहिला
गे॥तदपिनतजतस्वानअजषरज्यौंफिरतविषयअनुरागे॥१॥भूतद्रोहक्रतमोहवस्य

वि०प०
५५

हितआपनमैंनविचारा॥मदमत्सरअभिमानज्ञानरिपुँनमहरहनिअपारा॥२॥वेदपुरा
नसुनतसमुझतरघुनाथसकलजगव्यापी॥भेदतनहिंश्रीषंडवेनुइवसाररहितमनपा
पी॥३॥मैंअपराधसिंधुकरुनाकरजानतअंतरजामी॥तुलसिदासभवव्यालग्रसिततव
सरनउरगरिपुगामी॥४॥११६॥हेहरिकौनजतनसुषमानहु॥जिमिगजदसनतथामम
करनीसवप्रकारतुमजानहु जोकछुकहियकरियभवसागरतरियवछपदजैसे
रहनिआनविधिकहियआनहरिपदसुषपाइयकैसे॥२॥देषतचारुमयूरवचनसुभ
वोलिसुधाइवसानी॥सविषउरगआहारनिठुरअसियहकरनीवहवानी॥३॥अखिल
जीववत्सलनिर्मत्सरचरनकमलअनुरागी॥तेतवप्रियरघुवीरधीरमतिअतिसयनिज ५५

परत्यागी॥३॥ जद्यपि मम अवगुन अपार संसार जोग रघुराया॥ तुलसिदास निज गुन बि
चारि करुनानिधान करु दाया॥४॥११७॥ हे हरि कौन जतन भ्रम भागै॥ देषत सुनत बिचा
रत यह मन निज सुभाउ नहि त्यागै॥१॥ भक्ति ग्यान वैराग सकल साधन एहि लागि उ
पाई॥ कोउ भल कहउ देउ कछु कोउ यस वासना न उर ते जाई॥१॥ जेहि निसि सकल
जीव सूतहि तव कृपापात्र जन जागै॥ निज करनी विपरीत निरषि मोहि समुझि महा भय
लागै॥२॥ जद्यपि भग्न मनोरथ विधिवस सुष इच्छित दुष पावै॥ चित्रकार कर हीन ज
था स्वारथ विनु चित्र बनावै॥३॥ हृषीकेस सुनि नाउ जाउ बलि अति भरोस जिय मो
सं रे॥ तुलसिदास इंद्रिय संभव दुष हरे वनिहि प्रभु तोरे॥४॥११८॥ हे हरि कस न हरहु भ्र

मभारी॥ जद्यपि मृषा सत्य भासै जब लगि नहि कृपा तुम्हारी॥ अर्थ अविद्यमान
जानिय संसृति नहि जाय गोसाईं॥ बिनु बांधे निज हठ सठ परबस परयो कीर की नाईं॥२॥
सपने ब्याधि बिबिधि बाधा भई मृत्यु उपस्थित आई॥ बैद अनेक उपाय करै जागे बि
नु पीर न जाई॥३॥ श्रुति गुरु साधु सुमृति संमत यह दृश्य सदा दुषकारी॥ तेहि बिनु तजे
भजे बिनु रघुपति बिपति सकै को टारी॥३॥ बहु उपाय संसार तरन कहं बिमल गिरा श्रु
ति गावै॥ तुलसिदास मैं मोर गए बिनु जिय सुष कबहुं न पावै॥४॥११८॥ हे हरि यह भ्र
म की अधिकाई॥ देषत सुनत कहत समुझत संसय संदेह न जाई॥ जो जग मृषा
ताप त्रय अनुभव होत कहो केहि लेषे॥ कहि न जाइ मृगबारि सत्य भ्रम ते दुष होइ बि

शोषै॥१॥सुभगसयनसोवतसपनेवारिधि बूडतभयलागै॥कोटिहुनावनपारपावैकोउ
जबलगिआपुनजागै॥२॥अनविचाररमनीयसदासंसारभयंकरभारी॥समसंतोषदया
विवेकतैंव्योहारोसुषकारी॥३॥तुलसिदाससबअपिप्रपंचविधिपरपंचमूढश्रुतिगावै॥रघुप
तिभक्तिसंतसंगतिविनुकोभवत्रासनसावै॥४॥१२०॥मैहरिसाधनकरैनजानी॥जसआ
मयभेषजनकीन्हतसदोसकवनदसवानी॥ सपनेनृपकहँघटैविप्रवधविकल
फिरैअघलागे॥वाजिमेधसतकोटिकरैनहिशुद्धहोइविनुजागे॥१॥स्रगमहसर्पविपुल
भयदायकप्रगटहोइअविचारे॥वहुआयुधधरिमिलिअनेककरिहारहिमरैनमारे॥२
निजभ्रमतेरविकरसंभवसागरअतिभयउपजावै॥अवगाहतवोहितनौकाचढिकव

वि०प० हुँ पारन नहि पावै ॥३॥ तुलसिदास जग आपु सहित तब लगि निर्मूल न जाई ॥ तब लगि कल्प
५८ कोटि उपाय करि मरिय तरिय नहि माई ॥४॥१२१॥ अस कछु समुझि परत रघुराया ॥ बिनु
तव कृपा दयाल दास हित मोह न छूटै माया ॥ बाक्य ज्ञान अत्यंत निपुन भव पा
र न पावै कोई ॥ निसि गृह मध्य दीप की बातन तम निवृत्त नहि होई ॥१॥ जैसे कोउ ए
क दीन दुखित अति असन हीन दुख पावै ॥ चित्र कल्पतरु कामधेनु गृह लिखे न बिपति
न सावै ॥२॥ षटरस बहु प्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैन बखानै ॥ बिनु बोले संतोष जनि
त सुख खाय सोई पै जानै ॥३॥ जब लगि नहि निज हृदि प्रकास अरु बिषय आस मन मा ५८
हीं ॥ तुलसिदास तब लगि जग जोनि भ्रमत सपनेहु सुख नाहीं ॥४॥१२२॥ जो निज मन

परिहरैविकार॥तौकहाद्वैतजनितसंसृतदुखसंसयसोकअपार॥टेक॥सत्रुमित्रम
ध्यस्ततीनिएमनकीन्हेंबरिआई॥त्यागनगहनउपेक्ष्यनीयअहिहाटकत्रिनकी
नाई॥असनवसनपसुवस्तुविविधिविधिसवमनिमहँरहजैसे॥स्वर्गनरकचरअचरलो
कवहुवसतमध्यमनतैसे॥२॥विटपमध्यपुत्रिकासूत्रमहँकंचुकिविनहिवनाए॥म
नमहँतथालीननानातनप्रगटतअवसरपाए॥३॥रघुपतिभक्तिवारिछालितचित
विनुप्रयासहीसूझै॥तुलसिदासकहचिद्विलासजगवूझतवूझतवूझै॥४॥१२४॥मैंकेहि
कहौंविपतिअतिभारी॥श्रीरघुवीरधीरहितकारी॥टेक॥ममहृदयभवनहरितोरा॥
तहँआइवसेवहुचोरा॥अतिकठिनकरैंवरजोरा॥मानैनहिविनयनिहोरा॥१॥तम

वि०प० मोहलोभहंकारा॥मदक्रोधबोधरिपुमारा॥अतिकरैंउपद्रवनाथा॥मर्दहिंमोहिजानि व
५८ अनाथा॥१॥मैंएकअमितबटपारा॥कोउसुनैनमोरपुकारा॥भागेहुनहिंनाथउबा
रा॥रघुनायककरहुसंभारा॥२॥कहतुलसिदाससुनुरामू॥लूटहिंतसकरतवधामू॥चिं
तायहमोहिअपारा॥अपजसनजानिहौतुम्हारा॥४॥१२४॥मननमेरुमानहिसिषमेरी॥
जोनिजभक्तिचहैहरिकेरी॥टेक॥उरआनहिप्रभुकृतहितजेते॥सेवहितेजेअपनप
उचेते॥१॥दुषसुखअरुअपमानबडाई॥सबसमलेषहिविपतिबिहाई॥२॥सुनुसठका
लग्रसितयहदेही॥जनितेहिलागिविदूषहिकेही॥३॥तुलसिदासबिनुअसिमतिआ ५८
ए॥मिलहिनरामकपटलयलाए॥४॥१२५॥मैंजानौंहरिपदरतिनाहीं॥सपनेहुनहि

विरागमनमाहीं जेरघुवीरचरनअनुरागी। तेसवभोगरोगसमत्यागी॥२॥का
मभुअंगडसतजवजाहीं। विषयनीवकटुलागतताहीं॥३॥असमंजसअसहृदयवि
चारी। वढतसोचनितनूतनभारी॥४॥जवकवरामकृपादुखजाई। तुलसिदाससनेहिआ
न उपाई॥५॥१९॥सुमिरु सनेहसहितसीतापति। रामचरनतजिनहिनआनगति॥
जपतपतीरथजोगसमाधी। कलिमतिविकलनकछुनिरुपाधी॥२॥करहुँसुक त
तनपापसिराहीं। रक्तवीजजिमिवाढतजाहीं॥३॥हरनिएकअघअसुरजालिका। तुल
सिदासप्रभुकृपाकालिका॥४॥२०॥रुचिरसौरसनाहूरामरामरामरामरामरटंतो॥सु
मिरतसुखसुकृतवढतअघअमंगलघटंतो विनुश्रमकलिकलुषजालकटुक

वि०प० ५९

रालकटत॥ दिनकरके उदयजैसे तिमिरतोमफटत॥१॥ जागजोगजपविरागतपमुती

रथयअटत॥ बांधिवेकोभवगयंदरेनुकीरजवटत॥२॥ परिहरिसुरमनिसुनामगुंजालषि

लटत॥ लालचलघुतेरोलषितुलसीतोहिहटत॥३॥१२८॥ रामरामरामरामरामरामजप

त॥ मंगलमुदउदितहोतकलिमलछलछपत [stain] कुरुकेहिलहोफलरसालबवुर

वीजवपत॥ हारहिजनिजनमजायगालमूलगपत॥१॥ कालकर्मगुनसुभावसवकेसीस

नपत॥ रामनामममहिमाकीचरचोचलेचपत॥२॥ साधनविनुसिद्धिसकलविकललोगल

पत॥ कलिजुगवरविपुलवनिजनामनगरषपत॥३॥ नामसोंप्रतीतिप्रीतिहृदयसुथि

रथपत॥ पावनकिएरावनरिपुतुलसिहुसेअपत॥४॥१२९॥ पावनप्रेमरामचरनजन्म ५९

लाभ परम॥ राम नाम लेत होत सुलभ सब कल धरम [illegible] जोग मख विवेक विरति वेद
बोधित करम॥ करि वेकहँ कटु कठोर सुनत मधुर नरम॥१॥ तुलसी सुनि जानि बूझि भूलहि
जिनि भरम॥ नेहि प्रभु की परनि होहि जेहि सब की सरम॥४॥१३०॥ राम से प्रीतम की प्रीति र
हित जीव जाय जियत॥ जेहि सुख सुख मानि लेत सुख सो समुझि कियत [illegible] जहँ जहँ जे
हि जोनि जनम महि पताल वियत॥ तहँ तहँ तू विषय सुखहि चहत लहत नियत॥१॥ क
त विमोह लट्यो फट्यो गगन मगन सियत॥ तुलसी प्रभु सुजस गाय क्यों न सुधा पियत॥२॥
१३१॥ तो सौ हौं फिरि फिरि हित प्रिय पु[illegible]नीत सत्य सुवचन कहत॥ सुनि मन गुनि समुझि क्यों
न सुगम सुमग गहत [illegible] थिर लिलि लघु कीट ज्यों वधि सुख सुधी दुख दहत॥ पछुलो

वि०प० पसुपालईसबाधतछोरतनहत॥१॥विस्मयमुदनिहारभारसिरकाथेज्यौंवहत॥यौंही
६० जियजानिमानिसठनंमामनिसहत॥२॥पायोकेहिह्ननविचारहरिनवारिमहत॥तु
लसीनकुनाहिसरनजातेसबलहत॥३॥१३३॥नातेहौंवारवारदेवद्वारपरिकारकरत॥आ पु
रतनतदीनताकहेसोमंकठहरत लोकपालसोकविकलरावनडरडरत॥कासु
निसकुचेहकपालनरसरीरधरत॥१॥कौसिकमुनितीयजनकसोचअनलजरत॥साधनके
हिसीतलभएसोनसमुझिपरत॥२॥केवटखगसवरिसहजचरनकमलनरत॥सन्मुखतो
हिहोतनाथकुतरुसुफलफरत॥३॥बंधुबयरकपिविभीषनगुरुगलानिगरत॥सेवाके ६०
हिरीझिरामकियोसरिसभरत॥४॥सेवकभयोपवनपूतसाहिबअनुहरत॥ताकोलिएना

मरामसेवककोसुठरहत॥४॥जानेबिनुरामरीतिपचिपचिजगमरत॥परिहरिछलसरना
एतुलसिकृसेनरत॥६॥१२३॥ [stamp] रामसनेहीसोतैंनसनेहकियो॥अगमसुजो
अमरनिंहूसोतनुतोहिदियो॥ [stamp] दियोसुकुलजन्मसरीरसुंदरहेतुजोफलचारिको
जोपाइपंडितपरमपदपावतपुरारिमुरारिको॥यहभरतखंडसमीपसुरसरिथलभलोसं
गतिभली॥तेरीकुमतिकायरकलपबल्लीचहतविषफलफली॥१॥अजहूंसमुझिचितदे
सुनुपरमारथ॥हैहितुसोजगहूंजाहितेस्वारथ॥ [stamp] स्वारथहिप्रियस्वारथसोकातेकोउ
नबेदबखानई॥देखिखलेअहिलेखपरिहरिसोप्रभुहिपहिचानई॥पितुमातुगुरुस्वा
मीअपनपौतियतनयसेवकसखा॥प्रियलगतजाकेप्रेमसोबिनुहेतुहितुनहितेलखा॥२

वि०प
६१

दूरि न सो हितू हेरि हिए हीं है ॥ छलहि छाडि सुमिरे छोह किए हीं है ॥ छंद ॥ किए छोह
छाया कमल कर की भक्ति पर भजन हि भजे ॥ जगदीस जीवन जीव को सो साज सब सब के स
जै ॥ हरहि हरता विधि हि विधि ॥ अयहि श्रिय तजि हि दई ॥ सो जानकी पति मधुर मूरति
मोदमय मंगलमई ॥ ३ ॥ ठाकुर अति हि बडो सील सरल सुठि ॥ ध्यान अगम सिव हू भेट्यो के
वट उठि ॥ छंद ॥ भरि अंक भेट्यो सजल नयन सनेह सिथिल सरीर सो ॥ सुर सिद्ध मुनि सब
कहत कोउ न हि प्रेम प्रिय रघुवीर सो ॥ खग स्वरि निसिचर भालु कपि किए आपु ते वंदित ब
डे ॥ तापर तिन्ह की सेवा सुमिरि जिय जात जनु सकुचनि गडे ॥ ४ ॥ स्वामी को सुभाउ कह्यो ६१
सो जब अन्मानि है ॥ सोच सकल मिटि जैहैं राम भलो मानि है ॥ छंद ॥ भलो मानि है रघु

नाथजोरिजोहाथमाथेनाइहै॥ ततकालतुलसीदासजीवनजन्मकोफलपाइहै॥ जपु
रामकरहिप्रनामकहिगुनग्रामरामहियरिहिर॥ विचरहिअवनिअवनीसचरनसरोज
मनमधुकरकिर॥ ५॥ १३५॥ जियजबतेहरितेविलगान्यो॥ तबतेदेहगेहनिजजान्यो॥ मा
याबससरूपबिसरायो॥ तेहिभ्रमतेदारुनदुषपायो॥ छंद॥ पायोजोदारुनदुसहदुष
सुषलेसनहिंसपनेहुमिल्यो॥ भवसोकश्रमअनेकजेहितेहिपंथतेंहठिहठिचल्यो॥ ब
हुजोनिजन्मजराबिपतिमतिमंदहरिजान्योनहीं॥ श्रीरामबिनुबिश्रामभूठविचारिलषिपा
योकहीं॥ २॥ आनंदसिंधुमध्यतवबास॥ बिनुजानेकसमरसिपियास॥ मृगभ्रमबारिसत्य न
जियजानी॥ तहँतूंमगनभयोसुषमानी॥ छंद॥ तहँमगनमज्जसिपानकरित्रयकाल

वि॰प॰
६२

जलनाहींजहां॥निजसहजअनुभवरूपतवअमलभूलिजनुआयोतहां॥निर्मलनिरंजन
निर्विकारउदारसुखतैंपरिहस्यौ॥निःकाजराजविहायनृपज्योंस्वपनकारागृहपस्यौ॥
३॥तैंनिजकर्मडोरिदृढकीनी॥अपनेकरनिगांठिगहिदीनी॥तेहितेंपरवसपस्योअ
भागे॥ताकोफलगर्भवासदुखआगे॥छंद॥आगेअनेकसमूहसंसृतिउदरगतिजान्यो
सोउ॥सिरहेठऊपरचरनसंकटवातनहिपूछैकोउ॥सोनितपुरीषजोमूत्रमलकृमिकर्द्द
मावृतसोवहीं॥कोमलसरीरगभीरवेदनसीसधुनिधुनिरोवहीं॥४॥तूंनिजकर्मजाल
जहँघेरो॥श्रीहरिसंगतज्योनहिंतेरो॥बहुविधिप्रतिपालनप्रभुकीन्हो॥परमकृपालज्ञा
नतोहिदीन्हो॥छंद॥तोहिदियोज्ञानविवेकजन्मअनेककीतवसुधिभई॥तेहिईस ६२

कीहौंस्मरनजाकीविषममायागुनभई॥जेहिकिएजीवनिकायवसरसहीनदिनदिन
अतिनई॥सोकरौवेगिसंभारश्रीपतिविपतिमहंजेहिमतिदई॥६॥पुनिवहुविधिगला
निजियमानी॥अवजगजाइभजौंचक्रपानी॥असमोहिकरिविचारचुपसाधी॥प्रेमसवपवन
प्रेरौअपराधी॥छंद॥प्रेरौजोपरमप्रचंडमारुतकष्टनानातैंसह्यौ॥सोज्ञानध्यान
विरागअनुभवजातनापावकदह्यौ॥अतिषेदव्याकुलअल्पवलछिनएकवोलनआ
वई॥तवनीव्रकष्टनजानकोउसवलोगहरषितगावई॥५॥वालदसाजेतेदुषपारे॥
न अतिअनसनहिंजाहिंगनाए॥छुधाव्याधिवाधाभईभारी॥वेदननहिंजानैमहतारी॥
छंद॥जननीनजानैपीरसोकेहिहेतुसिसुरोदनकरै॥सोइकरैविविधिउपायजातेंअ

विं०प० धिकतवक्षातीजैरै॥ कौमारसैसवअरुकिसोरअपारअघकोकहिसकै॥ वितरेकतोहिनिर्दय
६३ महाखलआनकहुकोसहिसकै॥६॥ जोवनजुवतिसंगरंगरात्यो॥ तवतूंमहामोहमदमात्यो॥
तातैंतजीधर्ममरजादा॥ विसरेअवसवप्रथमविषादा॥ छंद॥ः विसरेविषादनिकायसं
कटसमुझिनहिंफाटतहियो॥ फिरिगर्भगतअवर्तसंस्रतचक्रजेहिसोइसोइकियो॥ कृ
मभस्मविटपरिनामतननेहिलागिजगवैरीभयो॥ परदारपरधनद्रोहपरसंसारवाढत
निततयौ॥७॥ देखतहीआईविरुधाई॥ जौतैंसपनेंहुनाहिंवोलाई॥ ताकेगुनकछुकहेन
जाहीं॥ सोअवप्रगटदेखुतनुमाहीं॥ छंद॥ः सोप्रगटतनजर्जरजरावसव्याधिसूलसतवता ६३
वई॥ सिरकंपइंद्रियसक्तिप्रतिहतवचनकाहुनभावई॥ गृहपालहूतैंअतिनिरा

दुखयानपाननपावहीं॥ अैसिउदसानबिरागतहँत्रिस्नातरंगबढावहीं॥८॥ कहिकोस
कैमहाभवतेरे॥ जन्मएककेकछुकगनेरे॥ चारिखानिसंततअवगाहीं॥ अजहुँनकरि
बिचारमनमाहीं॥ छंद॥ अजहूँबिचारिबिकारतजिभजिरामजनसुखदायकं॥ भवसिंधु
दुस्तरजलरथंभजुचक्रधरसुरनायकं॥ बिनुहेतुकरुनाकरउदारअपारमायातार
नं॥ कैवल्यपतिजगपतिरमापतिप्रानपतिगतिकारनं॥९॥ रघुपतिभक्तिसुलभसुखका
री॥ सोत्रयतापसोकभयहारी॥ बिनुसतसंगभक्तिनहिंहोई॥ तेतवमिलैद्रवैजबसोई॥ छं
दा॥ जबद्रवैदीनदयालराघौसाधुसंगतिपाइये॥ जेहिदरसपरससमागमादिकपापरा
सिनसाइये॥ जिन्हकेमिलेदुखसुखसमानअमानतादिकगुनभए॥ मदमोहलोभबि

वि०प०
६५

यादक्रोधसुबोधतेसहजहिंगए॥१०॥सेवतसाधुद्वैतभयभागे॥श्रीरघुवीरचरनलयलागे॥
देहजनितविकारसबत्यागे॥तबफिरिनिजस्वरूपअनुरागे॥छंद॥अनुरागसोनिजरूपजो
जगतेविलक्षनदेखिए॥संतोषसमसीतलसदादमदेहवंतनलेखिये॥निर्मलनिरामयएक
रसतेहिहर्षसोकनब्यापई॥त्रैलोकपावनसोसदाजाकीदसाऐसीभई॥११॥जोतेहि
हिंपंथचलहिंमनलाई॥तौहरीकाहेनहोहिंसहाई॥जोमारगश्रुतिसाधुदिखावै॥तेहि
त पथचलतसबैसुखपावै॥छंद॥पावैसदासुखहरिकृपासंसारआसातजिरहे॥सपनेहुंन
हींदुखद्वैतदरसनबातकोटिककोकहे॥द्विजदेवगुरहरिसंतबिनुसंसारपारनपाइये॥यह ६५
जानितुलसीदासत्रासहरनरमापतिगाइये॥१४॥१३४॥ जोपैकृपारघुपति

ह्मपालकी वैर ओरकै करासरै ॥ होइ न बांको वार भगतको जो कोउ कोटि उपाउ करै
तै केनीच जो मीचु साधुकी सो उ पावकतें हिमी चमरै ॥ वेद विदित प्रह्लाद कथा सुनि को
न भक्ति पथ पाउ धरै ॥१॥ गज उधारि हरि थप्यो विभीषन ध्रुव अविचल कबहू न टरै ॥ अं
वरीषकी श्राप सुरति करि अजहुँ महामुनि ग्लानि गरै ॥२॥ सोन कहा जो कियो सुजोधन
अबुध आपने मान जरै ॥ प्रभु प्रसाद सौभाग्य विजय जस पांडव सुत निहि कहह वरिआइ वरै ॥३॥
जोइ र्षा जोइ कृपष मैं नैगो परक रह सोइ सठ फिरि तिनते हिं कूपपरै ॥ सपने हुँ सुख न संतद्रोही कहुँ
सुरत रु सो उ विष फरनि फरै ॥४॥ है काको है सीस ईस के जो हठि जन की सीम चरै ॥ तुलसि
दास रघुवीर बाहुँ बल सदा निडर काहू न डरै ॥५॥१३६॥ कबहुँ सो कर सरोज रघुनायक

वि०प०
६५

रिहौ नाथ सीस मेरे॥ जेहि कर अभय किये जन आरत बारक बिबस नाम टेरे॥ जेहि
कर कमल कठोर संभु धनु भंजि जनक संसय मेट्यौ॥ जेहि कर कमल उठाइ बंधु ज्यौं परम
प्रीति केवट भेट्यौ॥ २॥ जेहि कर कमल कृपाल गीध कहँ उदक देइ निज धाम दियो॥ जेहि
कर बालि बिदारि दास हित कपि कुल पति सुग्रीव कियो॥ ३॥ आयो सरन सभीत बिभीष
न जेहि कर कमल तिलक कीन्हो॥ जेहि कर गहि सर चाप असुर हति अभय दान देवन्ह
दीन्हो॥ ३॥ सीतल सुखद छाँह जेहि कर की मेटत पाप ताप माया॥ निसि बासर तेहि क
र सरोज की चाहत तुलसिदास छाया॥ ४॥ १३७॥ दीन दयाल दुरित दारिद दुख दुनी दु
सह तिहुँ ताप तई है॥ देव दुआर पुकारत आरत सब की सब सुख हानि भई है॥ प्रभु ६५

केसवचनवेदबुधसंमतममभूरतिमहिदेवमई है।। तिन्हकीमतिरिसरागमोहमदलोभला
लचीलीलिलई है।।१।। राजसमाजकुसाजकोटिकटुकलपितकलुषकुचालिनई है।। नी
तिप्रतीतिप्रीतिपरमितपतिहेतुवादहठिहेरिहई है।।२।। आश्रमबरनधर्मबिरहितजग
लोकवेदमर्जादगई है।। प्रजापतितपाखंडपापरतअपनेअपनेरंगरई है।।३।। सांतिसु
सत्यसुरीतिगईघटिवाढिकुरीतिकपटकलई है।। सीदतसाधुसाधुतासोचतखलविलस
तहुलसतखलई है।।४।। परमारथस्वारथसाधनभइअफलसकलनहिसिद्धिसई है।।
कामधेनुधरनीकलिगोमरविवसविकलजामतिनवई है।।५।। कलिकरनीवरनीएकहां
लौंकरतफिरतविनुटहलटई है।। तापरदांतपीसिकरमींजतकोजानैचितकहाठई है।।

वि०प०
६६

६॥ त्यौंत्यौंनीचचढतसोचढतसिरज्यौंज्यौंसीलवसढीलदई है॥ सरुषबरजितरजिएतरज
नीकुम्हिलैहैकुम्हडेकीजई है॥ ७॥ दीजैदादिदेखिनातोवलिमहीमोदमंगलरितई है॥
भरेभागअनुरागलोगकहैंरामअवधचितवनिचितई है॥ ८॥ विनतीसुनिसानंदहेरिहं
सिकरुनावारिभूमिभिजई है॥ रामराजभयोकाजसगुनसुभराजारामजगतविजई है॥ ९
समरथवडोसुजानसुसाहिबसुकृतसैनहारतजितई है॥ सुजनसुभावसराहतसादरअ
नायाससांससतिवितई है॥ १०॥ उथपेथपनउजारिबसावनगईबहोरबिरदसदई है॥
तुलसीप्रभुआरतआरतिहरअभयबांहकेहिकेहिनदई है॥ ११॥ २२८॥ तेनरनरकरूप ६६
जीवतजगभवभंजनपदविमुखअभागी॥ निसिवासररुचिपापअसुचिमनखलमतिमलि

ननिगमपथन्यागी [illegible] नहिसतसंगभजननहिहरिकोश्रवननरामकथाअनुरागी
सुतवित्तदारभवनममतानिसिसोवतअतिनकबहुंमतिजागी॥१॥तुलसिदासहरिनाम
सुधातजिसठहठिपियतविषयविषमांगी॥सूकरस्वानसृकालसरिसजनजनमतजगतज
ननिदुखलागी॥४॥१२५॥ श्रीरामचंद्ररघुनायकतुमसोंहौंविनतीकेहिभांतिकरौं॥अघ
अनेकअवलोकिआपनेअनघनामअनुमानिडरौं॥ [illegible] परदुखदुखीसुखीपरसुख
तेंसंतसीलनहिहृदयधरौं॥देखिआनकीविपतिपरमसुखसुनिसंपतिबिनुआगिज
रौं॥१॥भक्तिबिरागज्ञानसाधनकहिबहुबिधिडहकतलोगफिरौं॥सिवसर्वसुखधाम
नामतवबेचिनरकप्रदउदरभरौं॥२॥जानतहूंनिजपापजलधिजियजलसीकरसमसु

वि०प०
६७

नतलौं ॥ रजसम पर औगुन सुमेरु करि गुन गिरि सम रज तें हि निदरौं ॥ ३ ॥ नाना वेष वना
उ दिवस निसि पर वित जेहि तेहि जुगुति हरौं ॥ एकौ पल न कबहुं अलोल चित हित दै पद सरो
ज सुमिरौं ॥ ४ ॥ जो आचरन विचारहु मेरो कल्प कोटि लगि अवटि मरौं ॥ तुलसिदास प्रभु कृ
पा विलोकनि गोपद ज्यौं भवसिंधु तरौं ॥ ५ ॥ १४० ॥ सकुचत हौं अति राम कृपानिधि क्यौं
करि विनय सुनावौं ॥ सकल धर्म विपरीत करौं केहि भांति नाथ मन भावौं ॥ जानत
हौं हरि रूप चराचर मैं हठि नैन न लावौं ॥ अंजन केस सिखा जुवती तहं लोचन सलभ पठा
वौं ॥ १ ॥ श्रवननि को फल कथा तुम्हारी यह समुझै समुझावौं ॥ तिन्ह श्रवननि पर दोष निरं ६७
तर सुनि सुनि भरि भरि तावौं ॥ २ ॥ जेहि रसना गुन गाइ तिहारे विनु प्रयास सुख पावौं ॥ तेहि मु

षपरअपवादभेकज्यौंरटिरटिजनमनभावौं॥३॥करुहृदयअतिविमलबसहिहरि
कहिकहिसबहिसिषावौं॥हौंनिजउरअभिमानमोहमदषलमंडलीबसावौं॥४॥जोत
नुधरिहरिपदसाधहिजनसोबिनुकाजगवावौं॥हाटकघटभरिधस्योसुधागृहतजिनभ
कूपषनावौं॥५॥मनक्रमबचनलाइकीन्हेअघतेकरिजतनदुरावौं॥परप्रेरितईर्षाबस
कबहुंकियकछुसुभसोजनावौं॥६॥विप्रद्रोहजनुबांटिपस्योहठिसबसौंबैरबढावौं॥ता
हूपरनिजमतिविलाससबसंतनिमांझगनावौं॥७॥निगमसेससारदनिहोरिजोअपनेदो
षकहावौं॥तौनसिराहिकलपसतलगिप्रभुकहाएकमुषगावौं॥८॥जोकरनीआपनीविचा
रौंतौकिसरनहौंआवौं॥मृदुलसुभाउसीलरघुपतिकोसोबलमनहिदेषावौं॥९॥तु

वि०प०
६८

लसि दास प्रभु सो गुन नहि जेहि सपनेहु तुम्हे रिझावौं ॥ नाथ कृपा भवसिंधु धेनुपद सम
सुजानि सिर नावौं ॥१२॥ १४२॥ सुनहु राम रघुबीर गुसाईं मन अनीति रत मेरो ॥ चरन सरोज
बिसारि तिहारे निसिदिन फिरत अनेरो मानत नही निगम अनुसासन त्रास न काहू न
केरो ॥ भूली सूल कर्म कोल्हुन्ह तिल ज्यौं बहु बारनि पेरो ॥१॥ जहं सतसंग भजन माधव को स
पनेहु करत न फेरो ॥ लोभ मोह मद काम क्रोध रत तिन्ह सो नेह घनेरो ॥२॥ पर गुन सुनत दा
ह पर दूषन सुनत हर्ष बहुतेरो ॥ आपु पाप के नगर बसावत सहि न सक पर खेरो ॥३॥ साध
न फल श्रुति सार नाम तव भव सरिता कहं बेरो ॥ सो पर कर कांकिनी लागि सठ बेचि होत ह
ठि चेरो ॥४॥ कबहुं कहं हौं संगति प्रभाउ तें जाउं सुमारग नेरो ॥ तब करि क्रोध संग कुमनो ६८

रुपदेलकठिनभटभेरो॥५॥ एकहौंदीनमलीनमंदमतिविपतिजालअतिघेरो॥ तापर
सहिनजातकरुनानिधिमनकोदुसहदरेरो॥६॥ हारिपर्योकरिजतनबहुविधितातेंहौंक
हतसवेरो॥ तुलसिदासभवत्रासमिटैजवकरुहुदयाप्रभुडेरो॥७॥१४४॥ सोधौंकोजोना
मलज्यातेनहिराख्योरघुवीर॥ कारुनीकविनुकारनहीहरिहरीसकलभवभीर॥
वेदविदितजगविदितअजामिलविप्रवंधुअघधाम॥ घोरजमालयजातनिवारेउसुत
हितसुमिरतनाम॥१॥ पशुपावरअभिमानसिंधुगजग्रस्योआइजवग्राह॥ सुमिरतस
कृतसपदिआएप्रभुहर्योदुसहउरदाह॥२॥ व्याधनिषादगीधगनिकादिकअगनि
तअवगुनमूल॥ नामओटतेरामसवनिकीदूरिकरीसवशूल॥३॥ केहिआचरनघाटि

वि०प०

१६५

हैं तिन ते रघुकुलभूषन भूप ॥ सीदत तुलसिदास निसिबासर परे्यो भीम तम कूप ॥ ४ ॥ १४३
कृपासिंधु जन दीन दुआरे दादि न पावत काहे ॥ जब जहं तुम्हहि पुकारत आरत तहं तिन्ह
के दुष दाहे ॥ [illegible] गज प्रहलाद पंडुसुत कपि सब को रिपु संकट मेट्यो ॥ प्रनत बंधु भय
बिकल बिभीषन उठि सो भरत ज्यौं भेट्यो ॥ १ ॥ मैं तुम्हरो लै नाम ग्राम एक उर आपने बसावौं ॥
लोग भजन बिबेक बिराग भले लेक मैं क्रम क्रम करि ल्यावौं ॥ २ ॥ सुनि रिस भरे कुटिल कामादिक करैं जो
र बरिआई ॥ तिन्है उजारि नारि अरि धन पुर राषे राम गोसांई ॥ ३ ॥ सम सेवा छल दंड दान
हौं रचि उपाय पचि हारेयो ॥ बिनु कारन को कलह बडो दुष प्रभु सों प्रगट पुकारेयो ॥ ४ ॥ सुर १६५
स्वारथी अनीस अलायक निठुर दया चित नाहीं ॥ जाउं कहां को बिपति निवारक भव ता

केजगमाहीं ॥५॥ तुलसीजदपिपोचरत उतुम्हरोदूत्र्योरनकाहकेरो॥ दीजैभक्तिबांहबेरके
ज्योंसुबसबसैयहहेरो॥६॥ ५४॥ हौंसबविधिराम रावरोचाहतभयोचेरो॥ ठौरठौरसाहि
होतिहैख्यालकालकलिकेरो॥ [illegible] कालकर्मइंद्रियविषयगाहकगनधेरो॥ हौंनकबू
लतबांधिकैमोलकरतकरेरो॥१॥ वंदिछोरतेरोनामहैबिरदैतवडेरो॥ मैंकह्योतबछलप्री
तिकैमांग्योउरडेरो॥२॥ नामओटअबलगिबच्योमलजुगजगजेरो॥ अबगरीबजनमोगिरपाइबोनहेरो॥३॥ जेहिकौतुकबकखानकोप्रभुन्यावनिबेरो॥ तेहिकौतुककहियेकृपालतुलसीहैमेरो॥४॥ १४४॥ कृपासिंधुतातेरहौंनिसिदिनमनमारे॥ महाराजलाजआपुहीनिजजांघउघारे॥ [illegible] मिलेरहैमारौचहैकामादिसंघाती॥ मोबिनुरहैनमे

रियेजौरघुलछमनी ॥१॥ बसत हिय हित जानि मैं सबकी रुचि पाली ॥ कियो कथक को दंड हौं
जड़ करम कुचाली ॥२॥ देषी सुनी न आजु लौं अपनाइत ऐसी ॥ करैं सबै सिर मेरे ही फिरि परै
अनैसी ॥३॥ बड़े अलेषी लषि परै परिहरै न जाहीं ॥ असमंजस मैं मगन हौं लीजै गहि बाँहें
४॥ बारक बलि अवलोकिए कौतुक जन जी को ॥ अनायास मिटि जाइगो संकट तुलसी को ॥५॥
१६६॥ कहौं कवन मुह लाइ कै रघुबीर गोसाईं ॥ सकुचत समुझत आपनी सब साँइ दोहाई ॥१॥
टेक॥ सेवत बस सुमिरत सषा सरनागत सो हौं ॥ गुनगन सीतानाथ के चित करत न हौं हौं
१॥ कृपासिंधु दीनबंधु को आरत हितकारी ॥ प्रनतपाल बिरुदावली सुनि जानि बिसारी ॥२॥
सेइ न धेइ न सुमिरि कै पद प्रीति सुधारी ॥ पाइ सुसाहिब राम सो भरि पेट बिगारी ॥३॥ ना

थगरीबनेवाज हैं मैं गही न गरीबी॥ तुलसी प्रभु निज ओर तैं बनि परै सो कीबी॥४॥२४७
कहाँ जाउँ कासों कहौं और ठौर न मेरे॥ जन्म गवायो तेरे ही द्वार मे किंकर तेरे॥ मै
तो बिगारी नाथ सों स्वारथ के लीन्हे॥ तो हि कृपानिधि क्यों बनै मेरी सी कीन्हे॥२॥ दिन दु
दिन दिन दुरदसा दिन दुख दिन दूषन॥ जौं लौं तूं न बिलोकि है रघुबंस बिभूषन॥१॥ दई
पीठि बिनु डीठि हौं तू बिस्व बिलोचन॥ तो सो तु ही न दूसरो नत सोच बिमोचन॥३॥ पराधी
न देव दीन हौं स्वाधीन गोसाईं॥ बोलनिहारे सों करै बलि बिनय कि झाँई॥ आपु देषि
मोहि देषिए जन जानिय साँचो॥ बडी ओट राम नाम की जेहि लई सो बाँचो॥५॥ रहनि री
ति राम रावरी नित हिय हुलसी है॥ जौं भावै सो करु कृपाल तेरो तुलसी है॥६॥२४८॥

वि० प०
७१

रामभद्र मोहिं आपनो सोच है अरु नाहीं॥ जीव सकल संताप को भाजन जग माहीं॥
नातो बड़ो समर्थ सों एक ओर की धौं तें॥ तो को मोसे अति घने मो को एकै तें॥१॥ बड़ो गला
नि हिय है सर्वज्ञ गुसाईं॥ कूर कुसेवक कहत हों सेवक की नाईं॥२॥ भलो पो
च राम को कहै मोहि सब नरनारी॥ बिगरे सेवक स्वान ज्यों साहिब सिर गारी॥३॥ असमंजस
मन को मिटै सो उपाउ न सूझै॥ दीनबंधु कीजै सोई बनि परै सो बूझै॥४॥ बिरुदावली बि
लोकिए तिन्ह में को उहौं हौं॥ तुलसी प्रभु को परिहर्यो सरनागत सो हौं॥५॥५८॥
जौं पै चिराई राम की करतो न लजातो॥ तौ तें दाम कुदाम ज्यों कर कर न बिकातो॥ ७१
जपत जीह रघुनाथ को नाम नहि अलसातो॥ बाजीगर के सूम ज्यों खल खेह न खातो॥

१॥जौंतूमनमेरेकहेरामकामकमातो॥सीतापतिसनमुखसुखीसबठांउसमातो॥२॥रा
मसोहानोतोहिजौंतूसबहिंसोहातो॥कालकर्मकुलिकारनीकोउनकोहांतो॥३॥रा
मनामअनुरागहीजियजोरतिआतो॥स्वारथपरमारथपथीतोहिसबपतिआतो॥४
सेउसाधुसुनिसमुझिकेपरपीरपिरातो॥जन्मकोटिकोकांदलोहृदयथिरातो॥५
भवमगअगमअनंतहैविनुश्रमहिसिरातो॥महिमाउलटेनामकीमुनिकियोकिरातो
६॥अमरअगमतनपाइकेजरिजायनजातो॥होतोमंगलमूलतूंअनुकूलविधातो॥
७॥जोजनप्रीतिप्रतीतिसोंरामनामहिंरातो॥तुलसीरामप्रतापतेतिहुंतापनतातो॥
८॥१५०॥रामभलाईआपनीभलकियोनकाको॥जुगजुगजानकिनाथकोजगजाग

वि०प० नसाको॥ ॥ ब्रह्मादिकविनतीकरीकहिदुखवसुधाको॥ रविकुलकैरवचंदभोआनं
७२ दसुधाको॥१॥ कौसिकगरनतुसारज्यौंतकितेजन्नियाको॥ प्रभुअनहितहितकोदियोप
लकोपन्नकपाको॥२॥ हरोपापअपापुजाउकेसंतापसिलाको॥ सोचमगानकाढ्योमहीसा
हिवमिथिलाको॥३॥ रोषरासिभृगुपतिधनीअहमितममताको॥ चितवतभाजनकौलि
लियौउपसमसमताको॥४॥ मुदितमातिअयसुकलेवनमातुपिताको॥ धर्मधुरंधर
धीरधुरगुरसीलजिताको॥५॥ गुहगरीवगतन्नातिहैजोहितउनभयाको॥ पायोपाव
नप्रेमसेसनमानसखाको॥६॥ सदगतिसबरीगीधकीसादरकरताको॥ सोचसीवसुग्री ७२
वकोसंकटहरताको॥७॥ राखिविभीषनकोसकतअसकालगहाको॥ आजविराजतरा

जैहैदसकंठजहाको ॥८॥ चालिसवासीअवधकेवूझिएनषाको । तेपावरपहूंचेतहांजहं
मुनिमनथाको ॥९॥ गतिनलहैरामनामसोंविधिसिरिजाको । सुमिरतकहतप्रचारिकै
वल्लभगिरिजाको ॥१०॥ अकनिअजामिलकीकथासानंदनभाको । नामलेतकलिका
लहंहरिपुरहिंनगाको ॥११॥ रामनाममहिमाकेरैकामदभूरुहआको । साषीवेदपुरान
हैतुलसीतननाको ॥१२॥१५१॥ मेरेरावरीगतिहैरघुपतिवलिजाउं ॥ निडरनीचनिर्गु
ननिर्धनकहंजगदूसरोनठाकुरठाउं [illegible] हैघरघरवहुभरेसुसाहिवसूझतसवनि
आपनोदाउं ॥ वानरभालुविभीषनहितविनुकोसलपालकहूंनसमाउं ॥१॥ प्रनता
रतभंजनजनरंजनसरनागतपविपंजरनाउं ॥ कीजेदास दासतुलसीअवकृपासिंधु

वि॰प॰
७३

विनुमोलविकाउँ॥४॥१५१॥देवदूसरोकोदीनकोदयाल॥सीलनिधानसुजानसिरो
मनिसरनागतप्रियप्रनतपाल कोसर्वज्ञसमर्थसकलप्रभुसिवसनेहमानस
मराल॥केहिसाहिबकिएमीतप्रीतिवसखगनिसिचरकपिभीलभाल॥२॥नाथहाथमा
याप्रपंचसवजीवदोषगुनकर्मकाल॥तुलसीदासभलपोचरावरोई नेकुनिरखिकीजे
निहाल॥३॥१५३॥ विस्वासएकरामनामको॥माननतनहिपरतीतिअनत
ऐसोसुभावमनवामको पढिवोपरयोनछठीछमतरिगुजजुरअथर्वनसामको
व्रततीरथतपसुनिसहमतपचिमरैकरैतनछामको॥१॥कर्मजालकलिकालकठिनआ ७३
धीनसुसाधितदामको॥ज्ञानविरागजोगजपकोंभयलोभमोहकोहकामको॥२॥सब

दिनसबलायकभएलायकरघुनायकगुनगनामको॥ बैठेनामकामतरुतरडरकौन
घोरघनघामको॥७॥कोजानेकोजैहैजमपुरकोसुरपुरपरधामको॥तुलसीकुबहुतभ
लोलागतजगजीवनरामगुलामको॥८॥१५४॥कलिनामकामतरुरामको॥ दलनि
हारदारिददुकालदुखदोषघोरघनघामको नामलेतदाहिनोहोतमनबाम
विधाताबामको॥ कहतमहेसमुनीसमहातम उलटेसूधेनामको॥१॥भलोलोकपरलो
कतासुजाकेबललसितललामको॥ तुलसिकुजगजानियतनामहितेनीचनकूँच
मोकामको॥१॥१५५॥सेइयेसुसाहिबरामसो॥ सुखदसुसीलसुजानसूरसुचिसुंदरकोटिक
कामसो सादरसेसमसाधुमहिमाकैहैगुनगानगायकसामसो॥ सुमिरसप्रेमना

वि॰प॰
७४

सजातोरतिचाहतचंद्रललामसो॥१॥नामनविदेसनलेसकलेसकोसकुचतसमुझतपना
मसो॥साधीनाकोविदितविभीषनवैठोकविकलधामसो॥२॥टहलसहलजनमहलम
हलजागतचारोजुगजामसो॥देषतदोषनषीझतरीझतसुनिसेवकगुनग्रामसो॥३॥जा
केभजेतिलोकतिलकभएत्रिजगजोनितनतामसो॥तुलसीऐसेप्रभुहिभजैजोनहिताहि
विधातावामसो॥४॥१५६॥ [illegible] कैसेदेउंनाथहिषोरि॥कामलोलुपभ्रमतमनहरि
भक्तिपरिहरितोरि [illegible] बहुतप्रीतिपुजाइवेपरपूजिवेपरथोरि॥देउंसिषसिषयोनमा
नतमूढतामतिमोरि॥१॥किएसहितसनेहजेअघहृदयराषेचोरि॥संगवसकिएसुभ
सुनाएसकललोकनिहोरि॥२॥करौंजोकछुधरौंसचिपचिसुकृतसिलावटोरि॥पैठिउ ७४

रवरवसदयानिधिदंभलेतअंजोरि॥३॥लोभमनहिंनचावकपिज्यौंगरेआसाडोरि॥वात
कहौंवनाइवुधज्यौंवरविरागनिचोरि॥४॥येतेहूपरतुम्हरोकहावतलाजअंचईघोरि॥नि
लजतापररीझिरघुवरदेहुतुलसिहिछोरि॥५॥१५७॥हेप्रभुमेरोईसवदोस॥सीलसिंधु
कृपालनाथअनाथआरतपोस वेषवचनविरागमनअघअवगुननिकोकोस॥
रामप्रीतिप्रतीतिपोलीकपटकरतवठोस॥१॥रागरंगकुसंगहीसोंसाधुसंगतिरोस॥चहत
केहरिजसहिसेइसृगालज्यौंखरगोस॥२॥संभुसिखवतिरसनहूंनितरामनामहिघोस
दंभहूँकलिनामकुंभजसोचसागरसोस॥३॥मोदमंगलमूलअतिअनुकूलनिजनिरजो
स॥रामनामप्रभाउसुनितुलसीपरमपरितोस॥४॥१५८॥मैंहरिपतितपावनसुने॥हौं

पतिततुमपतितपावनदोउबानिकबने॥ टेक॥ व्याधगनिकागजअजामिलसाखिनि
गमनिभने॥ औरअधमअनेकतारेजातकापैगने॥१॥ जानिनामअजानिलीन्हेंनरक
जमपुरमने॥ दासतुलसीसरनआयोराखिलेआपने॥२॥१५९॥ रागरामकली॥ ऐसोकोउदार
जगमाहीं॥ बिनुसेवाजोद्रवैदीनपररामसरिसकोउनाहीं॥ टेक॥ जोगतिजोगबिरागजत
नकरिनहिपावतमुनिज्ञानी॥ सोगतिदईगीधसबरीकहप्रभुनअधिकजियजानी॥१॥ जो
संपतिदससीसअरपिकरिरावनसिवपहिलीन्ही॥ सोइसंपदाबिभीषनजनकोंसकुचसहि
तप्रभुदीन्ही॥२॥ तुलसिदाससबभाँतिसकलसुषजोचाहसिमनमेरो॥ तौभजुरामकामसब
पूरनकरहिंकृपानिधितेरो॥३॥१६०॥ तोसोप्रभुजौपैकहूँकोउहोतो॥ तौसहिनिपटनिरा

दनिसिदिन रटिलटिं भ्रमोघटि कोतो॥२६०॥ कृपासुधाजलदानि मांगिवो कहौं सो सां
चनि सोतो॥ स्वातिसनेहसलिलसुखचाहतचितचातिककोसोपोतो॥१॥ कालकर्मबस
मनकुमनोरथकबहुंकबहुंकछुभांतो॥ ज्यौंमुदमयबसिमीनवारितजि उछरिभभरिले
तगोतो॥२॥ जितोदुरावदासतुलसी उरक्यौंकहिआवतओतो॥ तेरेराजरायदसरथकेलयो
बयोविनुजोतो॥३॥२६१॥ रैकेदानिसिरोमनिसांचो॥ जेहिजांच्यौसोजांचकतावसफिरिवहु
नाचननाच्यौ॥२६२॥ सबस्वारथीअसुरसुरनरमुनिकोउनदेतविनुपारु॥ कोसलपाल
कृपालकल्पतरुद्रवतसकृतसिरनाए॥१॥ हरिहुंऔरअवतारआपनेराखीवेदवडाई
लेचउअनिधिदईसुदामहिजद्यपिवालमिताई॥२॥ कपिसेबरीसुग्रीवविभीषनकोन

वि० प० नहिकियोअजाची॥अबतुलसिहिदुखदेतदयानिधिदारुनआसपिसाची॥३॥१६३॥जान
७६ तप्रीतिरीतिरघुराई॥नातेसबहातेकरिराखतरामसनेहसगाई॥टेक॥नेहनिबाहिदेह
तजिदसरथकीरतिअचलचलाई॥ऐसेहुपितुतेअधिकगीधपरममतागुनगरुआई॥१॥ ना
तियबिरहीसुग्रीवसखालखिप्रानप्रियाबिसराई॥रनपर्योबंधुबिभीषनहीकोसोचहृ
दयअधिकाई॥२॥घरगुरगृहप्रियसदनसासुरेभइजबजहपहुनाई॥तबतहकहिस
बरीकेफलनकीरुचिमाधुरीनपाई॥३॥सहजसरूपकथामुनिबरनतरहतसकुचिसिर
नाई॥केवटमीतकहेसुखमानतबानरबंधुबड़ाई॥४॥प्रेमकनौडोरामसोप्रभुत्रिभु ७६
वनतिहुकालनभाई॥तेरोरिनीकह्योहौंकपिसोंऐसीमानिहैकोसेवकाई॥५॥तुल

सीतामसनेहसीलसुनिजोनभक्तिअरुझाई॥तौतेहिजनमिजायजननिजडतनुतरु
नतागवाई॥६॥१६३॥रघुवररावरीइहैवडाई॥निदरिगनीआदरगरीवपरकरतकृपा
अधिकाई॥[illegible]॥थकेदेवसाधनकरिसवसपनेहुनहिदेतदिखाई॥केवटकुटिल
भालुकपिकोनपकियसकलसंगभाई॥१॥मिलिमुनिवृंदफिरेदंडकवनसोचरचौन
चलाई॥वारहिवारगीधसेवरीकीवरनतप्रीतिसोहाई॥२॥स्वानकहेतेकियोपुरवा
हेरजतीगयंदचढाई॥तियनिंदकमतिमंदप्रजारजनिजनयनगरवसाई॥३॥ये न
हिदिवानदिनदीनकनिसोरीतिसदाचलिआई॥दीनदयालदीनतुलसीकी
काहुनसुरतिकराई॥४॥१६४॥ऐसेरामदीनहितकारी॥अतिकोमलकरुनानिधा

नबिनुकारनपर उपकारी॥टेक॥ साधनहीनदीननिजअघबससिलाभईमुनिनारी
ग्रहतेगवनिपरसिपदपावनघोरस्रापतेतारी॥१॥हिंसारतनिषादतामसबपुपसुसमा
नबनचारी॥भेंट्योहृदयलगाइप्रेमबसनहिंकुलजातिबिचारी॥२॥जद्यपिद्रोहकियो
सुरपतिसुतकहिनजाइअघभारी॥सकललोकअवलोकिसोकहतसरनगयेंभयटारी॥
३॥बिहँगजोनिआमिषअहारपरगीधकवनब्रतधारी॥जनकसमानक्रियाताकीनिज
करसबबातसँवारी॥४॥अधमजातिसबरीजोषितजडलोकबेदतेंन्यारी॥जानिप्रीतिदैद
रसक्रुपानिधिसोउरघुनाथउधारी॥५॥कपिसुग्रीवबंधुभयब्याकुलआयोसरनपुका ७७
री॥सहिनसकेजनकोदुखदारुनहत्योबालिसहिगारी॥६॥रिपुकोअनुजबिभीषनं

निसिचरकौनभजनअधिकारी॥सरनगएआगेह्वैलीन्हेभेंटेभुजापसारी॥७॥अशु
भहोउजिन्हकेसुमिरनतेंबानररीछबिकारी॥वेदविदितभएपावनतेंसबमहिमानाथ
तिहारी॥८॥कहँलौंकहौंदीनअगनितजिन्हकीतुम्हबिपतिनिवारी॥कलिमलग्रसि
तदासतुलसीपरकाहेतेंकृपाबिसारी॥९॥१६५॥रघुपतिभक्तिकरतकठिनाई॥कहतसु
गमकरनीअपारजानैसोइजेहिबनिआई॥टेक॥जोजेहिकलाकुसलताकहँसोइसु
लभसदासुखकारी॥सफरीसनमुखजलप्रवाहसुरसरीबहैगजभारी॥१॥ज्योंसर्करामि
लैसिकतामहँबलतेंनकोउबिलगावै॥अतिरसज्ञसूक्ष्मपपीलिकाबिनुप्रयासहींपा
वै॥२॥सकलदृश्यनिजउदरमेलिसोवैनिद्रातजिजोगी॥सोइहरिपदअनुभवैपरम

वि०प०
७८

सुषअनिसयेंदुतवियोगी॥३॥सोकमोहभयहर्षदिवसनिसिदेसकालतहँनाहीं॥तु
लसिदासयहदसाहीनसंसयनिर्मूलनजाहीं॥४॥१६६॥जौपैरामचरनरतिहोती॥तौक
तत्रिविधिसूलनिसिवासरसहतेविपतिनिसोती॥ जौसंतोषसुधानिसिवासरसप
नेहुकबहुँकपावै॥तौकतविषयविलोकिझूठजलमनकुरंगज्यौंधावै॥१॥जौश्रीपतिम
हिमाविचारिउरभजतेभावबढाये॥तौकतद्वारद्वारकूकरज्यौंफिरतेपेटषलाये॥२॥जे
लोलुपभयेदासआसकेतेसबहीकेचेरे॥प्रभुविस्वासआसजीतीजिन्हतेसेवकहरिकेरे॥३॥
न नहिएकौआचरनभजनकोविनयकरतहौंताते॥कीजेकृपादासतुलसीपरनाथनामकेना ७८
ते॥४॥१६७॥जौपैमोहिरामलागतेमीठे॥तौनवरसषटरसरसअनरसह्वैजातेसब

सीठो॥ बंचकविषयविविधितनुधरिअनुभएसुनेअरुदीठो॥यहजानतहौंहृ
दयअपनेसपनेनअघाइउबीठो॥४॥तुलसिदासप्रभुसोंएकहिबलबचनकहतअ
तिढीठो॥नामकिलाजरामकरुनाकरकेहिनदिएकरचीठो॥५॥१६७॥ ऐसोमनक
बहूँतुमसहितनलाग्यो॥ज्योंछलछाडिसुभायनिरंतररहतविषयअनुराग्यो॥
ज्योंचितईपरनारिसुनेपातकप्रपंचघरघरके॥त्योंनसाधुसुरसरितरंगनिर्मलगायेगुन
रघुबरके॥१॥ज्योंनासासुगंधरसबसरसनाषटरसरतिमानी॥रामप्रसादमालजू
ठनिलगित्यौंनललकिललचानी॥२॥चंदनचंदबदनिभूषनपटज्योंचहपांवरपर
स्यो॥त्योंरघुपतिपदपदुमपरसकोतनुपातकीनतरस्यो॥३॥ज्योंसबभांतिकुदेवकु

वि०प० ७९

ठाकुर सेये बपु बचन हिए हूं ॥ त्यौं न राम सुकृतग्य जे सकुचत सकृत प्रनाम किए हूं ॥४॥
चंचल चरन लोभ लगि लोलुप द्वार द्वार जग बागे ॥ राम सीय आश्रमनि चलत त्यौं भ
ए न श्रमित अभागे ॥५॥ सकल अंग पद विमुष नाथ मुष नाम कि ओट लई है ॥ है तुल
सिहि परतीति एक प्रभु मूरति कृपामई है ॥६॥१६९॥ कीजै मोको जमजातनामई ॥ राम तु
मसे सुचि सुहृद साहिबहि मैं सठ पीठि दई ॥ गरभवास दस मास पालि पितु मा
तु रूप हित कीन्हो ॥ जड़हि विवेक सुसील षलहि अपराधिहि आदर दीन्हो ॥१॥ कपट
करौं अंतरजामिहु सो अघ व्यापकहि दुरावौं ॥ ऐसे कुमति कुसेवक रघुपति न कियो १७९
मन बावौं ॥२॥ उदर भरौं किंकर कहाइ बेच्यौ विषयनि हाथ हियो है ॥ मोहि से बंचक

कोकृपालछलछाडिकैछोहकियौहै॥३॥पलपलकेउपकाररावरेजानिबूझिसुनि
नीके॥भिद्योनकुलिसहूतेकठोरचितकबहुँप्रेमसियपीके॥४॥स्वामीकीसेवकहित
तासबकछुनिजसाँइद्रोहाई॥मैमतितुलातौलिदेखीभइमेरीदिसिगरुआई॥५॥
येतेहुपरहितकरतनाथमेरोकरिआयेअरुकरिहैं॥तुलसीअपनीओरजानियतप्र
भुहिकनौडोभरिहैं॥६॥१७०॥कबहुँकहौंयहिरहनिरहौंगो॥श्रीरघुनाथकृपालकृपा
तेसंतसुभाउगहौंगो जथालाभसंतोषसदाकाहूसौंकछुनचहौंगो॥परहि
तनिरतनिरंतरमनक्रमवचननेहनिवहौंगो॥१॥परुषवचनअतिदुसहश्रवनसु
नितेहिपावकनदहौंगो॥विगतमानसमसीतलमनपरगुननहिंदोषकहौंगो॥२॥

वि०प० ठाकुरसेयेबपुबचनहिएहूं॥त्यौंनरामसुकृतग्यजेसकुचतसकृतप्रनामकिएहूं॥४
७९ चंचलचरनलोभलगिलोलुपद्वारद्वारजगबागे॥रामसीयआस्रमनिचलततौंभै
एनस्रमितअभागे॥५॥सकलअंगपदबिमुखनाथमुखनामकिओटलईहै॥हैतुल
सिहिपरतीतिएकप्रभुमूरतिकृपामईहै॥६॥१९८॥कीजैमोकोजमजातनामई॥रामतु
मसेसुचिसुहृदसाहिबहिमैंसठपीठिदई॥ गरभबासदसमासपालिपितुमा
तुरूपहितकीन्हो॥जडहिबिबेकसुसीलखलहिअपराधिहिआदरदीन्हो॥१॥कपट
करौंअंतरजामिहुसोंअघब्यापकहिदुरावौं॥ऐसेकुमतिकुसेवकपररघुपतिनकियो १७९
मनबावौं॥२॥उदरभरौंकिंकरकहाइबेच्यौबिषयनिहाथहियोहै॥मोहिसेबंचक

कोसलपाल छल छाडिके छोह कियौ है ॥३॥ पल पल के उपकार रावरे जानि बूझि सुनि
नीके ॥ भिद्यो न कुलिसहूतें कठोर चित कबहुँ प्रेम सिय पीके ॥४॥ स्वामी की सेवक हित
ता सब कछु निज साँइ दोहाई ॥ मै मति तुला तोलि देखी भइ मेरी दिसि गरुआई ॥५॥
येतेहु पर हित करत नाथ मेरो करि आये अरु करिहै ॥ तुलसी अपनी ओर जानियत प्र
भुहि कनौडो भरिहै ॥६॥ १७० ॥ कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो ॥ श्रीरघुनाथ कृपाल कृपा
ते संत सुभाउ गहौंगो [illegible] थालाभ संतोष सदा काहू सों कछु न चहौंगो ॥ परहि
त निरत निरंतर मन क्रम वचन नेह निवहौंगो ॥१॥ परुष वचन अति दुसह श्रवन सु
नि तेहि पावक न दहौंगो ॥ विगत मान सम सीतल मन पर गुन नहि दोष कहौंगो ॥२॥

वि॰प॰ परिहरिदेहजनितचिंतादुखसुखसमबुद्धिसहैंगो॥तुलसिदासप्रभुयहिपथरहिअ
१० चलहरिभगतिलहैंगो॥३॥१७१॥नाहिंनआवतऔरभरोसो॥यहकलिकालस
कलसाधनतरुहैश्रमफलनिफरोसो॥ तपतीरथउपवासदानमखजोजे
हिरुचैकरोसो॥पायेहिंपैजानिबोकरमफलभरिभरिवेदपरोसो॥१॥आगमविधिज
पजागकरतनरसरतनकाजखरोसो॥सुखसपनेहुनजोगसिधिसाधनरोगवियोग
धरोसो॥२॥कामक्रोहमदलोभमोहमिलिज्ञानविरागहरोसो॥विगरतमनसंन्या
सलेतजलनावतआमघरोसो॥३॥बहुमतमुनिबहुपंथपुराननिजहांतहांझग
रोसो॥गुरुकह्योरामभजननीकोमोहिलगतराजडगरोसो॥४॥तुलसीविनुपरती १०

तिप्रीतिप्रि रिपि रिपचिमैरमरोसो॥ रामनामबोहितभवसागरचाहैतरनतरोसो॥५॥१७२
जाकेप्रियनरामवैदेही॥ सोत्यागियेकोटिवैरीसमजद्यपिपरमसनेही॥ टेक॥ तज्योपि
ताप्रहलादविभीषनवंधुभरतमहतारी॥ हरिहितगुरुवलिव्रजवनितनिपतिभयेमुद
मंगलकारी॥१॥ नातेनेहरामहिकोमनियतसुहृदसुसेव्यजहाँलौं॥ अंजनुकहाआँखि
जौंफूटैवहुतककहौंकहाँलौं॥२॥ तुलसीसोऊआपनोसकलविधिपूज्यप्रानतेप्यारो॥
जातेहोइसनेहरामसौंइतनोमतोहमारो॥३॥ १७३॥ जौंपैरहनिरामसौंनाहीं॥ तौनर
खरकूकरसूकरसेजायजियतजगमाहीं टेक कामक्रोहमदलोभनींदभयभूख
प्याससवहीके॥ मनुजदेहसुरसाधुसराहतसोनोनेहसियपीके॥१॥ सूरसुजानसपूत

सुलछन गनियन गुन गारु आई ॥ बिनु हरि भजन इंदारिन के फल तजन कवहुँ का आई
३॥ कीरति कुल करतूति भूति भल सील सरूप सलोने ॥ तुलसी प्रभु अनुराग रहित जैसे सा
लन साग अलोने ॥ ३ ॥ ७४ ॥ राख्यो राम सुस्वामी सो नीच नेह न नातो ॥ ए ते अनादर हूँ
तोहि ते न हातो ॥ [illegible] ॥ जोरे नए नाते नेह फोकट फीके ॥ देह के दाहक गाहक जी के ॥१॥
आपने आपने को सब चाहत नीको ॥ मूल दुहू को दयाल दूलह सी को ॥ २ ॥ जीव को जीवन
प्रान को प्यारो ॥ सुख हू को सुख राम सो तै बिसारो ॥ ३ ॥ कियो करै गो तो से खल को भलो ॥ ऐ
से सुसाहिब सों तू कुचालि क्यों चलो ॥ ४ ॥ तुलसी तेरी भलाई अजहूँ बूझै ॥ राढउ राउत होत ८१
फिरि के जूझै ॥ ५ ॥ ७५ ॥ जौ तुम त्यागो राम हौं तो नहि त्यागौं ॥ परिहरि पाय काहि अ

नुरागौं टिका: सुषदसुप्रभुतुम्हसोजगमाहीं॥श्रवननयनमनगोचरनाहीं॥१॥
हौंजडजीवईसरघुराया॥तुमममायापतिहौंवसमाया॥२॥हौंतौकुजाचकस्वामिसुदा
ता॥हौंकुपूततुमहितपितुमाता॥३॥जौंपैकृकहुंकोउवूझतवाता॥तौतुलसीविनुमो
लविकातो॥४॥१७९॥भैरउ उदासराममेरेआसरावरी॥आरतस्वारथीसवैकहैंवात
वावरी टिका जीवनकोदानीघनकहानाहिचाहियै॥प्रेमनेमकेनिवाहेचातकसराहि
यै॥१॥मीनतेनलाभलेसपानीपुन्यपीनको॥२॥वडेहीकीवोटवलिवांचिआयेछो
टेहैं॥चलनषरेकेसंगजहांतहांषोटेहैं॥३॥एहीदरवारभलोदाहिनेहुवामको॥मोको
सुषदायकभरोसोरामनामको॥४॥कहतनसानीहैकहेहिहरमाहिनीकीहै॥जानत
जलविनुथलकहंमीचविनुमीनको

वि०प०
८२

कृपानिधानतुलसीकेजीकीहै॥५॥१६७॥कहांजांउंकासोंकहोंकोंनसुनैदीनकी॥त्रिभु

वनतुहीगतिसवकोंगहीनकी॥जगजगदीसघरघरनिघ्रनैरहे॥निराधारकोंअ

धारगुनगननैरेहैं॥१॥गजराजकाजषगराजतजिधायोको॥मोसदोसकोंसपोसतोसमा

यजायोको॥२॥मोसकूरकायरकपूतकोडीआधको॥किएवहुमोलतेंकैरैयागीधआ

धको॥३॥तुलसीकीतेरहीवनाएवलिवैनेगी॥प्रभुकीविलंवअंवदोषदुष्यजनैनेगी॥४

१६८॥वारकविलोकिवलिकीजेमोहिआपनो॥रायदसरथकेतूंउथपनथापनो॥

॥ साहिवसरनपालसवलनदूसरो॥तेरोनामलेतहीसुषेतहोतऊसरो॥१॥व

चनकरमतेरेमेरेमनगडेहैं॥देषेसुनेजानेमैंजहांनजेतेवडेहैं॥२॥कैसेकियोसमाधा ८२

नसनमानसिलाको॥ रघुनाथसारिखोजितैयाकोनलीलाको॥३॥ मातुपितुबंधुहित
लोकबेदपालको॥ बोलकोअचलनतकरतनिहालको॥४॥ संग्रहीसनेहबसअधम
असाधुको॥ गीधसबरीकोकहौकरिहैसराधुको॥५॥ निराधारकोअधारदीनकोद
यालुको॥ मीतकपिकेवटरजनीचरभालुको॥६॥ रंकनिरगुनीनीचजेतेनिवाजेहैं
महाराजसुजनसमाजतेबिराजेहैं॥७॥ सांचीबिरदावलीनबढ़िकहिगईहै॥ सीलसिं
धुढीलतुलसीकीबारभईहै॥८॥१७८॥ केहूंभांतिकृपासिंधुमेरीओरहेरिये॥ मोको
औरठौरनसुटेकएकतेरिये॥ सहससिलातेअतिमतिजडभईहै॥ कासोंकहौंकोने
गतिपाहनहिदईहै॥१॥ पदरागजागचहौंकौसिकज्योंकियोहैं॥ कलिमलखल

वि०प०
८३

दलदेखिभारीभियोहौं॥२॥करमकपीसबालिबलित्रासत्रस्योहौं॥चाहतअनाथना
थतेरीबाँहबस्योहौं॥३॥महामोहरावनबिभीषनज्यौंहयोहौं॥त्राहितुलसीसत्राहि
तिहूँतापतयोहौं॥४॥१८०॥नाथगुनगाथसुनिहोतचितचाउसो॥रामरीझिवेकोजा
नोभगतिनभाउसो टेक॥ करमसुभाउकालठाकुरनठाउसो॥सुधननसुतनन
सुमनसुभाउसो॥१॥जाचोजलजाहिकहैअमिअपिअाउसो॥काहकहौंकाहूसोनव
ढतहियाउसो॥२॥बापबलिजाउँआपकरिएउपाउसो॥तेरेहीनिहारेपरैहारेहूसुदा
उसो॥३॥तेरेहींसुझाएसूझैअसुझसुझाउसो॥तेरेहीबुझाएबूझैअबुझबुझाउसो॥४॥ना
मअवलंबअंबुमीनदीनराउसो॥प्रभुसोंबनाइकहौंजीहजरिजाउसो॥५॥सबभाँति ८३

विगरीहैएकसुवनोअसो॥तुलसीसुसाहिबहिदियोहैजनाउमो॥२॥१८७॥
॥रामप्रीतिकीरीतिआपुनीकेजानियतहै॥बडेकीबडाईछोटेकीछोटाईदूरिकरैऐसि
औबावरीबलिमनियतहै॥ गीधकोकरोसाधुभीलनीकेखाएफलसोउसाधुस
भाभलीभांतिभनियतहै॥रावरेआदरेलोकवेदहूआदरिअतिजोगज्ञानिहूतेगुरुगनिय
तहै॥१॥प्रभुकीकृपाकृपालकठिनकलिहूकालमांहिसाखमुनि उरआनियतहै॥तुलसी
परायेवसभएरसअनरसदीनबंधुद्वारेहठठनियतहै॥२॥१८७॥रामनामकेजपेतेजायजी
वकीजरनि॥कलिकालअपरउपायतेअपायभयेजैसेतमनासिबेकोचित्रकेतरनि
करमकलापपरितापपापसानेसबज्योंसुफूलफूलेतरुफोकटफरनि॥दंभलोभ

वि॰प॰
८४

लालच उपासना बिनासनी कै सुगति साधन भई उदर भरनि ॥१॥ जोग न समाधि निरुपाधि
न बिराग ज्ञान बचन बेषु बिसेषु कहूँ न करनि ॥ कपट कुपथ कोटि कहनि रहनि खोटि सकल
सराहैं निज निज आचरनि ॥२॥ मरतै महेस उपदेस है कहा करत सुरसरी तीर कासी धरम
धरनि ॥ राम नाम को प्रताप हर कहैं जपै आप जुग जुग जानै जग बेद हू बरनि ॥३॥ मति राम
नाम ही सों रति राम नाम ही सों गति राम नाम ही की बिपति हरनि ॥ राम नाम सों प्रतीति प्रीति
राखे कबहुँक तुलसी ढरैंगे राम आपनी ढरनि ॥४॥ २८३ ॥ लाज न लागत दास कहावत ॥ सो
आचरन बिसारि सोच तजि जो हरि तुम कहँ भावत सकल संग तजि भजत जाहि मुनि ८४
जप तप जाग बनावत ॥ मो सम मंद महा खल पाँवर कौन जतन तेहि पावत ॥१॥ हरि निर्मल मल

लपसितहृदयअमअंजसमोहिजनावत॥ जेहिसरकाककंकवकसूकरक्यौंमराल
तहँआवत॥२॥ जाकीसरनजाइकोविददारुनत्रयतापबुझावत॥ तहँगएमदमोहलोभ
अतिसरगहुँमिटतनसावत॥३॥ भवसरिताकहँनावसंतयहकहिऔरनिसमुझावत
हौंतिनसौंहरिपरमवयरकरितुमकहँभलोमनावत॥४॥ नाहिनऔरठौरमोकहँता
तेहठिनातोलावत॥ राषुसरनउदारचूडामनितुलसिदासगुनगावत॥५॥१८४॥ को
नजतनविनतीकरिए॥ निजआचरविचारिहारिहियमानिजानिडरिए॥ [illegible] जे
हिसाधनहरिद्रवहुजानिजनसोहठिपरिहरिए॥ जातेविपतिजालनिसिदिनदुख
तेहिपथअनुसरिए॥१॥ जानतहूँमनवचनकरमपरहितकीन्हेंतरिए॥ सोइविपरीति

वि०प०
८५

देषिपरसुषबिनुकारनहीजरिए ॥२॥ श्रुतिपुरानसबकोमतयहसतसंगसुदृढकरिए ॥
निजअभिमानमोहइरषावसतिनहिनआदरिए ॥३॥ संततसोइप्रियमोहिसदाजाते
भवनिधिपरिए ॥ कहहुअबनाथकवनबलतैंसंसारसोकहरिए ॥४॥ जबकबनिजकरुना
सुभावतेद्रवहुतौनिस्तरिए ॥ तुलसिदाससबिस्वासआननहिकतपचिपचिमरिए ॥५॥
१८५ ॥ ताहीतेआयोसरनसबेरे ॥ ज्ञानबिरागभगतिसाधनकछुसपनेहुनाहिनमेरे
लोभमोहमदक्रोधबोधरिपुफिरतरउनिदिनघेरे ॥ तिन्हहिमिलेमनुभयोकु
पथरतफिरैतिहारेफेरे ॥१॥ दोषनिलययहबिषयसोकप्रदकहतसंतश्रुतिटेरे ॥ जा ८५
नतहुंअनुरागतहांअतिसोहरितुम्हरेप्रेरे ॥२॥ बिषपियूषसमकरहुअगिनिहिमता

रिसकहु बिनु बैरे॥ तुम्हसम मई सहज पालपरम हित पुनि न पाइहौं हेरे॥३॥ यह जिय जा
नि रहौं सब तजि रघुबीर भरोसे तेरे॥ तुलसिदास यह बिपति बागुरा तुम्ह सों बनिहि निबेरे
॥४॥१८८॥ मैं तुहिं अब जान्यो संसार॥ बांधि न सकहि मोहि हरि के बल प्रगट कपट आगा
र॥ टेक॥ देखत ही कमनीय कछू नाहिन पुनि किये बिचार॥ ज्यों कदलीतरु मध्य निहा
रत कबहुं न निकसै सार॥१॥ तेरे लिए जनम अनेक मैं फिरत न पायो पार॥ महामोह मृग
जल सरिता महं बोर्यो हौं बारहि बार॥२॥ सुनि खल छल बल कोटि किए बस होहिं न भग
त उदार॥ सहित सहाय तहां बसि अब जेहि हृदय न नंदकुमार॥३॥ तासों करो चातुरी
जो नहिं जानै मरम तुम्हार॥ सो परि डरै मरै रजु अहि तें बूझै नहिं ब्यवहार॥४॥ निज हित सुनि

वि०प० सठ हठन कैं जौं चहहि कुसल परिवार ॥ तुलसिदास प्रभु के दास नित जि भजहिं जहाँ
९६ मद मार ॥५॥१८८॥ राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाई रे ॥ ना
हिं तौ भव विगारि परिहै पुनि छूटत अति कठिनाई रे ॥ टेका ॥ बांस पुरान साज सब अठक
ठ सरल तिकोन षटोला रे ॥ हमहि दिहल करि कुटिल करम चंद मंद मोल बिनु डोला
रे ॥१॥ विषम कहार मार मद माते चलहि न पाव वटोरे रे ॥ मंद विलंद अभेरा दलकन
पाइय दुष झकझोरे रे ॥२॥ कांट कुराइ लपेटन लोटन ठांवें ठांव बझाउ रे ॥ जस जस चलि
य दूरि तस तस निज वास न भेट लगाउ रे ॥३॥ मारग अगम संग नहि संबल नाउं गाउं क
र भूला रे ॥ तुलसिदास भव त्रास हरहु अब होउ राम अनुकूला रे ॥४॥१८९॥ सहज सने ९६

हीरामसोंतैं कियो न सहज सनेह ॥ तातैं भवभाजन भयो सुनु अजहूं सिखावन येह
ज्यों मुख मुकुर विलोकिए अरु चित न रहै अनुहारि ॥ त्यों सेवतहू निरापने ए मातु पिता सुत
नारि ॥ १ ॥ दै दै सुमन तिल वासि कै अरु खरि परिहरि रस लेत ॥ स्वारथ हित भूतल भरे मन मे
चक तन सेत ॥ २ ॥ करि बीत्यो अब करत है करिबे हित मीत अपार ॥ कबहूं न कोउ रघुबीर सो
नेह निवाहन हार ॥ ३ ॥ जासों सब नातो फुरै तासों न करी पहिचानि ॥ तातें कछू समुझ्यो नहीं क
हा लाभ कहा हानि ॥ ४ ॥ सांचो जान्यो झूठ कै झूठो कहै सांचो जानि ॥ को न गयो को न जात है को
न जैहै करि हित हानि ॥ ५ ॥ बेद कह्यो बुध कहत हैं अरु हौंहू कहत हौं टेरि ॥ तुलसी प्रभु सां
चो हित तूं हिय की आंखिन हेरि ॥ ६ ॥ १८५ ॥ एक सनेह सांचो केवल कोसल पाल ॥ प्रे

वि॰प॰
८७

मकैनौडेरामसोनहिदूसरोदयाल … :तनसाथीसबस्वारथीसुरवेवहारसुजान
आरतअधमअनाथकोहितकोरघुवीरसमान ॥१॥ नादनिकुसुमचरसिथीमसिलसने
हनसू ॥ ससिसरोगदिनकरबडोपयदप्रेमपथकूर ॥२॥ जाकेमनजामोंवंध्योनाकेप्रु
षदायकसोउ ॥ सरलसीलसाहिबसदासीतापतिसरसनकोउ ॥३॥ मुनिसेवासहिकेजेन
परिहरैकोदूषनदेषि ॥ केहिदिवानदिनदीनकोआदरअनुरागविसेषि ॥४॥ षगासवरीपि
तुमातुज्योंमानेकपिकोकियमीत ॥ केवटभेट्योभरतज्योंऐसोकहँकोपतितपुनीत ॥५॥
देइअभागेहिभागकोकोराषेसरनसभीत ॥ वेदविदितविरदावलीकविकोविदगावतगी ८७
त ॥६॥ कैसेउपांवरपांतकीजेहिलईनामकीओट ॥ गांठीवांध्योरामसोपरिष्योनाफेरिष

ली

रखोट॥७॥मनमलीनकलिकिलविषीहोतसुनतजासुकृतकाज॥सोतुलसीकियोआ
पनोरघुबीरगरीबनेवाज॥८॥१९०॥जौपैजानकिनाथसोंनातोनेहुननीच॥स्वारथ
परमारथकहाकलिकुटिलविगोयोबीच धर्मबरनआश्रमनिकेपैयतपोथिहि
पुरान॥करतबबिनुबेषदेखियेज्यौंसरीरबिनुप्रान॥१॥बेदबिदितसाधनसबैसुनियत
दायकफलचारि॥रामप्रेमबिनुजानिबेजैसेसरसरिताबिनुबारि॥२॥नानापथनिर्बानके
नानाविधानबहुभांति॥तुलसीतूमेरेकहेजपुरामनामदिनराति॥३॥१९१॥अजहुंआप
नेरामकेकरतबसमुझतहितहोइ॥कहंतूकहंकोसलधनीतोकोंकहाकहतसबकोउ॥
रीझिनिवाज्योकबहितूकबखीझिदईतोहिगारि॥दरपनबदननिहारिकेसु

बि॰प॰
८८

बिचारिमानुहियहारि॥१॥बिगरीजनमअनेककीसुधरतनलगैपलआधु॥पाहिकृ
पानिधिप्रेमसौंकहेकोनरामकियोसाधु॥२॥बालमीककेवटकथाकपिभीलभालुसनमा
नु॥सुनिसनमुषजोनरामसौंतेहिकोउपदेसहिग्यानु॥३॥कासेवासुग्रीवकीकहाप्रीतिरी
तिनिरबाहु॥जासुबंधुबध्योब्याधज्यौंसोसुनतसोहातनकाहु॥४॥भजनबिभीषनकोक
हाफलकहादियोरघुराज॥रामगरीबनेवाजकेबडीबाहबोलकीलाज॥५॥जपहिनाम
रघुनाथकोचरचानदूसरीचाल॥सुमुखसुखदसाहेबसुधीसमरथकृपालुनतपाल॥६॥
सजलनयनगदगदगिरागहबरमनपुलकसरीर॥गावतगुनगनरामकेकेहिकीनमि ८८
टीभवभीर॥७॥प्रभुकृतग्यसर्बग्यहैंपरिहरुपाछिलीग्लानि॥तुलसीतोसोरामसौंकछुन

ईनजानिपहिचानि॥८॥१८४॥जोअनुरागनरामसनेहीसों॥तौलह्योलाहुकहानर
देहीसों॥टेक॥जोतनुधरिपरिहरिसवसुषभयेसुमतिरामअनुरागी॥सोतनुपाइअ
घाइकिएअघअवगुनअधमअभागी॥१॥ज्ञानविरागजोगजपतपमयजगमुदमगनहि
थोरे॥रामप्रेमविनुनेमजाइजैसेंमृगजलजलधिहलोरे॥२॥लोकविलोकिपुरानवेदसुनि
समुझिवूझिगुरज्ञानी॥प्रीतिप्रतीतिरामपदपंकजसकलसुमंगलषानी॥३॥अजहुंजा
निजियमानिहारिहियहोइपलकमहुनीको॥सुमिरिसनेहसहितहितरामहिंमानु
मतोतुलसीको॥४॥१८५॥वलिजाउंहोरामगुसांई॥कीजियेकृपाआपनीनांई॥टेक॥
परमारथसुरपुरसाधनसवस्वारथसुषदभलाई॥कलिसकोपिलोपीसुचालिनिजक

वि०प०
८९

ठिन कुचालि चलाई ॥ १ ॥ जहँ जहँ चित चितवत हित ततहँ नित नव बियाद अधिकाई ॥ रुचि
भावती भभरि भागहिं समुहाहिं अमित अनभाई ॥ २ ॥ आधि मगन मन ब्याधि बिकल त
न बचन मलीन झुठाई ॥ एतेहु पर तुम्ह हीसों तुलसी की प्रभु सकल सनेह सगाई ॥ ३ ॥ १८
४ ॥ काहे को फिरत मन करत बहु जतन मिटै न दुख बिमुख रघुकुल बीर ॥ कीजे जो कोटि
उपाइ त्रिबिधि ताप न जाइ कह्यो जो भुज उठाइ मुनिवर कीर सहज टेउ बि
सारि तुही धौं देखै बिचारि मिलै न मथत वारि घृत बिनु छीर ॥ समुझि तजहि भ्रम भजहि
पद जुगम गुन गहन गंभीर ॥ १ ॥ आगम निगम ग्रंथ रिषि मुनि सुर संत सब ही को एक ८९
मत सुनि मति धीर ॥ तुलसिदास प्यास मरै पसु बिनु प्रभु जद्यपि है निकट सुरसरि तीर

१॥१९५॥ नाहिनचरनरतिताहीतेंसहौंविपतिकहतसबलोकश्रुतिमतिधीर॥ बसैजोससि
उछंगसुधास्वादितकुरंगताहिकिमिभ्रमनिरखिरविकरनीर॥टेक॥ सुनियनानापुराननमि
टतनहिअग्यानपढियनसमुझियजिमिखगकीर॥ बझतबिनहिपाससेमरसुमनआ
सकरतचरततेउफलबिनुहीर॥१॥ कछुनसाधनसिधिजानोननिगमबिधिनहिंजपत
पवसमनननसमीर॥ तुलसिदाससभरोसपरमकरुनाकोसप्रभुहरिहैंभवबिषमभीर॥२॥
१९६॥ मनपछितैहैंअवसरबीते॥ दुर्लभदेहपाइहरिपदभजुकरमबचनअरुहीते॥टे
का॥ सहसबाहुदसबदननआदिनृपबचेनकालबलीते॥ हमहमकरिधनधामसँ हम
वारेअंतचलेउठिरीते॥१॥ सुतबनितादिजानिस्वारथरतनकरुनेहसबहीतें॥ अंतहु २

वि०प० तोहितजैगेपावरतूंनतजैअबहीतें॥४॥ अबनाथहिअनुरागुजागुजडत्यागुदुरासा
९० जीते॥ बुझैनकामअगिनितुलसिकहुंविषयभोगबहुघीते॥५॥१९८॥ काहेकोफिर
तमूढमनधायो॥ तजिहरिचरनसरोजसुधारसरविकरजललैलायो॥ त्रिजगदेव
नरअसुरअपरजगजोनिसकलभ्रमिआयो॥ ग्रहबनितासुतबंधुभएबहुमातुपिता
जिन्हजायो॥१॥ जातेनिरयनिकायनिरंतरसोइइन्हतोहिसिखायो॥ तुवहितहोइकटै
भवबंधनसोमगतोहिनबतायो॥२॥ अजहुंविषयकहुंजतनकरतजद्यपिबहुविधिडह
कायो॥ पावककामभोगघृततेंसठकैसेपरतबुझायो॥३॥ विषयहीनदुखमिलैविप ९०
तिअतिसुखसपनेहुनहिपायो॥ उभयप्रकारप्रेतपावकज्यौंधनदुखप्रदश्रुतिगा

यो॥४॥ छिनछिनछीनहोतजीवनदुर्लभतनवृथागवांयो॥ तुलसिदासहरिभज
हिआसनजिकालउरगजगखायो॥५॥१९८॥ नाथेसोपीठिमनुजतनुपायो॥ नीच
मीचजानतनसीसपरईसनिपटविसरायो॥ टेक॥ अवनिरवनिधनधामसुहृदसु
तकेनइनहिअपनायो॥ काकेभएगएसंगकाकेसववसनेहछलछायो॥१॥ जिन्हभू
पनिजगजीतिवांधिजमअपनीवांहवसायो॥ तेउकालकलेवाकीन्हेतूंगनतीकव
आयो॥२॥ देषिविचारिसारकासांचोकहानिगमनिजगायो॥ भजहिनअजहुँसमुझि
तुलसीतेहिजेहिमहेसमनुलायो॥३॥१९९॥ लाभकहामानुषतनुपायो॥ कायवच
नमनसपनेहुँकवहुँकघटतनकाजपरायो॥ टेक॥ जोसुखसुरपुरनरकगेहवनआ

वि० प०
८८

वनविनहिबुलायो॥नेहिसुषकहुँबहुजतनकरतमनसमुझतनहिसमुझायो॥१॥परदा
रापरद्रोहमोहवसकियोमूढमनभायो॥गर्भवाससदुषरासिजातनातीव्रविपतिविस
रायो॥२॥भयनिद्रामैथुनअहारसबकेसमानजगजायो॥सुरदुर्लभतनुधरिनभजेह
रिमदअभिमानगंवायो॥३॥गईननिजपरबुद्धिसुद्धह्वैरहेनरामलैलायो॥तुलसिदा
सबीतेयहअवसरकापुनिपिछिपछतायो॥४॥२०१॥काजकहानरतनुधरिसार्यो॥परउ
पकारसारश्रुतिकोसोतोधोषेहुनैनविचार्यो॥ [illegible] द्वैतमूलभयसूलसोकफलभवत
रुटरैनटार्यो॥रामभजनतीक्ष्नकुठारलैसोनहिकाटिनिवार्यो॥२॥संसयसिंधुनामवो ८९
हितभजिनिजआतमानतार्यो॥जनमअनेकविवेकहीनबहुजोनिभ्रमतनहिहार्यो

२॥ देखिन्यानकीसहजसंपदादुर्यनअनलमनुजार्यो॥ समदमदयादीनपालनसीतल
हियहरिनसंभार्यो॥३॥ प्रभुगुरुपितासखारघुपतितैंमनक्रमबचनबिसार्यो॥ तुलसिदा
सयहित्राससरनराखिहिजेहिगीधउधार्यो॥४॥१२७॥ श्रीहरिगुरुपदकमलभजहुम
नतजिअभिमान॥ जेहिसेवतपाइयहरिसुखनिधानभगवान [illegible] परिवाप्रथमप्रे
मबिनुराममिलनअतिदूरि॥ जद्यपिनिकटहृदयनिजरहेसकलभरिपूरि॥१॥ दुइजद्वै
तमतछाडिचरहिमहिमंडलधीर॥ बिगतमोहमायामदहृदयबसतरघुबीर॥२॥ तीज
त्रिगुनपरपरमपुरुषश्रीरमनमुकुंद॥ गुनसुभावत्यागेबिनुदुर्लभपरमानंद॥३॥ चौथिचा
रिपरिहरहुबुधिमनचितअहंकार॥ बिमलबिचारपरमपदनिजसुखसहजउदार॥४॥

वि० प०
८९

पाँचइँ पाँच परस रस गंध सब्द अरु रूप ॥ उन्ह कर कहा न कीजिय बहुरि परब भव कूप ॥
५ ॥ छठि षडवरग करिय जय जनकसुता पति लागि ॥ रघुपति कृपा बारि बिनु नहि बुताइ
लोभागि ॥ ६ ॥ सातैं सप्त धातु निर्मित तनु करिय बिचार ॥ तेहि तन कर अब एक फल कीजिय
र उपकार ॥ ७ ॥ आठइँ आठ प्रकृति पर निर्विकार श्रीराम ॥ केहि प्रकार पाइय हरि हृद
य बसहिं बहु काम ॥ ८ ॥ नवमी नव द्वार पुर बसि जेहि न आपु भल कीन्ह ॥ ते नर जोनि
अनेक भ्रमत दारुन दुष दीन्ह ॥ ९ ॥ दसइँ दसहु कर संजम जौ न करिय जिय जानि ॥ सा
धन बृथा होइ सब मिलहिं न सारंगपानि ॥ १० ॥ एकादसी एक मन बस कै सेवहु जा
इ ॥ सोइ ब्रत कर फल पावै आवागमन नसाइ ॥ ११ ॥ द्वादसि दान देहु अस अभय होइ

८९ १

त्र्ययलोक॥परहितनिरतसोपारनबहुकरिनव्यापैसोक॥१२॥तेरससितीनिअवस्थातजहु
भजहुभगवंत॥मनक्रमबचनअगोचरव्यापकव्याप्यअनंत॥१३॥चौदसिचौदहभु
वनअचरचररूपगोपाल॥भेदगएबिनुरघुपतिअतिनहहैजगजाल॥१४॥पूनिउप्रेमभ
गतिरसहरिरसजानहिंदास॥समसीतलगतमानज्ञानरतविषयउदास॥१५॥त्रिविधि
सूलहोलियजारियखेलियअबसिफागु॥जौंजियचहसिपरमसुखतौयहमारगलागु॥
१६॥श्रुतिपुरानबुधसंमतचांचरिचरितमुरारि॥करिबिचारभवतरियपरियनकबहुँजमधा
रि॥१७॥संसयसमनदमनदुखसुखनिधानहरिएक॥साधुकृपाबिनुमिलहिंनकरिय
उपाइअनेक॥१८॥भवसागरकेहंनावसुद्धसंतनकेचरन॥तुलसिदासप्रयासबिनु

वि॰प॰ ९३

मिलहिंराम दुषहरन ॥ ९ ॥ २०२ ॥ रागकान्हरा ॥ जौमनलागैरामचरनअस ॥ देहगेहसु
तवितकलत्रमहंमगनहोतविनुजतनकिएजस ॥ टेक ॥ द्वंदरहितगतमानज्ञानरत
विषयविरतषटाइनानाकस ॥ सुषनिधानसुजानकोसलपतिह्वैप्रसन्नकहुक्यौंनहो
इवस ॥ १ ॥ सर्वभूतहितनिर्व्यलीकचितभक्तिप्रेमदृढनेमएकरस ॥ तुलसिदासयहहोइ
तवहिंजवद्रवैईसजेहिहतोसीसदस ॥ ३ ॥ २०३ ॥ जोमनभज्योचहैहरिसुरतरु ॥ तौतजिवि
षयविकारसारभजिअजहूंजोमैकहौंसोईकरु ॥ टेक ॥ समसंतोषविचारविमलअ
तिसतसंगतिएचारिदृढकरिधरु ॥ काम क्रोधअरुलोभमोहमदरागद्वेषनिसेषकरिप ९३
रिहरु ॥ १ ॥ श्रवनकथामुषनामहृदयहरिसिरप्रनामसेवाकरअनुसरु ॥ नयननिनिरषि

कृपासमुद्रहरि श्राजगारह प्रभु पसीतावर॥३॥ यंहै भक्ति वैराग्य ज्ञान यह हरितोषनय
हसुभव्रतश्राचर॥ तुलसिदास सिवमत मारग यह चलत सदा सपनेहु नाहि न डरु॥
४॥२०४॥ नाहिन श्रौर को सरन लायक दूजो श्री रघुपति सम विपति निवारन॥ काको
सहज सुभाव सेवक वस काहि प्रनत पर प्रीति श्रकारन [illegible]॥ जन गुन श्रलप गनत सु
मेरु करि श्रौगुन कोटि विलोकि विसारन॥ परम कृपालु भक्त चिंतामनि विरद पुनीत पति
तजन तारन॥२॥ सुमिरत सुलभ दास दुष सुनि हरि चलत तुरत पट पीत संभारन॥ सा
षि पुरान निगम श्रागम सव जानत द्रुपद सुता श्ररु वारन॥३॥ जाको जस गावत कवि को
विद जिन्हके लोभ मोह मद मारन॥ तुलसिदास तजि श्रास सकल भजि केसलपति मुनि

विं०प० बधूउधारन॥३॥२०५॥भजिबेलायकसुखदायकरघुनायकसरिससरनपददूजोनाहिन॥आनंदभवनदुखदवनसोकसमनरमारमनगुनगनतसिराहिन॥टेक
८४ आरतअधमकुजातिकुटिलखलपतितसभीतकहूँजेसमाहिन॥सुमिरतनामविवसहूबारएकपावतसोपदजहाँसुरजाहिन॥१॥जाकेपदकमललुबधमुनिमधुकरविरतिजेपरमसुगतिहूलोभाहिन॥तुलसिदाससठतेहिनभजसिकसकारुनीकजोअनाथहिदाहिन॥४॥२०६॥रागकल्यान॥नाथसोंकौनबिनतीकहिसुनावौं॥त्रिविधिअनगनितअवलोकिअघआपनेसरनसनमुखसकुचिसिरनावौं॥टेक॥विरचिहरिभक्तकोवेषवरटाटिकाकपटदलहरितपल्लवनिछावौं॥नामलगिलाय ८४

लालसा लित बचन कहि ब्याध ज्यौं बिषय बिहंग निवकावौं॥४॥ कुटिल सत कोटि मेरे
रोम पर वारिये साधु गनती मे पहिले हिं गनावौं॥ परम बर्बर खर्ब गर्ब पर्बत चढ्यौ
अग्य सर्बग्य जन मनि जनावौं॥५॥ सांच किधौं झूठ मोको कहत कोउ कोउ राम रावरो
हौं तुमरो कहावौं॥ बिरद की लाज करि दास तुलसी देव लेहु अपनाइ अजनि देहु बावौं
६॥२०७॥ नाहिंन नाथ अवलंब मोहि आन की॥ कर्म मन बचन पन सत्य करुनानिधे
एक गति राम भवदीय पद त्रान की कोह मद मोह ममतायतन जानि मन बात
नहिं जाति कहि ज्ञान बिज्ञान की॥ काम संकल्प उर निरखि बहु बासना हि आस नहि
एक हौ आँक निर्बान की॥१॥ वेद बोधित कर्म धर्म बिनु अगम अति जदपि जिय लाल

सान्त्रमरपुरजानकी॥ सिद्धसुरमनुजदनुजादिसेवतकठिनद्रवहिहठजोगदियेभो
गवलिप्रानकी॥४॥ भक्तिदुर्लभपरमसंभुसुकमुनिमधुपप्यासपदकंजमकरंदमधु
पानकी॥ पतितपावनसुनतनामविश्रामकृतभ्रमितपुनिसमुझिचितग्रंथअभिमा
नकी॥३॥ नरककअधिकारममघोरसंसारतमकूपकहिभूपमोहिसक्तिआपानकी॥दा
सतुलसीसोउत्रासनहिंगनतमनसुमिरिगुहगीधगजज्ञातिहनुमानकी॥४॥१०८॥
औरकहँठौररघुबंसमनिमेरे॥ पतितपावनप्रनतपालअसरनसरनबांकुरेबिरदबिर
दैतकेहिकेरे॥ [illegible] समुझिजियदोसअतिरोषकरिरामजेकरतनहिंकानबिनती
बदनफेरे॥ तदपिह्वैनिडरहौंकहौंकरुनासिंधुकोंअबरहिजातसुनिबातबिनुहेरे॥१

मुष्यरुचिहोतवसिवेकोपुरराकेरामतेहिरुचिहिकामादिगनछेरै॥ऋणमऋपवर्गोऋरु
स्वर्गसुकृतेकफलनामवलकौवसोजमनगरनेरै॥४॥कतहूंनाहिठाउंकहूंजाउंको
सलनाथदीनविनुहीनहौंविकलविनुडेरै॥दासतुलसीहिवासदेहुअवकरिकृपाव
सतगजगीधव्याधादिजेहिछेरै॥३॥२०८॥कवहुंरघुवंसमनिसोउन्हपावहुंगो॥जेहि
कृपाव्याधगजविप्रखलनरतरेतिन्हहिसममानिमोहिनाथअपनावहुंगो जोनि
वहुजन्मकिएकर्मखलुविविधिविधिअधमआचरनकछुहृदयनहिंधरहुंगो॥दीनहि
तअजितसर्वज्ञसमरथप्रनतपालचितमृदुलनिजगुननिअनुसरहुंगो॥१॥मोहमदमान
कामादिखलमंडलीसकुलनिर्मूलकरिदुसहदुखहरहुंगो॥जोगजपज्ञानविज्ञानतेअधि

वि० प०
९६

कब्रुअतिसुमलहृढभक्तिदेपरमसुखभरहुगो॥४॥मंदजनमौलिमनिसकलसाधनही
नकुटिलमनमलिनजियजानिजोडरहुगो॥दासतुलसीवेदविदितविरुदावली
विमलजसनाथकेहिभाँतिविस्तरहुगो॥५॥२१०॥ रघुपतिविपतिदवन॥प
रमकृपालप्रनतप्रतिपालकपतितपवन॥कूरकुटिलकुलहीनदीनअतिमलिनजव रा०
न॥सुमिरतनामरामपठएसबअपनेभवन॥१॥गजपिंगलाअजामिलसेखलगनेधौ
कवन॥तुलसिदासप्रभुकेहिनदीन्हिगतिजानकीरवन॥५॥२११॥हरिसमआपदाहरन
नहिकोउसहजकृपालदुसहदुखसागरतरन गजनिजबलअवलोकिकमल ९६
गहिगयोसरन॥दीनवचनसुनिचलेगरुडतजिसुनाभधरन॥१॥द्रुपदसुताकोल

म्यो द्रुमासन नगन करन॥ हा हरि पाहि कहन पूरे पट बिबिध बरन॥४॥ इहै जानि सुर न
र मुनि कोबिद सेवत चरन॥ तुलसिदास प्रभु को न अभय कियो नाग उद्धरन॥५॥२१२॥
ऐसी कवन प्रभु की रीति॥ बिरद हेतु पुनीत परिहरि पावरनि पर प्रीति॥ [illegible] गई मा
रन पूतना कुच कालकूट लगाइ॥ मातु की गति दई ताहि कृपाल जादौ राउ॥१॥ काम
मोहित गोपिकन्हि पर कृपा अतुलित कीन्ह॥ जगत पिता बिरंचि जिन्हके चरन की रज
लीन्ह॥२॥ नेम ते सिसुपाल दिन प्रति देत गनि गनि गारि॥ कियो लीन सु आपु में हरि रा
ज सभा मझारि॥३॥ व्याध चित दै चरन मार्यो मूढमति मृग जानि॥ सो सदेह सुलोक पठ
यो प्रगट करि निज बानि॥४॥ कौन तिन्हके कहौ जिन्हके सुकृत अरु अघ दोउ॥ प्रगट

वि० प०
९७

पातकरूपतुलसीसरनराख्योसो ३॥५॥१६३॥ श्रीरघुवीरकीयहवानि॥ नीचहूसौंक
रतनेहसुप्रीतिमनअनुमानि परमअधमनिषादपावरकौनताकीकानि
लियोसोउरलाइसुतज्यौंप्रेमकोपहिचानि॥१॥ गीधकौनदयालुजोविधिरच्यो
हिंसासानि॥ जनकज्यौंरघुनाथताकोदियोजलनिजपानि॥२॥ प्रकृतिमलिनकुजा
तिसवरीसकलअवगुनखानि॥ खाततापकेदिएफलअतिरुचिबखानिबखानि॥३॥ रज
निचरअरुरिपुबिभीषनसरनआयोजानि॥ भरतज्यौंउठिताहिभेटतदेहदसाभुला
नि॥४॥ कौनसुभगसुसीलवानरजिन्हहिसुमिरतहानि॥ किएतेसबसखापूजेभौन ९७
अपनेआनि॥५॥ रामसहजकृपालकोमलदीनहितदिनदानि॥ भजहिऐसेप्रभु

हितुलसीकुटिलपटनठानि॥६॥२०५॥हरितजिऔरभजियेकाहि॥नाहिनेकोउ
रामसोममताप्रननपरजाहि ॥टीका॥ कनककसिपुविरंचिकोजनकरममनअरुबा
त॥सुतहिदुखवतविधिनवरज्योकालकेघरजात॥१॥संभुसेवकजानजगबहुबारदि
एसीस॥करतरामविरोधसोउसपनेहुनहरिकेउईस॥२॥औरदेवनकीकहोंकह
स्वारथहिकेमीत॥कबहुँकाहुनराखिलियकोउसरनगएसभीत॥३॥कोनसेवतदे
तसंपतिलोकहुयहरीति॥दासतुलसीदीनपरएकरामहींकीप्रीति॥४॥२०६॥जो
पैदूसरोकोउहोइ॥तौहौंवारहिवारप्रभुकतदुखसुनावौंरोइ ॥टीका॥ काहिम
मतादीनपरकाकोपतितपावननाम॥पापमूलअजामिलहुकोदियोअपनो

वि०प०
१८७

पातकरूपतुलसीसरनराख्योसो॥३॥५॥२१३॥श्रीरघुवीरकीयहवानि॥नीचहूसौंक
रतनेहसुप्रीतिमनअनुमानि॥परमअधमनिषादपावरकौनताकीकानि
लियोसोउरलाइसुतज्यौंप्रेमकोपहिचानि॥१॥गीधकौनदयालुजोविधिरच्यो
हिंसासानि॥जनकज्यौंरघुनाथताकोदियोजलनिजपानि॥२॥प्रकृतिमलिनकुजा
तिसवरीसकलअवगुनखानि॥खातताकेदियेफलअतिरुचिवखानिवखानि॥३॥रज
निचरअरुरिपुविभीषनसरनआयोजानि॥भरतज्यौंउठिताहिभेटोदेहदसाभुला
नि॥४॥कौनसुभगसुसीलवानरजिन्हहिसुमिरतहानि॥कियेतेसवसखापूजेभौन १८७
अपनेआनि॥५॥रामसहजकृपालकोमलदीनहितदिनदानि॥भजहिऐसेप्रभु

हितुलसीकुटिलपटनठानि॥६॥२०४॥हरितजिश्रोरभजियेकाहि॥नाहिनेकोउ
रामसोममताप्रनतनपरजाहि॥टेक॥कनककसिपुविरंचिकोजनकरममनअरुवा
त॥सुतहिदुखवतविधिनवरज्योकालकेघरजात॥१॥संभुसेवकजानजगवहुवारदिए
दससीस॥करतरामविरोधसोउसपनेहुनहटकेउईस॥२॥श्रोरदेवनकीकहौंकह
स्वारथहिकेमीत॥कवहुँकाहुनराखिलिएकोउसरनगएसभीत॥३॥कोनसेवतदे
तसंपतिलोकहूयहरीति॥दासतुलसीदीनपरएकरामहीकीप्रीति॥४॥२०५॥जौ
पैदूसरोकोउहोइ॥तौहौंवारहिवारप्रभुकतदुखसुनावौंरोइ॥टेक॥काहिम
मतादीनपरकाकोपतितपावननाम॥पापमूलअजामिलहुकोदियोअपनो

वि०प०
९८

धाम॥१॥ रहे संभु बिरंचि सुरपति लोकपाल अनेक॥ सोक सरि बूडत करीसहि दई न काहू
टेक॥२॥ बिपुल भूपति सदसि महँ नर नारि कह्यो प्रभु पाहि॥ सकल समरथ रहे काहु
न बसन दीन्हो नाहि॥३॥ एक मुख क्यों कहौं करुनासिंधु के गुन गाथ॥ भगति हित ध
रि देह काह न कियो कोसलनाथ॥४॥ आपु सो लै सौंपि रमो हि जौ पै अति हित नात
दास तुलसी और बिधि क्यों चरन परिहरि जात॥५॥१९६॥ कबहुँ दिखाइहौ हरि चरन॥ सम
न सकल कलेस कलिमल सकल मंगल करन॥ सरद भव सुंदर तरुन तन रन
न वारि जबरन॥ लछि लाल ललित करतल छबि अनूप अधरन॥२॥ गंगा जनक अ ९८
नंग अरि प्रिय कपट बटु बलि छरन॥ बिप्र तिय नृग बधिक के दुख दोष दारिद दरन

३॥ सिद्ध सुर मुनि बृंद बंदित सुषद सब कहँ सरन॥ सकृत आआनत जिन हि जन होत
तारन तरन॥३॥ कृपासिंधु सुजान रघुपति प्रनत आरति हरन॥ दरस आस पियास तुल
सीदास चाहत मरन॥४॥२१७॥ दूसरो हौं भार ही को आजु॥ रटनर बिहग आपि ओर नेकोर
हो के काजु॥१॥ कलिकाल दुकाल दारन सबकु भांति कुसाजु॥ नीच जन मन उंच
जैसे कोढमे की खाजु॥२॥ हहरि हियमे सदेव कों जाउ माघु समाजु॥ मोहि से कहु कत
हूं को उतिन्हके हो को सरनाजु॥३॥ दीनता दारिद्र दरनको कृपा बारिद बाजु॥ दानिद
सरथ राय को तू बाने उत सिरताजु॥३॥ जनम को मसो भिखारी तुम्ह गरीब नेवाजु॥ पेट
भरि तुलसी जेवाव भक्ति सुधा सुनाजु॥४॥२१८॥ कहिय मैं भार को मैं राय॥ और ठौर न ल

वि०प० २८८

और गति अवलंब नाम बिहाय बूझि अपनी आपनो हितु आपु बापु न माय ॥ रा
म रावरो नाम गुर सुर स्वामि सषा सहाय ॥ १ ॥ राम राजन बैले मान सम मलिन के छल छा
य ॥ को पिते हि कलि काल कायर मोहि घायल घाय ॥ २ ॥ लेत के हरि सों बयरु ज्यों भेक
हनि गो माय ॥ त्यों हि राम गुलाम जानि निकाम देत कुदाय ॥ ३ ॥ अवक नियाके कपट
करन व अभिन अनय अमाय ॥ सुधी हरि पु रवमन होत परी छि जहि पछिताय ॥ ४ ॥ क
पासिंधु बिलोकि जन मन के सांसति माय ॥ सरन आयो देव दीन दयाल देषन पाय ॥ ५ ॥
निकट बोलि न बरजिये बलि जाउं हनिअ न हाय ॥ देषि है हनुमान गोमुष नाहरनि
के न्याय ॥ ६ ॥ अरन मुष भ्रू बिकट पिंगल नयन रोष कषाय ॥ बीर सुमिरि समीर को घटि २८८

हैं चपल चित चाय॥७॥ विनय सुनि विहसे अनुज सौं वचन के कहि भाय॥ भली कही
कह्यौ लषन हूँ हसि वने सकल वनाय॥८॥ दई दीन हि दादि सो सुनि सुजन सदन व
धाय॥ मिटे संकट सोच पोच प्रपंच पाप निकाय॥९॥ पेषि प्रीति प्रतीति जन पर अगुन
अनघ अमाय॥ दास तुलसी कहत मुनिगन जैति जै उरगाय॥१०॥२६८॥ नाथ कृपा
ही को पंथ चितवत दीन हौं दिन राति॥ होइ धौं केहि काल दीनदयाल जानि न जाति
सुगुन ज्ञान विराग भगति सुसाधननि की पाँति॥ भजी विकल विलोकि कलि
अघ अगुननि की थाति॥१॥ अति अनीति कुरीति भई भुइँ तरनि हूँ तें ताति॥ जाउँ कहूँ
वलि जाउँ कहूँ न हि ठाउँ मति अकुलाति॥२॥ आपु सहित न आपनो कोउ वाप

वि०प०
१००

कठिन कुभाँति ॥ स्याम घन सींचिए तुलसी सालि सफल सुखाति ॥३॥२२०॥ बलि जाँउ
और कासों कहौं ॥ सदगुन सिंधु स्वामि सेवक हित कहूँ न कृपानिधि सो लहौं ॥ [illegible]
जहँ जहँ लोभ लोल लालच बस निज हित चित चाहनि चहौं ॥ तहँ तहँ तरनि तकत उलूक
ज्यौं भटकि कुतरु कोटर गहौं ॥१॥ काल सुभाउ करम बिचित्र फलदायक सुनि सिर
धुनि रहौं ॥ मोकहँ सकल सदा एकहि रस दुसह दाह दारुन दहौं ॥२॥ उचित अना
थ होइ दुखभाजन भयो नाथ किंकर न हौं ॥ अब रावरो कहाइ न बूझिए सरनपाल साँस
ति सहौं ॥३॥ महाराज राजीव बिलोचन मगन पाप संताप हौं ॥ तुलसी प्रभु जब तब १००
जेहि तेहि बिधि राम निबाहन निरबहौं ॥४॥२२१॥ अपनो कब हूँ करि जानिहौ ॥ राम गरीब

बनेबाजराजमनिकिरदलाज अस्मानिहो टिका: सीलसिंधुसुंदरसबलायकस
मरथसदगुनखानिहो॥पालिहैपालतपुनिपालतुगोप्रनतप्रेमपहिचानिहो॥१॥वे
दपुरानकहतजगजाननदिनदयालदिनदानिहो॥कहिआवतबलिजाउमनकु
मेरीबारबिसारवानिहो॥२॥आरतदीनअनाथनिकोहितमाननलौकिककानिहो॥
हैपरिनामभलोतुलसीकोसरनागतभयभानिहो॥३॥१७४॥रघुबरहिकबहुंमनला
गिहै॥कुपथकुचालिकुमतिकुमनोरथकुटिलकपटकबत्यागिहै टिका: जान
नगरलेअमियबिमोहबसअमियगनलकरिमागिहै॥उलटीरीतिप्रीतिअपनेकी
तजिप्रभुपदअनुरागिहै॥१॥आखरअरथमंजुमृदुमोदकरामप्रेमपगियागिहै

ऐसेगुनगाइरिझाउस्वामिसोंपाइहैजोमुहँमांगिहै॥४॥तूंराहिविधिसुखसयनसो
इहैजियकीजरनिभूरिभागिहै॥रामप्रसाददासतुलसीउररामभक्तिजोगजागिहै
॥३॥२२३॥भरोसोऔरआइहैउरताके॥कैकहुंलहैजोरामहिसोसाहबकैअपनो
बलजाके॥टिका॥कैकलिकालकरालनसूझतमोहमारमदछाके॥कैसुनिस्वा
मिसुभाउनरह्योचितजोहितसबअंगथाके॥१॥हौंजानतभलिभांतिअपनपोप्र
भुजीसोसुन्योनसाके॥उपलभीलखगमृगरजनीचरभलेभएकरतबकाके॥२॥मो
कोभयोराम नामसुरतरुसोरामप्रसादकृपालुकृपाके॥तुलसीसुखीनिसोचरा १०१
जज्यौंबालकमायबबाके॥३॥२२४॥भरोसोजाहिदूसरोसोकरो॥मोकोतोरामको

नामकामतरुकलिकल्यानफरो ॥टेक॥ कर्म उपासनज्ञानवेदमतसोसबभाँतिख
रो॥मोहितोसावनकेअंधहिज्यौंसूझतरंगहरो॥१॥चाटतहौंपातरीस्वानज्यौंकबहुँन
पेटभरो॥सोहौंसुमिरतनामसुधारसपेखतपरुसिधरो॥२॥स्वारथऔपरमारथहूको
नहिंकुंजरोनरो॥सुनियतसेतुपयोधिपखाननिकरिकपिकटकतरो॥३॥प्रीतिप्रती
तिभईजहँजाकीतहँताकोकाजसरो॥मेरेतोमायबापदोउआखरहौंसिसुअरनिअ
रो॥४॥संकरसाखिजोराखिकहौंकछुतौजरिजीभगरो॥अपनोभलोरामनामहितेतुल
सिहिसमुझिपरो॥५॥२२५॥रामनामरावरोहितमेरो॥स्वारथपरमारथहूकोभुजउ
ठायकहौंटेरे ॥टेक॥ जननीजनकतज्योजनमकरमबिनुबिधिहुसृज्योअवडेरे

वि० प०
१०२

मोहिसो कोउ कोउ कहतो रामको सो प्रसंग केहि केरे ॥३॥ फिरौ ललात बिनु नाम उ
दर लगि दुखउ दुखित मोहि हेरे ॥ नाम प्रसाद लहत रसाल फल अब हौं बबुर बहेरे
॥४॥ साधन साधु लोक परलोकहि सुनि गुनि जतन घनेरे ॥ तुलसी के अवलंब नाम ही को
एक गांठि कोटि फेरे ॥५॥ २२८ ॥ प्रियन रामनाम ते जोहि रामो ॥ ताको भलो कठिन कलिका
लहु आदि मध्य परिनामो ॥ सकुचत समुझि नाम महिमा मद मोह लोभ कोह
कामो ॥ रामनाम जप निरत सुजन पर करत छाँह घोर घामो ॥१॥ नाम प्रभाउ सही जो कहै
कोउ सिला सरोरुह जामो ॥ जो सुनि सुमिरि भाग भाजन भई सुकृत सील भील भामो १०२
॥२॥ बालमीक अजामिल के कछु हुतो न साधन सामो ॥ उलटे पलटे नाम महातम गुंज

लिजाउँ बिलंब किएं अपनाइयै सबेरो॥४॥२७३॥ तुम्ह तजि हौं कासों कहौं औ
रु को हितु मेरे॥ दीनबंधु सेवक सखा आरत अनाथ पर सहज छोहु केहि केरे॥
१॥ बहुत पतित भवनिधि तरे बिनु तरनी बिनु बेरे॥ कृपा कोप सति भायहू धोखे
हु तिरछेहु राम तिहारे हेरे॥२॥ जो चितवनि सौंधी लगै चितैये सबेरे॥ तुलसिदा
स अपनाइये कीजे न ढील अब जीवन अवधि अति नेरे॥३॥२७४॥ जाउँ कहाँ ठौर
है कहाँ देव दुखित दीन को॥ को कृपाल स्वामी सारिषो राषै सरनागत सब अंग बल
बिहीन को॥१॥ गनिहि गुनिहि साहिब लहै सेवा समीचीन को॥ अधम अगु
न आलसिन्ह को पालिबो फबि आयो रघुनायक नवीन को॥१॥ मुष की कहत कहैं

वि०प०
१२०

विदितहैजीकीप्रभुप्रवीनको॥तिहूंकालतिहुलोकमैंएकटेकरावरीतुलसीसे
मनमलीनको॥१॥२७३॥दूसरहुएदीननाकहींकाबिरदपरिपाहूं॥हौंदयाल
दुनीदससिदसादुषदोषदलनछमकियोनसंभाषनकाहूं॥२॥तनजात
कुटिलकीटज्योंतज्योमातुपिताहूं॥काहेकोरोसुदोसुमेरहीअभागमोसोसकु
चनसबछूछांहूं॥३॥दुषितदेषिसंतनिकहौसांचेजानिमनमाहूं॥तोसेप्रभुपा
वरपातकीपरिहरेनसरनगएरघुवरओरनिवाहूं॥४॥तुलसीतिहारोभयोभयो
सुषीप्रीतिप्रतीतिविनाहूं॥नामकीमहिमासीलनाथकोमेरोभलोविलोकिअ १२०
वतेसकुचाउंसिहाहूं॥५॥२७४॥कहांनकियोकहांनगयोसीसकाहिनना॥

यो॥ रामरावरे विनु भए जन जनमि जनमि जग दुष दसहुं दिसि पायो॥ [illegible] आस वि
वस षास दास ह्वै नीच प्रभुनि जनायो॥ हाहा करि दीनता कही द्वार द्वार वार वार परि न
छार मुह वायो॥ १॥ असन वसन विनु वावरो जहं तहं उठि धायो॥ महिमा मान प्रिय प्रान तें त
जि षोलि षलनि आगे षिनु षिनु पेट षलायो॥ २॥ नाथ हाथ कछु नहि लग्यो लालच
ललचायो॥ सांच कहौं नाचि कौन सो जो न मोहि लोभ लघु निलज नचायो॥ ३॥ श्रवन न
यन मग मनु लगे सब थल पतितायो॥ मूड मारि हिय हारि कै हित हेरि हहरि अब चरन
सरन तकि आयो॥ ४॥ दसरथ के समरथ तुही त्रिभुवन जसु गायो॥ तुलसी नमत अवलो
किये वलि वांह वोल दै विरुदावली वुलायो॥ ५॥ २७५॥ रामराय विनु रावरे मेरे को हित

बि०प०
१२१

साँचो॥ स्वामि सहित सब सों कहौं सुनि गुनि बिसेषि कोउ रेष दूसरी षाँचो॥ टेक॥१॥
देह जीव जोग के सषा मृषा टाँचन टाँचो॥ किएँ बिचार सार कदली ज्यों मनि कनक
संग लघु लसत बीच बिच काँचो॥५॥ बिनयपत्रिका दीन की बापु आपु ही बाँचो॥ हिय
हेरि तुलसी लिषी सो सुभाय सही करि बहुरि पूछियें पाँचो॥१४॥ ७६॥ पवनसुवन रि
पुदवन भरत लाल लषन दीन की॥ निज निज अवसर सुधि किएँ बलि जाउँ दास आ
स पूजि है षास षीन की॥ टेक॥ राजद्वार भली सब कहैं साधु समीचीन की॥ सुकृत सुज
स साहिब कृपा स्वारथ परमारथ गति भए गति बिहीन की॥१॥ समय सँभारि सुधारबी १२१
तुलसी मलीन की॥ प्रीति रीति समुझाइबी नत पाल कृपालहि परमिति पराधीन की॥